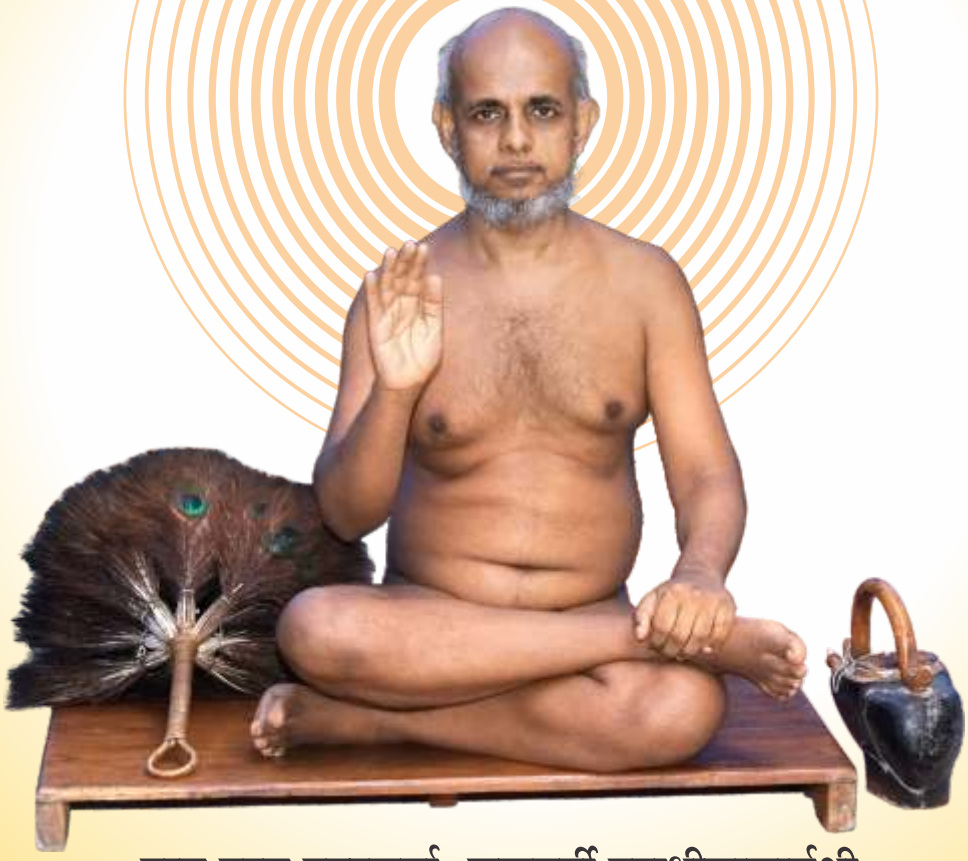

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

अपभ्रंश अभ्यास सौरभ

लेखक
डॉक्टर कमलचन्द जी सोगाणी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी, श्री महावीर जी (राजस्थान)

(परम्परानायक)

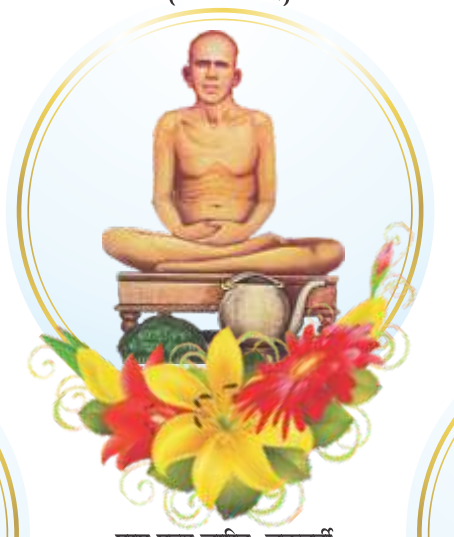

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

अपभ्रंश अभ्यास सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

अपभ्रंश अभ्यास सौरभ

सादर भेंट
जैन विद्या संस्थान समिति

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
(पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र)
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

☐ प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी,
श्रीमहावीरजी–322220 (राजस्थान)

☐ प्राप्ति-स्थान

1 **जैनविद्या संस्थान, श्रीमहावीरजी**
2. **अपभ्रंश साहित्य अकादमी**
दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी
सवाई रामसिंह रोड,
जयपुर–302004

☐ प्रथम बार, 1996, 1100

☐ मूल्य

पुस्तकालय संस्करण **85/–**
विद्यार्थी संस्करण 70/–

☐ मुद्रक

मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस
6–7, गीता भवन, आदर्श नगर
जयपुर–302004

अनुक्रमणिका

अभ्यास संख्या	विषय	अभ्यास की आधार-पुस्तक एवं पाठ संख्या	पृष्ठ संख्या
	आरम्भिक		
	प्रकाशकीय		
1.	**वर्तमानकाल**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 1–8	1
2.	**विधि एवं आज्ञा**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 9–16	6
3.	**अकर्मक क्रिया**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-17	9
4.	**आवृत्ति**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 1–17	13
5.	**आवृत्ति**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 1–17	17
6.	**भविष्यत्काल**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 18–25	19
7.	**आवृत्ति**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 1–25	23
8.	**सम्बन्धक भूत कृदन्त**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-27	27
9.	**हेत्वर्थक कृदन्त**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-28	31
10.	**आवृत्ति**	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 27–28	35

अभ्यास संख्या	विषय	अभ्यास की आधार-पुस्तक एवं पाठ संख्या	पृष्ठ संख्या
11.	पुल्लिग अकारान्त संज्ञा (एकवचन)	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 29–30	39
12.	पुल्लिग अकारान्त संज्ञा (बहुवचन)	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-31	46
13.	नपुंसकलिंग अकारान्त संज्ञा (एकवचन)	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 33–34	51
14.	नपुंसकलिंग अकारान्त संज्ञा (बहुवचन)	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-35	56
15.	स्त्रीलिंग आकारान्त संज्ञा (एकवचन)	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 37–38	61
16.	स्त्रीलिंग आकारान्त संज्ञा (बहुवचन)	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-39	66
17.	आवृत्ति	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-19–39	71
18.	भूतकालिक कृदन्त, कर्तृवाच्य	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-41	76
19.	वर्तमान कृदन्त	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-42	85
20.	भूतकालिक कृदन्त, भाववाच्य	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-44	92
21.	आवृत्ति	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 1–44	97
22.	विधि कृदन्त, भाववाच्य	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-48	100
23.	अकर्मक क्रिया, भाववाच्य	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-46	103

अभ्यास संख्या	विषय	अभ्यास की आधार-पुस्तक एवं पाठ संख्या	पृष्ठ संख्या
24.	आवृत्ति	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 41–48	106
25.	संज्ञा द्वितीया—एकवचन, बहुवचन	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 50–51	109
26.	सकर्मक क्रिया	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-52	114
27.	संज्ञा, सकर्मक क्रिया	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-54	116
28.	संज्ञा	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 54 और 58	119
29.	संज्ञा सकर्मक क्रिया	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 53–54	121
30.	कृदन्त, कर्मवाच्य, तृतीया	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 56–61	124
31.	विविध कृदन्त	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-63	128
32.	संज्ञा, चतुर्थी, षष्ठी— एकवचन, बहुवचन	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 65–68	129
33.	संज्ञा, पंचमी, सप्तमी— एकवचन, बहुवचन	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 70–76	131
34.	प्रेरणार्थक प्रत्यय	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ-77	133
35.	स्वार्थिक प्रत्यय, विविध सर्वनाम, अव्यय	अपभ्रंश रचना सौरभ पाठ 78–80	136
36.	अनियमित कर्मवाच्य	—	138
37.	अनियमित भूतकालिक कृदन्त	—	142

अभ्यास संख्या	विषय	अभ्यास की आधार-पुस्तक एवं पाठ संख्या	पृष्ठ संख्या
38.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-12	151
39.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-9	153
40.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-1	156
41.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-5	157
42.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-13	158
43.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-10	161
44.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-14	162
45.	वाक्य-रचना	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-17	165
46.	व्याकरणिक विश्लेषण—पद्धति	—	168
47.	अपभ्रंश कथा (अमंगलिय पुरिसहो-कहा)	—	172
48.	अपभ्रंश कथा (विउसीहे पुत्तबहूहे कहाणगु)	—	184
49.	अन्वय	अपभ्रंश काव्य सौरभ पाठ-12	190
50.	छंद	—	192
51.	अलंकार	—	214

अभ्यास संख्या		अभ्यास की आधार-पुस्तक एवं पाठ संख्या	पृष्ठ संख्या
52.	छंद	—	225
53.	संज्ञारूपों के प्रत्यय	—	251
परिशिष्ट—			
	अंक-योजना	—	260
	मॉडल प्रश्नपत्र 1, 2	—	262
	शुद्धि-पत्र	—	274

आरम्भिक

'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ' अपभ्रंश अध्ययनार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह सर्वविदित है कि तीर्थंकर महावीर ने जनभाषा प्राकृत में उपदेश देकर सामान्यजन के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त किया। प्राकृत भाषा ही अपभ्रंश के रूप में विकसित होती हुई प्रादेशिक भाषाओं एवं हिन्दी का स्रोत बनी। अतः हिन्दी एवं अन्य सभी उत्तर भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास के अध्ययन के लिए अपभ्रंश भाषा का अध्ययन आवश्यक है। अनेक कारणों से अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन की उचित व्यवस्था न हो सकी। परिणामतः अपभ्रंश का अध्ययन अत्यन्त दुष्कर हो गया।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना सन् 1988 में की गई। हमें यह लिखते हुए गर्व है कि प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी के सतत सहयोग से डॉ. सोगाणी ने नियमित कक्षाओं एवं पत्राचार की स्वनिर्मित योजना के माध्यम से अपभ्रंश व प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन के द्वार खोलने का एक अनूठा कार्य किया है। अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम में अपभ्रंश का अध्यापन मुख्यतः पत्राचार के माध्यम से किया जाता है। 'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ' में पत्राचार के अभ्यासों का संकलन है। इस पुस्तक के प्रकाशन से अध्ययनार्थी अपभ्रंश भाषा को सीखने में अधिक समय दे सकेंगे और विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में लगाकर विद्यार्थियों को सुविधापूर्वक अपभ्रंश का अध्यापन करा सकेंगे।

'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ' पुस्तक के लिए हम डॉ. कमलचन्द सोगाणी के आभारी हैं। पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के कार्यकर्त्ता एवं मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस धन्यवादार्ह हैं।

कपूरचन्द पाटनी
मन्त्री

नरेशकुमार सेठी
अध्यक्ष

प्रबन्धकारिणी कमेटी,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

प्रकाशकीय

अपभ्रंश भारतीय आर्य-परिवार की एक सुसमृद्ध लोकभाषा रही है। इसका प्रकाशित-अप्रकाशित विपुल साहित्य इसके विकास की गौरवमयी गाथा कहने में समर्थ है। स्वयंभू, पुष्पदन्त, धनपाल, वीर, नयनन्दि, कनकामर, जोइन्दु, रामसिंह, हेमचन्द्र, रइधू आदि अपभ्रंश भाषा के अमर साहित्यकार हैं। कोई भी देश व संस्कृति इनके आधार से अपना मस्तक ऊँचा रख सकती है। विद्वानों का मत है—"अपभ्रंश ही वह आर्यभाषा है जो ईसा की लगभग सातवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण उत्तर-भारत की सामान्य लोक-जीवन के परस्पर भाव-विनिमय और व्यवहार की बोली रही है।" यह निर्विवाद तथ्य है कि अपभ्रंश की कोख से ही सिन्धी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, बिहारी, उड़िया, बंगला, असमी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ है। इस तरह से राष्ट्रभाषा का मूल स्रोत होने का गौरव अपभ्रंश भाषा को प्राप्त है। यह कहना युक्तिसंगत है—"अपभ्रंश और हिन्दी का सम्बन्ध अत्यन्त गहरा और सुदृढ़ है, वे एक-दूसरे की पूरक हैं। हिन्दी को ठीक से समझने के लिए अपभ्रंश की जानकारी आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है।" डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार—"हिन्दी साहित्य में (अपभ्रंश की) प्रायः पूरी परम्पराएँ ज्यों की त्यों सुरक्षित हैं।" अतः राष्ट्रभाषा हिन्दीसहित आधुनिक भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में यह कहना कि अपभ्रंश का अध्ययन राष्ट्रीय चेतना और एकता का पोषक है, उचित प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अपभ्रंश भाषा को सीखना-समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखकर 'अपभ्रंश रचना सौरभ' व 'अपभ्रंश काव्य सौरभ' नामक पुस्तकों की रचना की गई थी। इसी क्रम में 'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ' प्रकाशित है। 'प्रौढ़ अपभ्रंश रचना सौरभ' प्रकाशन-प्रक्रिया में है।

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा मुख्यतः पत्राचार के माध्यम से अपभ्रंश का अध्यापन किया जाता है। 'अपभ्रंश रचना सौरभ' पर आधारित अभ्यास हल करने के लिए अध्ययनार्थियों को भेजे जाते हैं। इस तरह से अध्ययनार्थी क्रम से अपभ्रंश व्याकरण-रचना का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। किन्तु अभ्यासों को

भेजने मे बहुत समय खर्च हो जाता है और अध्ययनार्थियों को व्याकरण-रचना के अभ्यास के लिए कम समय मिल पाता है। अतः—(1) इस कठिनाई को दूर करने के लिए सभी अभ्यासों को एक पुस्तक का रूप देकर 'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ' पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। यह पुस्तक सभी अध्ययनार्थियों को प्रारम्भ में ही भेज दी जायेगी और अध्ययनार्थी इन अभ्यासों को निर्दिष्ट योजनानुसार हल करके भेजते रहेंगे। समय जो अभ्यासों को भेजने में लग जाता था, वह अपभ्रंश भाषा को सीखने में लग सकेगा। (2) दूसरी कठिनाई और अनुभव की गई—कई विश्वविद्यालय अपभ्रंश भाषा सिखाने का कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं। उन विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना सुविधा-जनक नहीं होता है। वे विश्वविद्यालय इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में लगाकर अध्यापन का कार्य अपने ही स्थान पर कर सकते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ' से अपभ्रंश अध्ययन-अध्यापन के कार्य को गति मिलेगी और 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' अपने उद्देश्य की पूर्ति में द्रुतगति से अग्रसर हो सकेगी।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था के लिए जैनविद्या संस्थान समिति का आभारी हूँ। अकादमी के कार्यकर्ता एवं मदरलैंड प्रिंटिंग प्रेस धन्यवादार्ह हैं।

वीर निर्वाण दिवस
कार्तिक कृष्ण अमावस्या
वीर निर्वाण संवत् 2523
दिनांक 11-11-96

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति

अभ्यास 1

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. वह हँसता है। 2. वे दोनों नाचती हैं। 3. तुम छिपते हो। 4. मैं रूसता हूँ। 5. वे दोनों जागती हैं। 6. हम सब सोते हैं। 7. तुम सब जीते हो। 8. वे सब ठहरती हैं। 9. मैं नहाता हूँ। 10 वह होती है। 11. तुम दोनों हँसते हो। 12. हम सब नाचते हैं। 13. वे सब छिपते हैं। 14. तुम रूसते हो। 15. मैं जागता हूँ। 16. वह सोता है। 17. वे सब जीते हैं। 18. मैं ठहरता हूँ। 19. वे नहाती हैं। 20. तुम सब होते हो। 21. तुम नाचते हो। 22. वे सब हँसती हैं। 23. वह छिपती है। 24. वे सब रूसते हैं। 25. तुम जागते हो। 26. तुम सब सोते हो। 27. मैं जीता हूँ। 28. हम सब ठहरते हैं। 29. वह नहाती है। 30. वे दोनों होती हैं। 31. मैं हँसता हूँ। 32. तुम सब नाचती हो। 33. हम छिपते हैं। 34. वह रूसती है। 35. हम सब जागते हैं। 36. मैं सोता हूँ। 37. वह जीती है। 38. तुम ठहरते हो। 39. हम दोनों नहाते हैं। 40. मैं होती हूँ। 41. तुम हँसते हो। 42. वह नाचता है। 43. मैं छिपती हूँ। 44. हम सब रूसते हैं। 45. तुम दोनों जागते हो। 46. वे सब सोती हैं। 47. हम दोनों जीते हैं। 48. वह ठहरती है। 49. तुम सब ठहरते हो। 50. तुम नहाते हो। 51. हम हँसते हैं। 52. मैं नाचती हूँ। 53. तुम दोनों छिपते हो। 54. तुम सब रूसते हो। 55. वह जागती है। 56. तुम सोते हो। 57. तुम जीते हो। 58. तुम दोनों ठहरते हो। 59. तुम दोनों नहाते हो। 60 हम सब होते हैं।

उदाहरण—

वह हँसता है=सो हसइ/हसेइ/हसए।

नोट—इस अभ्यास-1 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 8 का अध्ययन करें।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····णच्चहिं	2. ····जग्गउं	3. ····सयहि
4. ····रूसइ	5. ····ठाउं	6. ····हसहुं
7. ····लुक्कहु	8. ····ण्हाहुं	9. ··· जीवमि
10. ····जग्गसि	11. ····सयए	12. ····होमि
13. ····णच्चमो	14. ····रूसह	15. ····लुक्कन्ति
16. ····ण्हामो	17. ····सयामि	18. ··· जीवसे
19. ····लुक्केइ	20. ····ठाइ	21. ····हसमु
22. ···· जीवित्था	23. ····जग्गन्ते	24. ····ण्हामु
25. ····णच्चेमि	26. ····रूसेसि	27. ····सयउ
28. ····जीवेइ	29. ····होहि	30. ····सयहुं
31. ····जग्गिरे	32. ····रूसमि	33. ····हसहि
34. ····लुक्कसि	35. ····णच्चसे	36. ····सयइ
37. ····जग्गमो	38. ····रूसहु	39. ····जीवमु
40 ····हसहिं	41. ····लुक्कित्था	42. ··· ठासि
43. ····होम	44. ····रूसहि	45. ····जीवहि
46. ····ण्हाहु	47. ····णच्चइ	48. ····हसए
49. ····लुक्कमु	50. ····सयहु	51. ···· जग्गन्ति
52. ····होहिं	53. ··· णच्चन्ते	54. ····ण्हाह
55. ····सयेइ	56. ····ण्हाइत्था	57. ····रूसन्ति
58. ····सयन्ते	59. ····ठाहिं	60. ····जीवह

उदाहरण—

ता/ते णच्चहिं । हउं जग्गउं । तुहुं सयहि ।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के वर्तमानकाल में क्रिया-रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस)
2. तुहुं (सय)
3. सो (णच्च)
4. हउं (रूस)
5. तुम्हे (लुक्क)
6. ते (जग्ग)
7. अम्हइं (जीव)
8. सा (ण्हा)
9. ता (ठा)
10. तुम्हइं (हो)
11. अम्हे (लुक्क)
12. ता (रूस)
13. हउं (णच्च)
14. सो (जग्ग)
15. तुहुं (जीव)
16. अम्हइं (ण्हा)
17. ता (हो)
18. तुम्हइं (सय)
19. ते (लुक्क)
20. तुम्हे (रूस)
21. अम्हे (णच्च)
22. हउं (जग्ग)
23. सो (जीव)
24. तुहुं (ण्हा)
25. अम्हइं (हो)
26. ता (ण्हा)
27. तुम्हइं (हस)
28. ते (ठा)
29. ते (सय)
30. तुम्हे (हस)

उदाहरण—
अम्हे हसहुं/हसम/हसमो/हसमु ।

(घ) निम्नलिखित वर्तमानकालिक क्रियाओं के पुरुष, वचन एवं उनके मूलरूप लिखिए—

1. णच्चहि
2. सयहि
3. रूसइ
4. जग्गेमि
5. सयित्था
6. जीवए
7. रूसउं
8. लुक्कन्ति
9. हससि

10. ठाइ	11. ण्हामु	12. सयसे
13. जीवहु	14. रूसन्ते	15. जग्गेसि
16. जीवसे	17. लुक्कमि	18. हसेइ
19. होहि	20. णच्चए	21. जीवामि
22. ण्हामि	23. हसहु	24. ठाहुं
25. रूसहि	26. णच्चसि	27. हसह
28. लुक्किरे	29. होसि	30. ठामु

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप
णच्चहि	अन्यपुरुष	बहुवचन	णच्च

(च) निम्नलिखित के सर्वनाम शब्द लिखिए—

1. उत्तम पुरुष प्रथमा बहुवचन ।
2. मध्यम पुरुष प्रथमा बहुवचन ।
3. अन्य पुरुष प्रथमा बहुवचन (पुल्लिग) ।
4. उत्तम पुरुष प्रथमा एकवचन ।
5. अन्य पुरुष प्रथमा एकवचन (पुल्लिग) ।
6. मध्यम पुरुष प्रथमा एकवचन ।
7. अन्य पुरुष प्रथमा बहुवचन (स्त्रीलिंग) ।
8. अन्य पुरुष प्रथमा एकवचन (स्त्रीलिंग) ।

उदाहरण—

उत्तम पुरुष प्रथमा बहुवचन = अम्हे/अम्हइं

(छ) निम्नलिखित सर्वनामों के पुरुष, विभक्ति, वचन एवं लिंग लिखिए—

1. अम्हे	2. ते	3. तुम्हे
4. अम्हइं	5. तुहुं	6. ता

7. हउं 8. तुम्हइं 9. सो

10 सा

उदाहरण--

	पुरुष	विभक्ति	वचन	लिंग
अम्हे	उत्तम पुरुष	प्रथमा, द्वितीया	बहुवचन	तीनों लिंग

———

अभ्यास–2

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. वे दोनों नाचें। 2. हम सब सोवें। 3. वह हँसे। 4. तुम सब जीवो। 5. मैं रूसूं। 6. तुम छिपो। 7. वे दोनों जागे। 8. वे सब ठहरें। 9. वह होवे। 10. तुम दोनों हँसो। 11. हम सब नाचें। 12. मैं नहाऊँ। 13. तुम रूसो। 14. वे सब छिपें। 15. वह सोए। 16. मैं जागूं। 17. वे सब जीवें। 18. वह नहावे। 19. मैं ठहरूँ। 20. तुम सब होवो। 21. वे सब हँसें। 22. तुम नाचो। 23. वह छिपे। 24. तुम जागो। 25. वे सब रूसें। 26 मैं जीवूं। 27. तुम सब सोवो। 28. हम दोनों ठहरें। 29. वे सब होवें। 30. वे दोनों ठहरें। 31. मैं हँसूं। 32. तुम दोनों नाचो। 33. हम सब छिपें। 34. वह रूसे। 35. हम सब जागें। 36. मैं सोवूं। 37. वह जीवे। 38. तुम ठहरो। 39. हम सब नहावें। 40. मैं होऊँ। 41. वह नाचे। 42. तुम हँसो। 43. मैं छिपूं। 44. वे सब सोवें। 45. हम सब हँसें। 46. तुम दोनों जागो। 47. वे सब रूसें। 48. वह ठहरे। 49. तुम सब ठहरो। 50. तुम नहावो। 51. हम दोनों रूसें। 52. तुम सब छिपो। 53. मैं नाचूं। 54. तुम सब रूसो। 55. वह जागे। 56. तुम सोवो। 57. तुम जीवो। 58. तुम दोनों ठहरो। 59. तुम सब नहावो। 60. हम सब होवें।

उदाहरण —
वे दोनों नाचें=ते/ता णच्चन्तु/णच्चेन्तु।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए —

1. ····हसि 2. ····जग्गेउ 3. ··· होउ

नोट—इस अभ्यास–2 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 9 से 16 का अध्ययन करें।

4. ····सयमु	5. ····णच्चमो	6. ··· रूसह
7. ····जीवन्तु	8. ····हसेमु	9. ····लुक्केह
10. ····जग्ग	11. ····ठामु	12. ····णच्चसु
13. ····सयेन्तु	14. ····ण्हाइ	15. ····हसमो
16. ····रूसहि	17. ··· जीवउ	18. ···· होए
19. ····लुक्केमो	20. ····ण्हामु	21. ····जग्गे
22. ····सयेमु	23. ····जीवेहि	24. ····लुक्कउ
25. ····रूसमो	26. ··· ठाउ	27. ··· जग्गेमो
28. ····सयह	29. ··· णच्चन्तु	30. ····होमो
31. ····सयमो	32. ····ठाह	33. ····लुक्क
34. ····ण्हाहि	35. ····ठाइ	36. ··· रूसमु
37. ····होसु	38. ····णच्चेउ	39. ····जग्गन्त
40. ····ण्हन्तु	41. ····सयि	42. ··· हसह
43. ····ण्हाह	44. ····जीव	45. ····लुक्केमु
46 ····होमु	47. ····ठामो	48. ····णच्चि
49. ····जग्गमु	50. ··· सयेउ	51. ····जीवु
52. ····हससु	53. ··· ण्हाउ	54. ···· रूसेन्तु
55. ····लुक्कि	56. ····ठाहि	57. ····ठासु
58. ····रूस	59. ··· होन्तु	60. ····सयु

उदाहरण—

तुहुं हसि ।	सो/सा जग्गेउ ।	सो/सा होउ ।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रिया के विधि एवं आज्ञा के रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. तुहुं (**सय**)	2. हउं (**रूस**)	3. तुम्हे (**लुक्क**)
4. अम्हे (**हस**)	5. सो (**णच्च**)	6 अम्हइं (**जीव**)

7. ते (जग्ग)	8. सा (ण्हा)	9. तुम्हइ (हो)
10. ता (ठा)	11. तुम्हे (हस)	12. अम्हे (लुक्क)
13. ते (सय)	14. हउं (णच्च)	15. ता (रूस)
16. सो (जग्ग)	17. तुहुं (जीव)	18. अम्हइं (ण्हा)
19. ता (हो)	20. तुम्हइं (सय)	21. ते (लुक्क)
22. अम्हे (णच्च)	23. तुम्हे (रूस)	24. हउं (जग्ग)
25. सो (जीव)	26. तुहुं (ण्हा)	27. अम्हइं (हो)
28. ते (ठा)	29. तुम्हइ (हस)	30. ता (ठा)

उदाहरण—

तुहुं सयि/सये/सयु/सय/सयहि/सयेहि/सयसु/सयेसु ।

(घ) निम्नलिखित विधि एवं आज्ञा की क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप एवं प्रत्यय लिखिए—

1. जीवेमु	2. जग्गउ	3. सयि
4. रूसामो	5. ठाहि	6. णच्चह
7. लुक्केन्तु	8. होमु	9. हसहि
10. ण्हाइ	11. जग्गमो	12. सयेउ
13. लुक्के	14. णच्चेमो	15. रूसेसु
16. होउ	17. हसन्तु	18. जीव
19. सयेह	20. रूसेन्तु	21. लुक्केह
22. होसु	23. ठामो	24. णच्चेहि
25. होह	26. ण्हाए	27. हसमु
28. सयसु	29. ठान्तु→ठन्तु	30. जग्गु

उदाहरण —

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय
जीवेमु	उत्तम पुरुष	एकवचन	जीव	मु

अभ्यास-3

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. मैं भिड़ता हूँ। 2. वह कलह करता है। 3. तुम थकते हो। 4. वे छटपटाते हैं। 5. तुम सब शरमाते हो। 6. हम सब गिरते हैं। 7. वे दोनों रोते हैं। 8. तुम दोनों डरते हो। 9. हम दोनों कांपते हैं। 10. मैं मरता हूँ। 11. वे लड़ते हैं। 12. वह मूर्च्छित होता है। 13. तुम कूदते हो। 14. हम सब प्रयास करते हैं। 15. वे दोनों खेलते हैं। 16. तुम सब उठते हो। 17. हम दोनों घूमते हैं। 18. वे सब उछलते हैं। 19. तुम सब खुश होती हो। 20. वह बैठती है। 21. मैं थकता हूँ। 22. वे सब लड़ती हैं। 23. हम सब डरते हैं। 24. तुम कांपती हो। 25. वे दोनों शरमाती हैं। 26. तुम दोनों प्रयास करते हो। 27. हम दोनों बैठते हैं। 28. तुम सब कलह करते हो। 29. हम सब मूर्च्छित होती हैं। 30. मैं छटपटाती हूँ। 31. तुम शरमावो। 32. मैं बैठूं। 33. वह डरे। 34. तुम दोनों भिड़ो। 35. हम दोनों खेलें। 36. वे दोनों उठें। 37. तुम सब उछलो। 38. हम सब घूमें। 39. वे सब कूदें। 40. तुम प्रयास करो। 41. वह थके। 42. मैं गिरूँ। 43. तुम सब छटपटाओ। 44. हम दोनों प्रयास करें। 45. वे सब खुश होवें। 46. तुम दोनों मूर्च्छित होवो। 47. वे दोनों कांपें। 48. हम सब मरें। 49. वह खेले। 50. तुम सब लड़ो। 51. वह बैठे। 52. तुम दोनों उठो। 53. मैं कूदूं। 54. हम सब खुश होवें। 55. तुम सब प्रयास करो। 56. वे दोनों उछलें। 57. हम दोनों भिड़ें। 58. तुम दोनों शरमावो। 59. वे सब डरें। 60. वह घूमे।

उदाहरण—

मैं भिड़ता हूँ=हउं भिडउं/भिडमि/भिडामि/भिडेमि।

नोट—इस अभ्यास-3 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ-17 का अध्ययन करें।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····लज्जहुं	2. ····रूवित्था	3. ····डरहि
4. ····कलहइ	5. ····थक्कउ	6. ····अच्छहिं
7. ····पडेमु	8. ····उट्ठहु	9. ····तडफडसि
10. ····घुमेइ	11. ····भिडमि	12. ····उच्छलन्ति
13. ····उज्जमम	14. ····उल्लसह	15. ····कंपए
16. ····मरामि	17. ···· खेलन्ते	18. ····कुल्लमो
19. ····जुज्झह	20. ····मुच्छसे	21. ····लज्जहि
22. ····अच्छहुं	23. ····थक्कित्था	24. ····रूवउं
25. ····कलहहि	26. ····डरइ	27. ····पडम
28. ····उट्ठन्ति	29. ····तडफडमि	30. ····घुमेमो
31. ····मुच्छमु	32. ····जुज्झि	33. ····कुल्लउ
34. ···· खेलमो	35. ····मरह	36. ····कंपंतु
37. ····उल्लसेमु	38. ····उज्जमे	39. ····उच्छलेउ
40. ····भिडामो	41. ····घुमेह	42. ····तडफडेन्तु
43. ····उट्ठु	44. ····पडमु	45. ····अच्छउ
46. ····थक्क	47. ····कलहह	48. ····डरन्तु
49. ····रूवमो	50. ····लज्जहि	51. ····भिडेमु
52. ····कलहेउ	53. ····जुज्झेह	54. ····उल्लसेन्तु
55. ····खेलहि	56. ····डरामो	57. ····घुमसु
58. ····तडफडमु	59. ····लज्जह	60. ····डरेसु

उदाहरण —

अम्हे/अम्हइं लज्जहुं । तुम्हे/तुम्हइ रूवित्था । तुहुं डरहि ।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं के वर्तमानकाल के तथा विधि एवं आज्ञा के रूप सभी विकल्पों में लिखिए—

वर्तमान काल	विधि एवं आज्ञा
1. अम्हे (जुज्झ)	16. तुहुं (उच्छल)
2. सो (कुल्ल)	17. हउं (रूव)
3. तुम्हे (खेल)	18. ते (डर)
4. अम्हइं (लज्ज)	19. सा (कलह)
5. ता (पड)	20. तुम्हइं (थक्क)
6. अम्हे (तडफड)	21. ता (अच्छ)
7. हउं (रूव)	22. सो (उट्ठ)
8. तुहुं (मर)	23. अम्हइं (तडफड)
9. ता (कलह)	24. तुम्हइं (घुम)
10. ते (डर)	25. तुम्हे (उज्जम)
11. अम्हे (उज्जम)	26. हउं (उल्लस)
12. सो कंप)	27. तुहुं (कंप)
13. अम्हइं (भिड)	28. ता (खेल)
14. तुम्हइं (मुच्छ)	29. ते (कुल्ल)
15. ते (उच्छल)	30. तुम्हे (जुज्झ)

उदाहरण —

वर्तमानकाल —अम्हे जुज्झहुं/जुज्झमु/जुज्झम/जुज्झमो ।

विधि एवं आज्ञा —तुहुं उच्छलि/उच्छले/उच्छलु/उच्छल/उच्छलहि/उच्छलेहि/उच्छलसु/उच्छलेसु ।

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप, प्रत्यय एवं काल लिखिए—

1. डरहि	2. कलहहुं	3. थक्कइ
4. अच्छहु	5. तडफडउ	6. भिडहि

7. उच्छलसि	8. उल्लसमो	9. कंपेइ
10. खेलह	11. कुल्लामि	12. जुज्झन्ति
13. मुच्छेसि	14. लज्जमु	15. रूवए
16. घुमन्तु	17. पडमु	18. उज्जमह
19. लज्जउ	20. कुल्लमो	21. लज्जि
22. मुच्छेन्तु	23. लज्जेमो	24. उज्जमेसि ।

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
डरहि	मध्यम पुरुष	एकवचन	डर	हि	वर्तमान, विधि.
कुलहहुं	उत्तम पुरुष	बहुवचन	कलह	हुं	वर्तमान

अभ्यास-4

(क) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनाम एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. तुम दोनों खुश होवो। 2. वे सब रोते हैं। 3. मैं बैठता हूँ। 4. हम दोनों डरते हैं। 5. वह हँसता है। 6. तुम सब सोवो। 7. वे सब शरमाते हैं। 8. तुम छटपटाते हो। 9. मैं जागती हूँ। 10. हम सब ठहरें। 11. वह कांपती है। 12. तुम नहावो। 13 तुम सब नाचो। 14. हम दोनों होते हैं। 15. वे दोनों मरते हैं। 16. तुम घूमो। 17. वह ठहरता है। 18 मैं रूसता हूँ। 19. हम सब प्रयास करें। 20. तुम सब खेलो। 21. वह छिपे। 22. वे सब जीते हैं। 23. तुम कूदते हो। 24. मैं उछलूं। 25. हम सब सोवें। 26. तुम दोनों थकते हो। 27. वह उठे। 28. वे दोनों कलह करते हैं। 29. मैं लड़ती हूँ। 30. हम दोनों मूच्छित होते हैं। 31. वह कलह करता है। 32. हम सब ठहरें। 33. तुम सब रोते हो। 34. वे सब बैठें। 35. हम दोनों जागें। 36. वे सब डरते हैं। 37 मैं हँसूं। 38. वह गिरता है। 39. तुम शरमाते हो। 40. तुम कूदो। 41. वे दोनों छटपटाते हैं। 42. मैं नहाता हूँ। 43. तुम सब भिड़ते हो। 44. तुम सब हँसो। 45. वह मरती है। 46 वे सब होवें। 47. वह नाचती है। 48. मैं घूमता हूँ। 49. तुम प्रयास करो। 50. वह खेलती है। 51. तुम सब छिपो। 52. वे सब मूच्छित होते हैं। 53. वह खुश होवे। 54. तुम सब उठते हो। 55. मैं कूदूं। 56. वे सब लड़ती हैं। 57. हम दोनों जीवें। 58. तुम सब बैठो। 59. हम सब खुश होते हैं। 60. वे सब घूमें।

उदाहरण—

तुम दोनों खुश होवो=तुम्हे/तुम्हइं उल्लसह/उल्लसेह।

नोट—इस अभ्यास-4 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 17 का अध्ययन करें।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····हसामो	2. ····कलहि	3. ····णच्चमु
4. ····लज्जह	5. ····उट्ठेन्तु	6. ····ठामु
7. ··· खेलइ	8. ····उल्लसेह	9. ····रूवउं
10. ····जीवसि	11. ····होहुं	12. ··· अच्छहि
13. ····डरमि	14. ····ण्हाहि	15. ····मुच्छए
16. ····जग्गित्था	17. ····कलहन्ति	18. ····घुमि
19. ····उच्छलामि	20. ··· सयम	21. ····लुक्कउ
22. ····जुज्झहु	23. ····उज्जमेन्तु	24. ····तडफडसे
25. ····थक्कमो	26. ····पडेमि	27. ····भिडसि
28. ····कंपेइ	29. ····रूससु	30. ····मरन्ते
31. ····सये	32. ····कुल्लेउ	33. ····हसेमु
34. ····ठाइ	35. ····जग्गमु	36. ····णच्चहि
37. ····लज्जइ	38. ····उट्ठह	39. ····होउ
40. ····खेल	41. ····पडए	42 ····अच्छन्तु
43. ····भिडउं	44. ····तडफडेइ	45. ····कंपह
46. ····जुज्झिरे	47. ····उज्जमु	48. ····उल्लसहुं
49. ····ण्हामि	50. ····उच्छलेउ	51. ····जीवह
52. ····लुक्कमु	53. ····थक्कहि	54. ····डरेन्तु
55. ····घुमेमो	56. ····मुच्छसि	57. ··· कलहइ
58. ··· भिडित्था	59. ····हसेसु	60. ··· रूसेमो

उदाहरण—

अम्हे/अम्हइं हसामो । तुहुं कलहि ।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के निर्देशानुसार वर्तमानकाल (व.) तथा विधि एवं आज्ञा (वि.) के रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस) (व.)
2. सो (कुल्ल) (वि.)
3. तुहुं (उज्जम) (वि.)
4. ते (भिड) (वि)
5. हउं (कंप) (व.)
6. तुम्हे (जीव) (वि.)
7. तुम्हइं (ठा) (वि.)
8. सा (णच्च) (व.)
9. अम्हइं (उल्लस) (वि.)
10. ता (लज्ज) (व.)
11. सो (तडफड) (व.)
12. तुहुं (सय) (वि.)
13. तुम्हे (कलह) (व)
14. ते (उच्छल) (व)
15. सा (उट्ठ) (वि)
16. सो (रूव) (व.)
17. हउं (लुक्क) (वि.)
18. तुम्हइं (हो) (वि.)
19. अम्हे (खेल) (व)
20. तुहुं (ण्हा) (व.)
21. ते (घुम) (वि.)
22. ता (रूस) (व.)
23. सो (मर) (व.)
24. अम्हइं (जग्ग) (वि.)
25. सा (डर) (व.)
26. तुहुं (थक्क) (व.)
27. ते (अच्छ) (वि.)
28. तुम्हे (पड) (व.)
29. हउं (जुज्झ) (वि.)
30. तुहुं (मुच्छ) (व.)

उदाहरण—

अम्हे हसहुं/हसमु/हसम/हसमो ।

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन मूलरूप, प्रत्यय एवं काल लिखिए—

1. हसहुं
2. अच्छहि
3. लज्जइ
4. घुमउं
5. उट्ठु
6. खेलह
7. उल्लसन्तु
8. लज्जमो
9. लुक्कि

10. जीवउ	11. पडमि	12. जग्गहु
13. जुज्झहि	14. ठासु	15 रूसेमि
16. कंपसि	17. तडफडए	18. सयेह
19. उज्जमेसु	20. मुच्छेसि	21. कुल्लमो
22. उच्छलित्था	23. णच्चन्ति	24. ण्हाइरे
26. होम	26. रूवन्ते	27 लुक्क
28. तडफडेइ	29. णच्चमु	30. लज्जउ ।

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
हसहुं	उत्तम पुरुष	बहुवचन	हस	हुं	वर्तमान

अभ्यास-5

(क) निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को शुद्ध कीजिए। सर्वनाम के अनुरूप क्रिया के शुद्ध रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. हउं रूसहि।	2. तुहुं हसउं।	3. सो ठामि।
4. अम्हे हसह।	5. तुम्हे हसहि।	6. ते ठामो।
7. ता ठाइ।	8. तुम्हइं थक्कहि।	9. ते मरइ।
10. हउं लज्जमो।	11. तुहुं पडित्था।	12. सो खेलन्ति।
13. अम्हइं उट्ठसे।	14. सा घुमन्ति।	15. तुहुं ठाइ।

उदाहरण—

हउं रूसउं/रूसमि/रूसामि/रूसेमि।

(ख) निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को शुद्ध कीजिए। क्रिया के अनुरूप पुरुष-वाचक सर्वनाम के शुद्ध रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. हउं लज्जहुं।	2. अम्हे रुवउं।	3. तुम्हे रुवमि।
4. सो डरहु।	5. ता पडमो।	6. तुम्हइं उट्ठइ।
7. अम्हइं उच्छलहि।	8. हउं कंपित्था।	9. तुहुं मरन्ते।
10. तुम्हे मरइ।	11. तुम्हे ठासि।	12. हउं कुल्लहि।
13. तुम्हे ण्हामु।	14. अम्हे होहु।	15. तुहुं मुच्छेइ।

उदाहरण—

अम्हे/अम्हइं लज्जहुं।

नोट—इस अभ्यास-5 को हल करने के लिए 'अपभ्रंश रचना सौरभ' के पाठ 1 से 17 का अध्ययन करें।

(ग) निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को शुद्ध कीजिए। सर्वनाम के अनुरूप क्रिया के शुद्ध रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. हउं पडउ ।	2. तुहुं रुवमो ।	3. सो थक्कि ।
4. अम्हे हसहि ।	5. तुम्हइं डरन्तु ।	6. अम्हइं कंपह ।
7. सा घुमि ।	8. ता खेलमो ।	9. ते मरहि ।
10. हउं उल्लस ।	11. तुहुं कुल्लेमो ।	12. तुम्हे मुच्छसु ।
13. ते भिडउ ।	14. अम्हइं जुज्झेन्तु ।	15. तुम्हइं ठामो ।

उदाहरण—
हउं पडमु/पडेमु ।

(घ) निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को शुद्ध कीजिये। क्रिया के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम के शुद्ध रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. हउं लज्जमो ।	2. तुहुं रुवउ ।	3. अम्हे हसेह ।
4. तुम्हे डरामो ।	5. तुम्हइं लुक्केमो ।	6. ते अच्छउ ।
7. सो उट्ठह ।	8. ता होह ।	9. अम्हइं ठन्तु ।
10. तुम्हे हस ।	11. अम्हे पडसु ।	12. सो होह ।
13. ते होमो ।	14. हउं लुक्कि ।	15. हउं तडफड ।

उदाहरण—
अम्हे/अम्हइं लज्जमो ।

अभ्यास-6

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. तुम नाचोगे। 2. हम दोनों जीवेंगी। 3. वह ठहरेगा। 4. मैं छिपूंगी। 5. तुम सब सोवोगे। 6. वे सब रूसेंगी। 7. वह हँसेगी। 8. तुम होवोगे। 9. हम सब जागेंगे। 10. वह नहावेगा। 11. मैं जीवूंगा। 12. तुम सब नाचोगे। 13. वे सब ठहरेंगी। 14. हम सब छिपेंगे। 15. वह सोवेगी। 16. तुम रूसोगे। 17. मैं हँसूंगी। 18. तुम सब होवोगे। 19. वे सब जागेंगे। 20. हम सब नहावेंगे। 21. वह नाचेगी। 22. तुम दोनों जीवोगे। 23. मैं ठहरूंगा। 24. वह छिपेगा। 25. हम सब सोयेंगे। 26. तुम सब रूसोगे। 27. वे सब हँसेंगे। 28. मैं होवूंगा। 29. वह जागेगी। 30. तुम नहावोगे। 31. वह बैठेगा। 32. हम शरमायेंगे। 33. वे लड़ेंगे। 34. मैं गिरूंगा। 35. तुम खेलोगी। 36. तुम सब कूदोगे। 37. वह उठेगी। 38. हम सब उछलेंगे। 39. वे सब खुश होंगे। 40. मैं प्रयास करूंगी। 41. तुम थकोगे। 42. वह घूमेगी। 43. तुम सब डरोगे। 44. वह छटपटावेगा। 45. वे सब रोवेंगे। 46. मैं खुश होऊँगी। 47. वे सब भिड़ेंगे। 48. वे दोनों काँपेंगे। 49. वह मरेगा। 50. मैं लड़ूंगी। 51. तुम बैठोगे। 52. वह शरमायेगी। 53. हम सब लड़ेंगे। 54. तुम सब गिरोगे। 55. मैं खेलूंगा। 56. वे सब कूदेंगे। 57. तुम कूदोगे। 58. हम दोनों उठेंगे। 59. वह खुश होगा। 60. तुम सब प्रयास करोगे।

उदाहरण—

तुम नाचोगे=तुहुं णच्चेसहि/णच्चेससि/णच्चेससे/णच्चिहिहि/णच्चिहिसि/णच्चिहिसे।

नोट—इस अभ्यास-6 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 18 से 25 का अध्ययन करें।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनामों के सभी विकल्प लिखिए —

1. ····हसेसहि	2. ····लज्जेसहुं	3. ····खेलेसइ
4. ····जीवेसउं	5. ····डरेसहु	6. ····जग्गेसहिं
7. ····उच्छलेसहि	8. ····जुज्झेसमो	9. ····थक्केसए
10. ····कंपेसमि	11. ····सयेसह	12. ····ठासहिं
13. ····लज्जिहिहि	14. ····खेलेसमु	15. ····भिडिहिहि
16. ····जुज्झिहिउं	17. ····ण्हाहिहु	18. ····लुक्केसन्ति
19. ····घुमिहिसे	20. ····भिडेसम	21. ····कुल्लिहिए
22. ····उट्ठिहिमि	23. ····उल्लसेसइत्था	24. ····होहिहि
25. ····ण्हासइ	26. ····कलहिहिहुं	27. ····सयेसइ
28. ····उज्जमेसउं	29. ····पडिहिह	30. ····रूसिहिन्ति
31. ····कुल्लेसमि	32. ····जग्गेसहि	33. ····उट्ठिहिमो
34. ····पडेसए	35. ····तडफडेसमि	36. ····उज्जमेसमि
37. ····उच्छलेसए	38. ····थक्किहिहि	39. ····मुच्छेसहुं
40. ····हसेसहिं	41. ····णच्चेसहु	42. ····ठाहिसि
43. ····रुविहिहुं	44. ····अच्छिहिइ	45. ····मुच्छिहिउं
46. ····घुमेसह	47. ····तडफडेसहि	48. ····भिडेससि
49. ····मरिहिमु	50. ....हसिहिए	51. ····णच्चेसमि
52. ····होहिन्ति	53. ····अच्छिहिहु	54. ····कंपिहिसि
55. ····उल्लसिहिम	56. ····जीविहिए	57. ····डरिहिउं
58. ····कलहेसहु	59. ····रूसेसहिं	60. ····ण्हासमि

उदाहरण —

1. तुहुं हसेसहि ।   2 अम्हे/अम्हइं लज्जेसहुं ।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के भविष्यत्काल के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस)
2. सो (कुल्ल)
3. तुहुं (उज्जम)
4. ते (भिड)
5. हउं (कंप)
6. तुम्हे (जीव)
7. तुम्हइं (ठा)
8. सा (णच्च)
9. अम्हइं (उल्लस)
10. ता (लज्ज)
11. सो (तडफड)
12. तुहुं (सय)
13. तुम्हे (कलह)
14. ते (उच्छल)
15. सा (उट्ठ)
16. सो (रुव)
17. हउं (लुक्क)
18. तुम्हइं (हो)
19. अम्हे (खेल)
20. तुहुं (ण्हा)
21. ते (घुम)
22. ता (रूस)
23. सो (मर)
24. अम्हइं (जग्ग)
25. सा (डर)
26. तुहुं (थक्क)
27. ते (अच्छ)
28. तुम्हे (पड)
29. हउं (जुज्झ)
30. तुहुं (मुच्छ)

उदाहरण—

अम्हे हसेसहुं/हसेसमो/हसेसमु/हसेसम/हसिहिहुं/हसिहिमो/हसिहिमु/हसिहिम ।

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप, प्रत्यय एवं काल लिखिए—

1. घुमेसउं
2. लज्जेसइ
3. उल्लसेसहिं
4. हसेसहुं
5. अच्छेसहि
6. उट्ठेसहु
7. लुक्केससि
8. खेलेसमि
9. जीवेसए
10. पडेसमि
11. जग्गेसह
12. जुज्झेसन्ति

13. ठासहि	14. रूसेसमो	15 कंपिहिहि
16. तडफडिहिइ	17. सयेसइत्था	18. उज्जमेसमु
19. मुच्छिहिहु	20. कुल्लिहिउं	21. उच्छलिहिहुं
22. णच्चिहिन्ति	23. ण्हासह	24. होसमि
25. रुविहिमो	26. लुक्किहित्था	27. डरिहिम
28. कलहिहिसि	29. भिडिहिहुं	30. ठाहिइ

उदाहरण —

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
घुमेसउं	उत्तमपुरुष	एकवचन	घुम	सउं	भविष्य.

अभ्यास 7

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. मैं हँसूं। 2. मैं कूदता हूँ। 3. मैं प्रयास करूँगा। 4. तुम दोनों बैठो। 5. तुम सब काँपते हो। 6. तुम सब जीवोगे। 7. वह ठहरे। 8. वह नाचती है। 9. वह खुश होवेगा। 10. हम सब सोयें। 11. हम सब शरमाते हैं। 12. हम सब छिपेंगे। 13. तुम उछलो। 14. तुम छटपटाते हो। 15. तुम कलह करते हो। 16. वे सब उठें। 17. वे सब रोती हैं। 18. वे सब होवेंगे। 19. मैं खेलूं। 20. मैं नहाता हूँ। 21. मैं घूमूंगी। 22. तुम सब जागो। 23. तुम सब रूसते हो। 24. तुम सब मरोगे। 25. वह जागे। 26. वह डरती है। 27. वह थकेगा। 28. हम सब बैठें। 29. हम सब गिरते हैं। 30. हम सब मूर्च्छित होते हैं। 31. मैं हँसूंगी। 32. मैं कूदूं। 33. तुम सब बैठोगे। 34. वे सब काँपते हैं। 35. वह जीवे। 36. तुम ठहरो। 37. वे सब नाचें। 38. तुम सब खुश होवो। 39. हम सब सोयेंगे। 40. वे सब शरमायेंगे। 41. मैं छिपूं। 42. वह तड़फड़ाता है। 43. वे दोनों कलह करते हैं। 44. तुम उठो। 45. वह रोती है। 46. हम सब होवेंगे। 47. तुम सब खेलो। 48. वे सब नहावें। 49. मैं घूमूं। 50. तुम जागते हो। 51. वह रूसती है। 52. वे दोनों मरते हैं। 53. मैं डरूँगी। 54. तुम सब थकते हो। 55. मैं बैठूंगा। 56. वे सब गिरते हैं। 57. वह मूर्च्छित होती है। 58. तुम प्रयास करो। 59. वह नाचेगा। 60. हम दोनों प्रयास करेंगे।

उदाहरण—
मैं हँसूं = हउं हसमु/हसेमु।

नोट—यह अभ्यास-7 हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 25 का अध्ययन करें।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनामों के सभी विकल्प लिखिए—

1. ....होसहिं	2. ....कलहहि	3. ....लुक्केसहुं
4. ....उल्लसेसइ	5. ....जीवेसहु	6. ....उज्जमेसउं
7. ....रुवहिं	8. ....तडफडसि	9. .... लज्जहुं
10. ....णच्चइ	11. ....कंपहु	12. ....कुल्लउं
13. ....उट्ठन्तु	14. ....उच्छलि	15. ....सयमो
16. ....ठाउ	17. ....अच्छइ	18. ....हसमु
19. ....उल्लसेह	20. ....णच्चेन्तु	21. ....ठाउ
22. ....जीवेउ	23. ....कंपन्ति	24. ....अच्छेसह
25. ....कुल्लेमु	26. ....हसेसमि	27. ....मुच्छमो
28. ....थक्केसए	29. ....मरेसइत्था	30. ....घुमिहिउं
31. ....पडेसम	32. ....डरेइ	33. ....रूसित्था
34. ....ण्हामि	35. ....अच्छामो	36. ....जग्गेउ
37. ....जग्गह	38. ....खेलमु	39. ....उज्जमिहिहुं
40. ....णच्चिहिइ	41. ....मुच्छए	42. ....उज्जमे
43. ....पडन्ते	44. ....अच्छिहउं	45. ....थक्कित्था
46. ....डरिहिमि	47. ....मरिरे	48. ....रूसए
49. ....घुममु	50. ....ण्हन्तु	51. ....खेलह
52. ....होहिहुं	53. ....रुवेइ	54. ....उज्जमु
55. ....उट्ठ	56. ....कलहन्ते	57. ....तडफडए
58. ....लुक्केमु	59. ....लज्जेसन्ति	60. ....सयिहिम

उदाहरण—

1. ते/ता होसहिं ।
2. तुहुं कलहहि ।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं के निर्देशानुसार वर्तमान (व.), विधि एवं आज्ञा (वि.) तथा भविष्यत्काल (भ.) के रूप सभी विकल्पों में लिखिए—

1. अम्हे (हस) (व.)
2. तुहुं (मुच्छ) (भ.)
3. हउं (जुज्झ) (वि.)
4. तुम्हे (पड) (व.)
5. ते (अच्छ) (वि.)
6. तुहुं (थक्क) (भ.)
7. सा (डर) (व.)
8. अम्हइं (लग्ग) (वि.)
9. सो (मर) (भ.)
10. ता (रूस) (व.)
11. ते (घुम) (वि.)
12. तुहुं (ण्हा) (भ.)
13. अम्हे (खेल) (व.)
14. तुम्हइं (हो) (वि.)
15. हउं (लुक्क) (भ.)
16. सो (रुव) (व.)
17. सा (उट्ठ) (वि.)
18. ते (उच्छल) (भ.)
19. तुम्हे (कलह) (व.)
20. तुहुं (सय) (वि.)
21. सो (तडफड) (भ.)
22. ता (लज्ज) (व.)
23. अम्हइं (उल्लस) (वि.)
24. सा (णच्च) (भ.)
25. तुम्हइं (ठा) (व.)
26. तुम्हे (जीव) (वि.)
27. हउं (कंप) (भ.)
28. ते (भिड) (व.)
29. तुहुं (उज्जम) (वि.)
30. सो (कुल्ल) (भ.)

उदाहरण—

अम्हे हसहुं/हसमु/हसम/हसमो ।

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप, प्रत्यय एवं काल लिखिए—

1. कुल्लमो
2. मुच्छेसि
3. उज्जमेसहि
4. सयेह
5. तडफडए
6. कंपेसहु

7. रूसेमि	8. ठासु	9. जुज्झेसहुं
10. जग्गहु	11. पडमि	12. जीवेसइ
13. लुक्कि	14. लज्जमो	15. उल्लसेसहि
16. खेलह	17. उट्ठु	18. घुमेसउं
19. लज्जइ	20. अच्छहि	21. हसेसन्ति
22. लज्जउ	23. णच्चन्ति	24. ण्हाहिहु
25. होम	26. रुवन्ते	27. लुक्केसमो
28. तडफडेइ	29. णच्चिहिहि	30. लज्जसे

उदाहरण --

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
कुल्लमो	उत्तमपुरुष	बहुवचन	कुल्ल	मो	वर्तमान, विधि

अभ्यास-8

(क) **निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए । पुरुषवाचक सर्वनाम, सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. वह रोकर सोता है । 2. तुम उछलकर कूदो । 3. मैं खेलकर खुश होऊंगी । 4. वे कलह करके छिपते हैं । 5. वह नाचकर थकती है । 6 हम डरकर रोते हैं । 7.वे सब कांपकर मरते हैं । 8. तुम गिरकर उठते हो । 9. मैं हँसकर जीती हूँ । 10. वह छटपटाकर मरती है । 11. वे दोनों कूदकर मरती हैं । 12. तुम दोनों भिड़कर रोते हो । 13.वह शरमाकर नाचती है । 16. तुम घूमकर सोवो । 15. हम सब थककर सोयें । 16. वे प्रयास करके उछलेंगे । 17. मैं सोकर उठूँगी । 18. वह लड़कर गिरता है । 19. तुम सब खुश होकर खेलो । 20. वह रोकर मूर्च्छित होती है । 21. वे दोनों बैठकर उठेंगे । 22. मैं खुश होकर घूमूँगी । 23. वह मूर्च्छित होकर मरती है । 24. तुम ठहरकर बैठो । 25. वे सब जीकर खुश होती हैं । 26. वह नहाकर सोवे । 27. तुम खुश होकर खेलो । 28. वह छिपकर रोती है । 29. तुम हँसकर जीवो । 30. वह प्रयासकर नाचता है ।

उदाहरण—

वह रोकर सोता है=सो रुवि/रुविउ/रुविवि/रुववि/रुवेवि/रुवेविणु/रुवेप्पि/
रुवेप्पिणु सयइ/सयेइ/सयए ।

(ख) **निम्नलिखित संबंधक भूतकृदन्तों का प्रयोग करते हुए अपभ्रंश में वाक्य बनाइए । इच्छानुसार पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए उसके अनुरूप कोष्ठकों में दी हुई क्रियाओं के निर्देशानुसार कालों में सभी विकल्प लिखिए—**

1. हसेप्पिणु (जीव) वर्तमान
2. उट्ठेप्पि (खेल) विधि एवं आज्ञा
3. जुज्झि (मर) भविष्यत्काल
4. उच्छलिउ (कुल्ल) विधि एवं आज्ञा

नोट—इस अभ्यास-8 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 27 का अध्ययन करें ।

5. लुक्केवि (रुव) वर्तमानकाल
6. उज्जमेवि (उच्छल) भविष्यत्काल
7. घुमेविणु (सय) विधि एवं आज्ञा
8. कलहेप्पि (लुक्क) वर्तमानकाल
9. डरिवि (रुव) वर्तमानकाल
10. उल्लसि (खेल) विधि एवं आज्ञा
11. सयवि (उट्ठ) भविष्यत्काल
12. ण्हाएप्पि (सय) विधि एवं आज्ञा
13. रुविउ (मुच्छ) वर्तमानकाल
14. ठाइउ (अच्छ) विधि एवं आज्ञा
15 खेलि (उल्लस) वर्तमानकाल
16. पडवि (रुव) वर्तमानकाल
17. तडफडवि (मर) भविष्यत्काल
18. थक्किवि (सय) विधि एवं आज्ञा
19. जीवेवि (उल्लस) वर्तमानकाल
20. लज्जवि (उल्लस) वर्तमानकाल
21. भिडेविणु (रूव) भविष्यत्काल
22. जग्गिवि (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
23. कुल्लेवि (मर) वर्तमानकाल
24. मुच्छि (पड) वर्तमानकाल
25. णच्चिउ (उल्लस) भविष्यत्काल
26. रूसिवि (सय) वर्तमानकाल
27. उल्लसेप्पि (उज्जम) वि. एवं आ.
28. कंपेप्पिणु (पड) वर्तमानकाल
29. लज्जि (हस) वर्तमानकाल
30. डरवि (जग्ग) वर्तमानकाल

उदाहरण—
सा हसेप्पिणु जीवइ/जीवेइ/जीवए ।

(ग–1) निम्नलिखित सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं में से किसी एक क्रिया में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । सभी विकल्प लिखिए—

1. सो (डर, रुव)
2. हउं (हस, जीव)
3. ते (तडफड, मर)
4. सो (जुज्झ, पड)
5. अम्हे (जीव, उल्लस)
6. तुम्हे (भिड, रुव)
7. तुहुं (पड, उट्ठ)
8. सा (मुच्छ, मर)
9. ता (लज्ज, णच्च)
10. सो (णच्च, थक्क)

उदाहरण —

सो डरि/डरिउ/डरिवि/डरवि/डरेवि/डरेविणु/डरेप्पि/डरेप्पिणु रुवइ/रुवेइ/रुवए ।

(ग-2) निम्नलिखित सर्वनामों के अनुरूप निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए । सभी विकल्प लिखिये—

1. तुहुं (उच्छल, कुल्ल)
2. तुम्हे (उल्लस, खेल)
3. हउं (ठा, अच्छ)
4. सो (ण्हा, सय)
5. तुहुं (घुम, सय)
6. ते (उज्जम, कुल्ल)
7. हउं (खेल, सय)
8. ता (उल्लस, जीव)
9. तुम्हे (खेल, अच्छ)
10. सो (उज्जम, खेल)

उदाहरण—

तुहुं उच्छलि/उच्छलिउ/उच्छलिवि/उच्छलवि/उच्छलेवि/उच्छलेविणु/उच्छलेप्पि/उच्छलेप्पिणु कुल्लि/कुल्ले/कुल्लु/कुल्ल/कुल्लहि/कुल्लेहि/कुल्लसु/कुल्लेसु ।

(ग-3) निम्नलिखित सर्वनामों के अनुरूप निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । सभी विकल्प लिखिए—

1. हउ (खेल, उल्लस)
2. ते (उज्जम, उच्छल)
3. ता (लज्ज, णच्च)
4. सो (मुच्छ, मर)
5. अम्हइं (अच्छ, उट्ठ)
6. तुम्हे (घुम, उल्लस)
7. हउं (सय, उट्ठ)
8. सा (हस, णच्च)

9. ते (उज्जम, खेल)　　10. तुहुं (उच्छल, कुल्ल)

उदाहरण—

हउं　खेलि/खेलिउ/खेलिवि/खेलवि/खेलेवि/खेलेविणु/खेलेप्पि/खेलेप्पिणु　　उल्लसेसउं/उल्लसेसमि/उल्लसिहिउं/उल्लसिहिमि ।

(घ) **निम्नलिखित सम्बन्धक भूतकृदन्तों (पूर्वकालिक क्रियाओं) के मूलरूप एवं उनके प्रत्यय लिखिए—**

1. लज्जिउ	2. घुमि	3. अच्छेविणु
4. डरिवि	5. कलहेवि	6. थक्केप्पिणु
7. उट्ठेप्पि	8. खेलवि	9. हसि
10. जग्गिवि	11. कुल्लिउ	12. उच्छलेवि
13. सयेविणु	14. जीवेप्पिणु	15. कपेवि
16. ठाइउ	17. तडफडि	18. रुविवि
19. पडवि	20 भिडेप्पि	21. उज्जमेप्पिणु
22. उल्लसेवि	23. उल्लसेविणु	24. णच्चिउ
25. रूसवि	26. लुक्केप्पि	27. जीवेप्पि
28. ण्हाएवि	29. होएविणु	30. मरिउ

उदाहरण—

	मूलरूप	प्रत्यय
लज्जिउ	लज्ज	इउ

अभ्यास-9

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिये। पुरुषवाचक सर्वनाम, हेत्वर्थक कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. वे सब खुश होने के लिए जीते हैं। 2. तुम जागने के लिए प्रयास करो। 3. हम सब सोने के लिए थकेंगे। 4. वह नाचने के लिए उठती है। 5. वह मरने के लिए कूदता है। 6. तुम उछलने के लिए प्रयास करो। 7 वे दोनों थकने के लिए घूमते हैं। 8. वह मरने के लिये छटपटाता है। 9. तुम दोनों नाचने के लिए उठो। 10. वह लड़ने के लिए भिड़ती है। 11. वे सब सोने के लिए उठें। 12. वे सब जागने के लिए प्रयास करते हैं। 13. वह रोने के लिए छिपता है। 14. तुम खेलने के लिए प्रयास करो। 15. हम सब खुश होने के लिए घूमेंगे। 16 वह कलह करने के लिए भिड़ता है। 17. तुम थकने के लिए घूमो। 18. वे सब घूमने के लिए खुश होवेंगे। 19. तुम सब खुश होने के लिए जीओ। 20. तुम कूदने के लिए उठो। 21. वह खेलने के लिए रूसती है। 22. तुम हँसने के लिए नाचो। 23. वह स्नान करने के लिए ठहरेगा। 24. वे सब नाचने के लिए प्रयास करेंगी। 25. तुम सब बैठने के लिए ठहरो। 26. हम सब जीने के लिए खुश होवेंगे। 27. वे लड़ने के लिए छिपते हैं। 28. वे दोनों खेलने के लिए खुश होवेंगी। 29. वह कूदने के लिए ठहरे। 30. वे सोने के लिए रोते हैं।

उदाहरण—

वे सब खुश होने के लिए जीते हैं=ते उल्लसेवं/उल्लसए/उल्लसणहं/उल्लसणहि/ उल्लसेवि/उल्लसेविणु/उल्लसेप्पि/उल्लसेप्पिणु जीवहि/जीवन्ति/ जीवन्ते/जीविरे।

नोट—इस अभ्यास-9 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 28 का अध्ययन करें।

(ख) निम्नलिखित हेत्वर्थक कृदन्तों का प्रयोग करते हुए अपभ्रंश में वाक्य बनाइये। इच्छानुसार पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए उसके अनुरूप कोष्ठकों में दी हुई क्रियाओं के निर्देशानुसार कालों में सभी विकल्प लिखिये—

1. खेलण (रूस) वर्तमानकाल
2. कलहणहिं (अच्छ) वर्तमानकाल
3. थक्केवं (घुम) भविष्यत्काल
4. उल्लसेवि (जीव) वर्तमानकाल
5. जग्गणह (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
6. मरणहिं (कुल्ल) वर्तमानकाल
7. उच्छलेवि (उज्जम)विधि एवं आज्ञा
8. उल्लसेप्पि (घुम) भविष्यत्काल
9. जुज्झेवं (भिड) वर्तमानकाल
10. सयेप्पिणु (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
11. घुमेविणु (उल्लस) भविष्यत्काल
12. पडण (कुल्ल) वर्तमानकाल
13. णच्चणहं (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
14. सयेवं (रुव) वर्तमानकाल
15. कुल्लण (ठा) विधि एवं आज्ञा
16. जीवेप्पि (उल्लस) भविष्यत्काल
17. रुवेवि (लुक्क) वर्तमानकाल
18. सयेविणु (ठा) विधि एवं आज्ञा
19. णच्चेवं (लज्ज) भविष्यत्काल
20. उट्ठणहं (उज्जम) वर्तमानकाल
21. ण्हाएवं (अच्छ) विधि एवं आज्ञा
22. उल्लसणहिं (खेल) विधि एवं आज्ञा
23. लुक्केप्पि (उज्जम) भविष्यत्काल
24. ठाअण (अच्छ) विधि एवं आज्ञा
25. जीवेप्पिणु (उज्जम)भविष्यत्काल
26. जुज्झेवि (उट्ठ) वर्तमानकाल
27. थक्केविणु (णच्च) भविष्यत्काल
28. सयेप्पि (थक्क) विधि एवं आज्ञा
29. थक्केविणु (णच्च) वर्तमानकाल
30. कुल्लेविणु (उट्ठ) भविष्यत्काल

उदाहरण—

सो खेलण रूसइ/रूसेइ/रूसए।

(ग–1) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। कृदन्त एवं क्रिया के सभी विकल्प लिखिये—

1. अम्हे (उल्लस, जीव)
2. ते (कलह, भिड)

3. ता (थक्क, घुम)
4. हउं (जग्ग, उज्जम)
5. सा (णच्च, उट्ठ)
6. सो (मर, कुल्ल)
7. ता (खेल, रूस)
8. तुहुं (सय, रुव)
9. सा (उट्ठ, उज्जम)
10. तुम्हइं (पड, कुल्ल)

उदाहरण —

अम्हे उल्लसेवं/उल्लसण/उल्लसणहं/उल्लसणहिं/उल्लसेवि/उल्लसेविणु/उल्लसेप्पि/उल्लसेप्पिणु जीवहुं/जीवमु/जीवम/जीवमो ।

(ग–2) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में हेत्वर्थक कृदन्त का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । कृदन्त व क्रिया के सभी विकल्प लिखिए—

1. ते (घुम, उल्लस)
2. तुहुं (ण्हा, ठा)
3. अम्हे (जीव, उल्लस)
4. ता (थक्क, घुम)
5. तुम्हइं (लुक्क, उज्जम)
6. सा (थक्क, णच्च)
7. सो (कुल्ल, उट्ठ)
8. ता (णच्च, लज्ज)
9. ता (उल्लस, घुम)
10. हउं (खेल, ठा)

उदाहरण—

ते उल्लसेवं/उल्लसण/उल्लसणहं/उल्लसणहिउल्लसेवि/उल्लसेविणु/उल्लसेप्पि/उल्लसेप्पिणु घुमन्तु/घुमेन्तु ।

(ग–3) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । कृदन्त एवं क्रिया के सभी विकल्प लिखिये—

1. ते (जग्ग, उज्जम)
2. तुम्हइं (सय, उट्ठ)
3. तुहुं (कुल्ल, ठा)
4. सो (ण्हा, अच्छ)

5. सा (णच्च, उट्ठ)	6. ता (उल्लस जीव)
7. तुम्हे (हस, णच्च)	8 अम्हइं (अच्छ, ठा)
9. तुहुं (सय, थक्क)	10. हउं (उच्छल, उज्जम)

उदाहरण —

ते जग्गेवं/जग्गण/जग्गणहं/जग्गणहिं/जग्गेवि/जग्गेविणु/जग्गेप्पि/जग्गेप्पिणु
उज्जमेसहिं/उज्जमेसन्ति/उज्जमिहिहिं/उज्जमिहिन्ति ।

(घ) निम्नलिखित हेत्वर्थक कृदन्तों की मूलक्रिया एवं उनके प्रत्यय लिखिए —

1. हसणहं	2. लज्जेवि	3. घुमण
4. रुवेवं	5. तडफडण	6. कलहणहिं
7. उट्ठेप्पि	8. अच्छेप्पिणु	9. पडेवं
10. मुच्छण	11 भिडणहं	12. जुज्झणहिं
13. उच्छलेप्पि	14. सयेविणु	15. कुल्लेवि
16. उज्जमेप्पिणु	17. खेलेवं	18. णच्चण
19 उल्लसणहिं	20. मरेप्पि	21. जीवेवं
22. कंपण	23. लुक्केवि	24. ठाअण
25. रूसणहं	26. जग्गणहिं	27. ण्हाएवं
28. जीवेविणु	29. होअण	30. सयेवं

उदाहरण —

	मूलक्रिया	प्रत्यय
हसणहं	हस	अणह

अभ्यास-10

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए । पुरुषवाचक सर्वनाम, सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया), हेत्वर्थक कृदन्त एव क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. तुम खुश होकर जीओ । 2. वह नाचने के लिए उठती है । 3. वे सब उछलने के लिए प्रयास करेंगे । 4. तुम घूमकर थकते हो । 5. वह मरने के लिए कूदता है । 6. तुम सब हँसकर खेलो । 7. हम सब जागकर उठते हैं । 8. मैं खेलकर प्रसन्न होती हूँ । 9. वह नाचने के लिए शरमाएगी । 10. तुम सब ठहरकर स्नान करो । 11 मैं घूमने के लिए उठूँगी । 12. वह कांपकर मूच्छित होता है । 13 वे दोनों लड़कर मरेंगे । 14 तुम दोनों बैठने के लिए ठहरो । 15. वे दोनों लड़कर तड़फड़ाते हैं । 16. मैं हँसकर जीवूँगी । 17. वह शरमाकर नाचेगी । 18. तुम रूसकर सोते हो । 19. वे जागने के लिए प्रयास करें । 20. वे सब घूमने के लिए प्रसन्न होवेंगी । 21. तुम उठने के लिए ठहरो । 22. वह रोकर सोवेगी । 23. हम सब प्रसन्न होने के लिए घूमेंगे । 24. वे सब लड़ने के लिए छिपते हैं । 25. तुम स्नान करके सोवो । 26. तुम नाचकर थकते हो । 27. वे सब बैठकर खेलें । 28. तुम उठने के लिए जागो । 29. मैं सोने के लिए उठती हूँ । 30. वह खुश होकर घूमेगी ।

उदाहरण —

तुम खुश होकर जीओ=तुहुं उल्लसि/उल्लसिउ/उल्लसिवि/उल्लसवि/उल्लसेवि/उल्लसेविणु/उल्लसेप्पि/उल्लसेप्पिणु जीव/जीवि/जीवे/जीवु/जीवहि/जीवेहि/जीवमु/जीवेसु ।

(ख) **निम्नलिखित कृदन्तों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए । इच्छानुसार पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए निर्देशानुसार कालों में क्रिया के सभी विकल्प लिखिए—**

1. उल्लसि (जीव) विधि एवं आज्ञा
2. णच्चणहं (लज्ज) भविष्यत्काल
3. कंपिवि (मुच्छ) वर्तमानकाल
4. हसवि (खेल) विधि एवं आज्ञा

नोट—इस अभ्यास–10 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 27-28 का अध्ययन करें ।

5. घुमणहिं (उल्लस) भविष्यत्काल
6. ण्हाइ (सय) विधि एवं आज्ञा
7. हसण (उट्ठ) वर्तमानकाल
8 खेलि (उल्लस) वर्तमानकाल
9. उल्लसेवं (घुम) भविष्यत्काल
10. अच्छेप्पि (खेल) विधि एवं आज्ञा
11. सयेवि (उट्ठ) वर्तमानकाल
12. रुवेप्पिणु (सय) भविष्यत्काल
13. उट्ठेविणु (जग्ग) विधि एवं आज्ञा
14. मरेवं (कुल्ल) वर्तमानकाल
15. ठाअवि (ण्हा) विधि एवं आज्ञा
16. उच्छलणहिं (उज्जम) भविष्यत्काल
17. जग्गेविणु (उट्ठ) वर्तमानकाल
18. उट्ठए (ठा) विधि एवं आज्ञा
19. लज्जिवि (णच्च) वर्तमानकाल
20. जुज्झेविणु (मर) भविष्यत्काल
21. उज्जमण (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
22. घुमि (ठा) भविष्यत्काल
23 जीवण (उज्जम) भविष्यत्काल
24. कलहिवि (रुव) वर्तमानकाल
25. लुक्कवि (अच्छ) विधि एवं आज्ञा
26. खेलणहं (रूस) वर्तमानकाल
27. थक्केप्पि (घुम) भविष्यत्काल
28. पडिउ (रुव) वर्तमानकाल
29. तडफडेप्पिणु (मर) भविष्यत्काल
30. उल्लसेवि (णच्च) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—

तुहुं उल्लसि जीवि/जीवु/जीवे/जीव/जीवहि/जीवेहि/जीवसु/जीवेसु ।

(ग–1) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक क्रिया में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) या हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनाम के अनुरूप वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सभी विकल्पों का प्रयोग कीजिए—

1. सो (लज्ज, णच्च)
2. सा (जुज्झ, मर)
3. हउं (खेल, उल्लस)
4. तुहुं (सय, उट्ठ)
5. ते (मर, कुल्ल)
6. अम्हे (खेल, अच्छ)
7. तुम्हे (उल्लस, घुम)
8. ता (कंप, मर)
9. सो (कलह, रुव)
10. तुहुं (पड, रुव)

उदाहरण—

सो लज्जि/लज्जिउ/लज्जवि/लज्जिवि/लज्जेवि/लज्जेविणु/लज्जेप्पि/लज्जेप्पिणु णच्चइ/णच्चेइ/णच्चए ।

(ग–2) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) या हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनाम के अनुरूप विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—

1. सो (खेल, उज्जम)
2. तुहुं (ठा, अच्छ)
3. हउं (खेल, सय)
4. ता (उल्लस, जीव)
5. ते (कुल्ल, उज्जम)
6. ते (जग्ग, उज्जम)
7. तुम्हइं (ण्हा, सय)
8. तुहुं (उट्ठ, जग्ग)
9. सा (अच्छ, खेल)
10. तुम्हे (हस, खेल)

उदाहरण —

सो उज्जमि/उज्जमिउ/उज्जमवि/उज्जमिवि/उज्जमेवि/उज्जमेविणु/उज्जमेप्पि/उज्जमेप्पिणु खेलउ/खेलेउ।

(ग–3) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) या हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनाम के अनुरूप भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सभी विकल्पों का प्रयोग कीजिए—

1. ते (उच्छल, उज्जम)
2. हउं (खेल, उल्लस)
3. अम्हे (उल्लस, घुम)
4. सा (णच्च, लज्ज)
5. तुहुं (उच्छल, कुल्ल)
6. ता (सय, उट्ठ)
7. तुम्हइं (ण्हा, सय)
8. हउं (हस, जीव)
9. सो (मुच्छ, मर)
10. सा (उल्लस, णच्च)

उदाहरण —

ते उच्छलि/उच्छलिउ/उच्छलवि/उच्छलिवि/उच्छलेवि/उच्छलेविणु/उच्छलेप्पि/उच्छलेप्पिणु उज्जमेसहि/उज्जमेसन्ति/उज्जमिहिहि/उज्जमिहिन्ति।

(घ) निम्नलिखित कृदन्तों की मूलक्रिया, प्रत्यय एवं कृदन्त का नाम लिखिए—

1. हसि	2 घुमेवं	3. मुच्छिउ
4. सयेवि	5. ठाअवि	6. तडफडण
7. जुज्झवि	8 णच्चणहं	9. उट्ठेविणु
10. कुल्लणहिं	11. रूसवि	12. पडेप्पि
13. खेलवि	14. लुक्किउ	15. मरेवं
16. अच्छि	17. कंपण	18. थक्किवि
19. जग्गेप्पि	20. ण्हाअण	21 कलहवि
22. उल्लसणहं	23. डरिवि	24 जीवेवि
25. उज्जमणहिं	26. होएप्पिणु	27. रुवण
28. उच्छलि	29. मिडण	30. लज्जेविणु

उदाहरण—

	मूलक्रिया	प्रत्यय	कृदन्त
हसि	हस	इ	सम्बन्धक भूतकृदन्त

अभ्यास-11

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए –

1. कुत्ता भोंकता है। 2. ऊंट नाचता है। पुत्र प्रसन्न होवे। 4. मनुष्य बूढ़ा होता है। 5. समुद्र सूखेगा। 6. मामा उठे। 7. अग्नि जलेगी। 8. राक्षस मरे। 9 वस्त्र सूखता है। 10. संसार नष्ट होगा। 11. शास्त्र शोभे। 12. गर्व गलता है। 13. ससुर बैठे। 14 मित्र खुश होवेगा। 15. सूर्य उगता है। 16. रत्न शोभता है। 17. दुःख गले। 18. सिंह बैठता है। 19. मकान गिरेगा। 20 व्रत टूटता है। 21. समुद्र फैले। 22. दादा थकेगा। 23. पोता घूमे। 24. गर्व नष्ट हो। 25. राम प्रसन्न होता है। 26. बालक रूसेगा। 27. अपयश फैलता है। 28. पुस्तक गिरती है। 29. पिता उठता है। 30. देवर घूमे। 31. परमेश्वर प्रसन्न होवे। 32. कुआ सूखेगा। 33. नरेश जीवे। 34. राजा हँसता है। 35. हनुमान कूदता है। 36. मृत्यु होती है। 37. हवा फैलती है। 38. पानी झरेगा। 39. बाप जीवे। 40. पानी झरकर लुढ़कता है। 41 मनुष्य पैदा होकर मरता है। 42. दादा जीने के लिए प्रसन्न होवे। 43. बालक सोने के लिए रोता है। 44. सूर्य उगकर शोभेगा। 45. मामा प्रसन्न होकर बैठे। 46. सर्प उड़कर गिरेगा। 47. पोता नाचने के लिए उठे। 48. पुत्र कलह करके शरमायेगा। 49. ऊँट थकने के लिए नाचेगा। 50. देवर घूमने के लिए उठे। 51. रत्न गिरकर टूटता है। 52. पिता जगकर डोलता है। 53. घर गिरकर नष्ट होगा। 54. पुस्तक जलकर नष्ट होती है। 55. कुत्ता भोंककर बैठता है। 56. व्रत टूटकर गलता है। 57. राक्षस मरने के लिए कूदेगा। 58. पानी फैलकर सूखेगा।

उदाहरण —

कुत्ता भोंकता है = कुक्कुर/कुक्कुरा/कुक्कुरु/कुक्कुरो बुक्कइ/बुक्केइ/बुक्कए।

नोट — इस अभ्यास–11 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 29-30 का अध्ययन करें।

(ख) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्देशित कालों में वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—

1. नरिंद (हस) वर्तमानकाल
2. पुत्त (हरिस) विधि एवं आज्ञा
3. सायर (सुक्क) भविष्यत्काल
4. गव्व (गल) वर्तमानकाल
5. ससुर (बइस) विधि एवं आज्ञा
6. मित्त (उल्लस) भविष्यत्काल
7. दुज्जस (पसर) वर्तमानकाल
8. दिअर (घुम) विधि एवं आज्ञा
9. बालअ (कंद) भविष्यत्काल
10. णर (जर) वर्तमानकाल
11. माउल (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
12. घर (पड) भविष्यत्काल
13. पड (सुक्क) वर्तमानकाल
14. पिआमह (वल) वर्तमानकाल
15. दिवायर (उग) भविष्यत्काल
16. वय (तुट्ट) वर्तमानकाल
17. परमेसर (हरिस) विधि एवं आज्ञा
18. करह (पला) भविष्यत्काल
19. कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल
20. गंथ (जल) वर्तमानकाल
21. जणेर (सय) भविष्यत्काल
22. पोत्त (खेल) भविष्यत्काल
23. रहुणन्दण (हरिस) वर्तमानकाल
24. आगम (सोह) विधि एवं आज्ञा
25. सप्प (उड्ड) वर्तमानकाल
26. भव (खय) वर्तमानकाल
27. कूव (सुक्क) भविष्यत्काल
28. रयण (उपज्ज) वर्तमानकाल
29. राय (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
30. हणुवन्त (कुल्ल) वर्तमानकाल
31. हुअवह (जल) भविष्यत्काल
32. मारुअ (डुल) वर्तमानकाल
33. कियंत (हो) भविष्यत्काल
34. सीह (बइस) वर्तमानकाल
35. दुह (नस्स) विधि एवं आज्ञा
36. बप्प (जीव) वर्तमानकाल
37. सलिल (णिज्झर) भविष्यत्काल
38. रक्खस (मर) भविष्यत्काल
39. सलिल (लुढ) वर्तमानकाल

उदाहरण—

नरिंद/नरिंदा/नरिंदु/नरिंदो हसइ/हसेइ/हसए।

(ग-1) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया)के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुक्कुर (बुक्क, बइस)	2. पिआमह (घुम, उट्ठ)
3. रयण (पड, तुट्ट)	4. जणेर (जग्ग, कुल्ल)
5. पोत्त (थक्क, घुम)	6. घर (जल, पड)
7. वय (गल, नस्स)	8. रहुणन्दण (हरिस, बइस)
9. पड (जल, खय)	10. दिवायर (सोह, उग)

उदाहरण —

कुक्कुर/कुक्कुरा/ कुक्कुरु/कुक्कुरो	बुक्कि/बुक्किउ/बुक्किवि/बुक्कवि बुक्केवि/बुक्केविणु/बुक्केप्पि/बुक्केप्पिणु	बइसइ/बइसेइ/ बइसए।

(ग-2) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. णर (जीव, हरिस)	2. करह (थक्क, णच्च)
3. दिअर (घुम, उट्ठ)	4. जणेर (हरिस, अच्छ)
5. रयण (सोह, उपज्ज)	6. सलिल (सुक्क, णिज्झर)
7. माउल (कुल्ल, उज्जम)	8. नरिंद (हरिस, बइस)
9. बालअ (णच्च, उट्ठ)	10. पोत्त (खेल, उज्जम)

उदाहरण—

णर/णरा/ हरिसि/हरिसिउ/हरिसवि/हरिसिवि जीवउ/जीवेउ ।
णरु/णरो हरिसेवि/हरिसेविणु/हरिसेप्पि/हरिसेप्पिणु

(ग-3) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए—

1. पुत्त (कलह, लज्ज)
2. रक्खस (कुल्ल, मर)
3. सप्प (उड्ड, पड)
4. सलिल (पसर, सुक्क)
5. दिवायर (सोह, उग्ग)
6. पड (जल, नस्स)
7. मारुअ (पसर, उड्ड)
8. दुक्ख (उपज्ज, खय)
9. बालअ (रुव, सय)

उदाहरण—

पुत्त/पुत्ता/ कलहि/कलहिउ/कलहवि/कलहिवि/ लज्जेसइ/लज्जेसए/
पुत्तु/पुत्तो कलहेवि/कलहेविणु/कलहेप्पि/कलहेप्पिणु लज्जिहिइ/लज्जिहिए ।

(घ) नीचे अकारान्त संज्ञाएँ विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. नरिंदु
2. करहो
3. हणुवन्ता
4. पोत्त
5. कुक्कुरु
6. गव्वा
7. मित्तो
8. बालअ
9. पिआमहो
10. णरा
11. सप्पु
12. भव
13. सायरो
14. हुअवहु
15. पड

16. सीहा	17. रयणु	18. दिग्गरो
19. आगमु	20. मारुअ	21. कियंता
22. रक्खसु	23. दुक्खा	24. बप्पो
25. गामु	26. राया	27. दुज्जसु
28. घरो	29. वयु	30. माउल

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
नरिंदु	अन्यपुरुष	एकवचन	नरिंद	पुल्लिग	उ

नोट—अभ्यास-10 तक वाक्य-रचना सर्वनाम शब्दों के आधार पर की गई है। सर्वनाम शब्दों के लिए '**अपभ्रंश रचना सौरभ**' का निर्देशानुसार उपयोग करें—

सर्वनाम शब्द

1. उत्तम पुरुष तीनों लिंगों के लिए देखें पाठ–83, पृष्ठ संख्या 184, अम्ह (मैं) सर्वनाम शब्द।
2. मध्यम पुरुष तीनों लिंगों के लिए देखें पाठ-83, पृ. सं. 184, तुम्ह (तुम) सर्वनाम शब्द।
3. अन्य पुरुष पुल्लिग के लिए देखें पाठ–83, पृ. सं. 172, त (वह) सर्वनाम शब्द।
4. अन्य पुरुष नपुंसकलिंग के लिए देखें पाठ–83, पृ.सं. 172, त (वह) सर्वनाम शब्द।
5. अन्य पुरुष स्त्रीलिंग के लिए देखें पाठ–83, पृ. सं. 173, ता (वह) सर्वनाम शब्द।

अभ्यास-11 से वाक्य-रचना संज्ञा शब्दों के आधार पर की गई है। इसके लिए '**अपभ्रंश रचना सौरभ**' का निर्देशानुसार उपयोग कीजिए। सभी संज्ञा शब्दों का पुरुष, लिंग व अकारान्त आदि के अनुसार वर्गीकरण इस प्रकार है—

संज्ञा शब्द—सभी तरह के संज्ञा शब्द 'अन्य पुरुष' के अन्तर्गत आते हैं।

1. पाठ 29 में दिए गए सभी संज्ञा शब्द अकारान्त पुल्लिग हैं। इन सभी के रूप पाठ--83, पृष्ठ संख्या 164 में दिए गये अकारान्त पुल्लिग शब्द **'देव'** के अनुसार चलेंगे।

2. पाठ 33 में दिए गए सभी संज्ञा शब्द अकारान्त नपुंसकलिंग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 166 में दिए गए अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द **'कमल'** के अनुसार चलेंगे।

3. पाठ 37 में दिए गए सभी संज्ञा शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 168 पर दिए गए आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **'कहा'** के अनुसार चलेंगे।

4. पाठ 54 (1) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द इकारान्त पुल्लिग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 164 पर दिए गए इकारान्त पुल्लिग शब्द **'हरि'** के अनुसार चलेंगे।

5. पाठ 54 (2) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द उकारान्त पुल्लिग हैं। इन सभी के रूप पाठ-83, पृष्ठ संख्या 165 पर दिए गए उकारान्त पुल्लिग शब्द **'साहु'** के अनुसार चलेंगे।

6 पाठ 58 (1) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द इकारान्त नपुंसकलिंग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 167 पर दिए गए इकारान्त नपुंसकलिंग शब्द **'वारि'** के अनुसार चलेंगे।

7. पाठ 58 (2) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द उकारान्त नपुंसकलिंग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 167 पर दिए गए उकारान्त नपुंसकलिंग शब्द **'महु'** के अनुसार चलेंगे।

8. पाठ 58 (3) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द इकारान्त स्त्रीलिंग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 168 पर दिए गए इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **'मइ'** के अनुसार चलेंगे।

9. पाठ 58 (4) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द ईकारान्त स्त्रीलिंग हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 169 पर दिये गये ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **'लच्छी'** के अनुसार चलेंगे।

10. पाठ 58 (5) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द उकारान्त व ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द हैं। इन सभी के रूप पाठ–83, पृष्ठ संख्या 169 पर दिए गए उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **'धेणु'** तथा पृष्ठ संख्या 170 पर दिए गए ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **'बहू'** के अनुसार चलेंगे।

11. पाठ 58(6) में दिए गए सभी संज्ञा शब्द ईकारान्त व ऊकारान्त पुल्लिग शब्द हैं। ईकारान्त पुल्लिग संज्ञा शब्दों के रूप पाठ-83, पृष्ठ संख्या 165 पर दिए गए ईकारान्त पुल्लिग शब्द **'गामणी'** के अनुसार चलेंगे। ऊकारान्त पुल्लिग संज्ञा शब्दों के रूप पृष्ठ संख्या 166 पर दिए गए ऊकारान्त पुल्लिग शब्द **'सयंभू'** के अनुसार चलेंगे।

अभ्यास-12

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, कृदन्त एवं क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. कुत्ते भोंकते हैं। 2. ऊंट नाचते हैं। 3. पुत्र प्रसन्न होवें। 4. मनुष्य बूढ़े होते हैं। 5. समुद्र सूखेंगे। 6. मेघ गरजते हैं। 7. राक्षस मरें। 8. वस्त्र सूखते हैं। 9 शास्त्र शोभें। 10. मित्र खुश होवेंगे। 11. रत्न शोभते हैं। 12. सिंह बैठेंगे। 13. मकान गिरते हैं। 14. पोते घूमें। 15. बालक रूसेंगे। 16. शास्त्र नष्ट होते हैं। 17. पुस्तकें गिरती हैं। 18. कूएँ सूखेंगे। 19. राजा हँसते हैं। 20. व्रत शोभते हैं। 21. राक्षस डरते हैं। 22. दुःख गलें। 23. पुत्र जीवें। 24. सर्प उड़ेंगे। 25. मामा उठें। 26. राक्षस मूर्च्छित होंगे। 27. मनुष्य प्रयास करें। 28. बालक रोते हैं। 29. नरेश प्रसन्न हों। 30. मेघ फैलेंगे। 31. मकान जलेंगे। 32. पुस्तकें नष्ट होवेंगी। 33. पुत्र कांपते हैं। 34. व्रत टूटते हैं। 35. राक्षस भागेंगे। 36. कुत्ते लड़ते हैं। 37 राजा मूर्च्छित होते हैं। 38. बालक कूदते हैं। 39. पोते उछलें। 40. मनुष्य लड़ते हैं। 41. बालक सोने के लिए रोते हैं। 42. मामा प्रसन्न होकर बैठें। 43. सांप उड़कर गिरेंगे। 44. पुत्र कलह करके शरमाएंगे। 45. पोते नाचने के लिए उठें। 46. ऊँट नाचकर थकेंगे। 47. रत्न गिरकर टूटते हैं। 48. घर जलकर गिरेंगे। 49. कुत्ते भोंककर लड़ते हैं। 50. राक्षस मरने के लिए कूदेंगे। 51. पुत्र प्रसन्न होकर जीवें। 52. मनुष्य पैदा होकर मरते हैं। 53. बालक उछलकर कूदें। 54. पोते नाचने के लिए प्रयास करें। 55. राजा प्रसन्न होकर बैठे। 56. राक्षस मूर्च्छित होकर मरेंगे। 57 बालक भागकर खेलें। 58. पुत्र नाचकर थकते हैं।

उदाहरण—

कुत्ते भोंकते हैं=कुक्कुर/कुक्कुरा कुक्कहि/कुक्कन्ति/कुक्कन्ते/कुक्किरे।

नोट—इस अभ्यास-12 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 31 का अध्ययन करें।

(ख) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइए। संज्ञा व क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. नरिंद (हस) वर्तमानकाल
2. पुत्त (हरिस) विधि एवं आज्ञा
3. सायर (सुक्क) भविष्यत्काल
4. गव्व (गल) विधि एवं आज्ञा
5. मित्त (उल्लस) भविष्यत्काल
6. दिअर (घुम) वर्तमानकाल
7. बालअ (कंद) भविष्यत्काल
8. णर (जर) वर्तमानकाल
9. माउल (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
10. घर (पड) भविष्यत्काल
11. पड (सुक्क) वर्तमानकाल
12. वय (तुट्ट) वर्तमानकाल
13. करह (पला) भविष्यत्काल
14. कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल
15. गंथ (जल) वर्तमानकाल
16. जणेर (सय) भविष्यत्काल
17. पोत्त (खेल)विधि एवं आज्ञा
18. आगम (सोह) विधि एवं आज्ञा
19. सप्प (उड्ड) वर्तमानकाल
20. कूव (सुक्क) वर्तमानकाल
21. रयण (उपज्ज) वर्तमानकाल
22. राय (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
23. सीह (बइस) वर्तमानकाल
24. दुह (नस्स) विधि एवं आज्ञा
25. रक्खस (मर) भविष्यत्काल
26. करह (णच्च) वर्तमानकाल
27. रयण (सोह) भविष्यत्काल
28. णर (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
29. गंथ (नस्स) भविष्यत्काल
30. पुत्त (कंप) वर्तमानकाल
31. राय (हरिस) विधि एवं आज्ञा
32. दुह (गल) भविष्यत्काल
33. घर (जल) वर्तमानकाल
34. सप्प (वल) भविष्यत्काल
35. पोत्त (कुल्ल) विधि एवं आज्ञा
36. पुत्त (उच्छल) विधि एवं आज्ञा
37. मित्त (उट्ठ) विधि एव आज्ञा
38. माउल (डर) वर्तमानकाल
39. रक्खस (मुच्छ) भविष्यत्काल

उदाहरण—

नरिंद/नरिंदा हसहि/हसन्ति/हसन्ते/हसिरे।

(ग–1) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुक्कुर (बुक्क, बइस)
2. रयण (पड, तुट्ट)
3. घर (जल, पड)
4. पोत्त (थक्क, घुम)
5. वय (गल, नस्स)
6. पड (जल, खय)
7. बालअ (सय, कंद)
8. णर (उपज्ज, मर)
9. पुत्त (णच्च, थक्क)
10. रक्खस (मर, कुल्ल)

उदाहरण—

कुक्कुर/कुक्कुरा बइसि/बइसिउ/वइसवि/बइसिवि/बइसेप्पि/बइसेप्पिणु/बइसेवि/बइसेविणु बुक्कहि/बुक्कन्ति/बुक्कन्ते/बुविकरे।

(ग–2) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. णर (जीव, हरिस)
2. करह (थक्क, णच्च)
3. दिअर (घुम, उट्ठ)
4. रयण (सोह, उपज्ज)
5. पोत्त (णच्च, उट्ठ)
6. माउल (कुल्ल, उज्जम)
7. नरिंद (हरिस, बइस)
8. बालअ (णच्च, उट्ठ)
9. पोत्त (खेल, उज्जम)
10. बालअ (पला, खेल)

उदाहरण—

णर/णरा हरिसेवं/हरिसण/हरिसणहं/हरिसणहिं/हरिसेप्पि/हरिसेप्पिणु/हरिसेवि/हरिसेविणु जीवन्तु/जीवेन्तु।

(ग-3) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से कसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्पों का प्रयोग कीजिए —

1. पुत्त (कलह, लज्ज)
2. रक्खस (कुल्ल, मर)
3. सप्प (उड्ड, पड)
4. पड (जल, नस्स)
5. दुक्ख (उपज्ज, खय)
6. बालअ (रुव, सय)
7. करह (णच्च, थक्क)
8. रयण (पड, तुट्ट)
9. बालअ (पला, खेल)

उदाहरण —

पुत्त/पुत्ता कलहि/कलहिउ/कलहिवि/कलहवि/कलहेवि/कलहेविणु/कलहेप्पि/ कलहेप्पिणु लज्जेसहि/लज्जेसन्ति/लज्जिहिहि/लज्जिहिन्ति।

(घ) नीचे अकारान्त संज्ञाएँ प्रत्ययसहित दी गई हैं, उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. नरिंद
2. करह
3. पोत्ता
4. कुक्कुर
5. गव्वा
6. मित्त
7. बालअ
8. पिअामहा
9. णर
10. सप्पा
11. भव
12. सायरा
13. हुअवह
14. पड
15. सीहा
16. हणुवन्ता
17. रयणा
18. दिअर
19. आगमा
20. मारुअ
21. कियंता
22. रक्खसा
23. दुक्ख
24. बप्पा

25. गाम	26. राया	27. दुज्जसा
28. घर	29. वय	30. माउल

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
नरिंद	अन्य पुरुष	बहु/एक	नरिंद	पुल्लिग	शून्य

अभ्यास–13

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञारूपों, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. धन बढ़ता है। 2. धान उगेगा। 3. मद्य छूटे। 4. शासन फैलेगा। 5. व्यसन नष्ट होवे। 6. गठरी लुढ़कती है। 7. सुख बढ़े। 8. दूध टपकेगा। 9. दुःख घटे। 10. राज्य प्रयत्न करें। 11. यौवन खिलता है। 12. सदाचार शोभे। 13 आकाश गूंजता है। 14. वैराग्य बढ़े। 15. नागरिक सोयेगा। 16. विमान उड़े। 17. कागज सूखता है। 18. छींक कम होती है। 19. राज्य भूल करता है। 20. सत्य खिले। 21. लकड़ी जलेगी। 22. पानी टपके। 23. गीत गूंजे। 24. जुआ छूटे। 25. घास उगती है। 26. पानी टपकता है। 27. भोजन कम होवे। 28. भय नष्ट होवे। 29. रक्त टपकता है। 30. मरण सिद्ध होता है। 31. खेत जलता है। 32. वस्त्र सूखेगा। 33. काठ जलती है। 34. भोजन बढ़ेगा। 35. घी तपे। 36. सिर दुखता है। 37. धान उगे। 38. जंगल नष्ट होता है। 39. सदाचार शोभता है। 40. वस्त्र जलेगा। 41. पानी टपकेगा। 42. रूप खिलकर प्रकट होता है। 43. धागा गलकर टूटता है। 44. नागरिक जागने के लिए प्रयत्न करे। 45. विमान ठहरकर उड़ेगा। 46. राज्य फैलने के लिए झगड़ा करता है। 47. नागरिक ठहरकर उपस्थित होगा। 48. गीत गूंजकर प्रकट होवेगा। 49. नागरिक कूदने के लिए प्रयास करें। 50. मन लालच करने के लिए क्रीड़ा करता है। 51. शासन प्रयत्न करने के लिए उत्साहित होता है। 52. ज्ञान बढ़कर प्रकट होवे। 53. नागरिक जागने के लिए प्रयत्न करेगा। 54. धान उगकर बढ़ता है। 55. मन खेलने के लिए रमे। 56. धन झगड़ने के लिए होता है। 57. धागा टूटकर नष्ट होवेगा। 58. दूध टपककर फैलता है। 59. कर्ज घटकर नष्ट होता है। 60. नागरिक प्रसन्न होने के लिए खेलता है।

उदाहरण—

धन बढ़ता है=धण/धणा/धणु वड्ढइ/वड्ढेइ/वड्ढए।

नोट—इस अभ्यास–13 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 33-34 का अध्ययन करें।

(ख) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्देशानुसार कालों में वाक्य बनाइए। संज्ञा एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. पत्त (सुक्क) वर्तमानकाल
2. सील (सोह) विधि एवं आज्ञा
3. सासण (पसर) भविष्यत्काल
4. धण (वड्ढ) वर्तमानकाल
5. मज्ज (छुट्ट) विधि एवं आज्ञा
6. खीर (चुअ) भविष्यत्काल
7. जोव्वण (विअस) वर्तमानकाल
8 वेरग्ग (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
9. णयरजण (सय) भविष्यत्काल
10. छिक्क (घट) वर्तमानकाल
11. विमाण (उड्ड) विधि एवं आज्ञा
12. धन्न (उग) भविष्यत्काल
13. णाह (गुंज) वर्तमानकाल
14. रज्ज (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
15. सोक्ख (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
16. पोट्टल (लुढ) वर्तमानकाल
17. रज्ज (चुक्क) वर्तमानकाल
18. वत्थ (सुक्क) भविष्यत्काल
19. लक्कुड (जल) भविष्यत्काल
20. वसण (नस्स) विधि एवं आज्ञा
21. तिण (उग) वर्तमानकाल
22. भय (खय) विधि एवं आज्ञा
23 गाम (वस) भविष्यत्काल
24. रत्त (चुअ) वर्तमानकाल
25. जूअ (छुट्ट) विधि एवं आज्ञा
26. वत्थ (सुक्क) वर्तमानकाल
27. भोयण (वड्ढ) भविष्यत्काल
28. गाण (गुंज) विधि एवं आज्ञा
29. मरण (सिज्झ) वर्तमानकाल
30. कट्ठ (जल) वर्तमानकाल
31. घय (तव) वर्तमानकाल
32. धन्न (उग) विधि एवं आज्ञा
33. वत्थ (जल) भविष्यत्काल
34. खेत्त (नस्स) वर्तमानकाल
35. वण (जल) वर्तमानकाल
36. उदग (चुअ) वर्तमानकाल
37. पोट्टल (लुढ) भविष्यत्काल
38. विमाण (उड्ड) वर्तमानकाल
39. सोक्ख (वड्ढ) भविष्यत्काल
40. णयरजण (जगड) वर्तमानकाल

उदाहरण—

पत्त/पत्ता/पत्तु सुक्कइ/सुक्केइ/सुक्कए।

(ग–1) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. सुत्त (गल, तुट्ट)
2. रूव (विअस, फुर)
3. रज्ज (चुक्क, खिज्ज)
4. मण (लोभ, कील)
5. धन्न (उग, वड्ढ)
6. धण (जगड, हव)
7. खीर (चुअ, पसर)
8. रिण (घट, नस्स)
9. सासण (चेट्ठ, उच्छह)
10. णयरजण (हरिस, खेल)

उदाहरण—

सुत्त/सुत्ता/सुत्तु गलि/गलिउ/गलवि/गलिवि/गलेवि/गलेविणु/गलेप्पि/गलेप्पिणु तुट्टइ/तुट्टेइ/तुट्टए।

(ग–2) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कही हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में विधि एव आज्ञा क प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। सज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त–रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. णयरजण (जागर, चेट्ठ)
2. णाण (वड्ढ, फुर)
3. मण (खेल, रम)
4. सासण (वड्ढ, पसर)
5. धन्न (उग, सोह)
6. मज्ज (छुट्ट, नस्स)
7. सच्च (फुर, सोह)
8. णयरजण (ठा, विज्ज)
9. कम्म (घट, नस्स)
10. विमाण (उड्ड, सोह)

उदाहरण—

णयरजण/णयरजणा/णयरजणु जागरेवं/जागरण/जागरणहं/जागरणहि/ जागरेवि/जागरेविणु/जागरेप्पि/जागरेप्पिणु चेट्ठउ/चेट्ठेउ ।

(ग–3) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. विमाण (चिट्ठ, उट्ठ)
2. णयरजण (जागर, उज्जम)
3. सुत्त (तुट्ट, नस्स)
4. गाण (गुंज, फुर)
5. णयरजण (विज्ज, बइस)
6. वण (जल, खय)
7. तिण (उग, वड्ढ)
8. उदग (चुअ, पसर)
9. सील (फुर, मोह)
10. रज्ज (पसर, वड्ढ)

उदाहरण—

विमाण/विमाणा/विमाणु चिट्ठि/चिट्ठिउ/चिट्ठवि/चिट्ठिवि/चिट्ठेवि/चिट्ठेविणु/ चिट्ठेप्पि/चिट्ठेप्पिणु उड्डेसइ/उड्डेसए/उड्डिहिइ/उड्डिहिए ।

(घ) नीचे अकारान्त संज्ञाएँ प्रत्ययोंसहित दी गई हैं, उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. धणु
2. मण
3. खेत्ता
4. सासण
5. पत्तु
6. सोक्खा
7. सील
8. णयरजण
9. भयु
10. वेरग्गु
11. रत्ता
12. मज्जु
13. सुत्ता
14. विमाण
15. रज्ज

16. छिक्कु	17 लक्कुडु	18. उदगा
19. तिणु	20. भोयणा	21. सुह
22. जोव्वणु	23. कम्मु	24. णाणा
25. असणु	26. वत्थ	27. कट्ठा
28. बीअ	29. रिणु	30. सिर

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
धणु	अन्यपुरुष	एकवचन	धण	नपुंसकलिंग	'उ'

अभ्यास 14

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. धन बढ़े। 2. व्यसन नष्ट होते हैं। 3. गठरियां लुढ़कती हैं। 4. कागज जलते हैं। 5. राज्य प्रयत्न करते हैं। 6. नागरिक सोयेंगे। 7. विमान उड़ें। 8. कागज सूखते हैं। 9. छींकें कम होती हैं। 10. लकड़ियां जलेंगी। 11. नागरिक अफसोस करते हैं। 12. गीत गूंजेंगे। 13. राज्य भूल करते हैं। 14. कागज सूखें। 15. जंगल नष्ट होते हैं। 16. धागे कम होते हैं। 17. भय नष्ट होंगे। 18. धान उगते हैं। 19. व्यसन नष्ट हों। 20. गीत गूंजते हैं। 21. गठरियाँ लुढ़कें। 22. धान उगेंगे। 23. नागरिक प्रयत्न करें। 24. लकड़ियां जलती हैं। 25. जंगल जलते हैं। 26. गठरियाँ लुढ़केंगी। 27. धान उगें। 28. जंगल नष्ट होंगे। 29. भय नष्ट हो। 30. विमान पड़ते हैं। 31. नागरिक भागे। 32. शासन फैलें। 33. विमान उड़ेंगे। 34. धागे टूटते हैं। 35. वस्त्र जलते हैं। 36. नागरिक कूदते हैं। 37. खेत नष्ट होते हैं। 38. राज्य सोहें। 39. बीज उगते हैं। 40. धागे गलकर टूटेंगे। 41. नागरिक भूलकर अफसोस करते हैं। 42. बीज बढ़ने के लिए उगेंगे। 43. धान उगकर बढ़ते हैं। 44. नागरिक जागने के लिए उत्साहित होते हैं। 45. लकड़ियां जलने के लिए नष्ट होती हैं। 46. गीत गूंजकर प्रकट होते हैं। 47. कर्ज घटकर नष्ट होंगे। 48. गठरियां लुढ़ककर गिरती हैं। 49. राज्य उत्साहित होकर प्रयत्न करते हैं। 50. नागरिक नाचने के लिए उठें। 51. राज्य फैलने के लिए झगड़ा करते हैं। 52. नागरिक उपस्थित होकर प्रसन्न होंगे। 53. विमान गिरकर नष्ट होते हैं। 54. नागरिक प्रयास करके खेलें। 55. विमान ठहरकर उड़ेंगे। 56. बीज उगकर बढ़ते हैं। 57. लकड़ियां जलकर नष्ट होंगी।। 58. नागरिक कूदकर भागते हैं। 59. वस्त्र गलकर नष्ट होते हैं।

नोट—इस अभ्यास–14 को हल करने के लिए '**अपभ्रंश रचना सौरभ**' के पाठ 35 का अध्ययन करें।

उदाहरण—

धन बढ़े=धण/धणा/धणइं/धणाइं वड्ढन्तु/वड्ढेन्सु ।

(ख) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट काल में वाक्य बनाइए। संज्ञा एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. विमाण (उड्ड) विधि एवं आज्ञा
2. वसण (नस्स) वर्तमानकाल
3. धण (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
4. पोट्टल (लुढ) वर्तमानकाल
5. रज्ज (चेट्ठ) विधि एवं आज्ञा
6. णयरजण (लोट्ट) विधि एवं आज्ञा
7. लक्कुड (जल) भविष्यत्काल
8. णयरजण (खिज्ज) विधि एवं आज्ञा
9. पत्त (सुक्क) विधि एवं आज्ञा
10. छिक्क (घट) वर्तमानकाल
11. गाण (गुंज) भविष्यत्काल
12. वत्थ (सोह) विधि एवं आज्ञा
13. धन्न (उग) वर्तमानकाल
14. खेत (वड्ढ) भविष्यत्काल
15. वसण (नस्स) विधि एवं आज्ञा
16. गाण (गुंज) वर्तमानकाल
17. पोट्टल (लुढ) विधि एवं आज्ञा
18. पत्त (सुक्क) वर्तमानकाल
19. भय (खय) भविष्यत्काल
20. णयरजण (खिज्ज) वर्तमानकाल
21. रज्ज (चुक्क) वर्तमानकाल
22. सोक्ख (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
23. धन्न (उग) भविष्यत्काल
24. णयरजण (चेट्ठ) वर्तमानकाल
25. लक्कुड (जल) वर्तमानकाल
26. णयरजण (वस) भविष्यत्काल
27. पोट्टल (लुढ) भविष्यत्काल
28. धन्न (उग) विधि एवं आज्ञा
29. वण (खय) भविष्यत्काल
30. मय (नस्स) विधि एवं आज्ञा
31. विमाण (उड्ड) वर्तमानकाल
32. सासण (पसर) विधि एवं आज्ञा
33. णयरजण (पला) विधि एवं आज्ञा
34. विमाण (उड्ड) भविष्यत्काल
35. सुत्त (तुट्ट) वर्तमानकाल
36. वत्थ (जल) वर्तमानकाल
37. णयरजण (कुल्ल) विधि एवं आज्ञा
38. खेत्त (नस्स) वर्तमानकाल

39. मज्ज (नस्स) विधि एवं आज्ञा 40. बीअ (उग्ग) भविष्यत्काल

उदाहरण—

विमाण/विमाणा/विमाणइ/विमाणाइं उड्डन्तु/उड्डेन्तु ।

(ग–1) **नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक क्रिया में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. धन्न (उग, वड्ढ)
2. णयरजण (चुक्क, खिज्ज)
3. गाण (गुंज, फुर)
4. पोट्टल (लुढ, पड)
5. रज्ज (पसर, जगड)
6. विमाण (पड, नस्स)
7. बीअ (उग, वड्ढ)
8. णयरजण (कुद्द, पला)
9. वत्थ (गल, खय)
10. णयरजण (हरिस, विज्ज)

उदाहरण —

धन्न/धन्ना/धन्नइं/धन्नाइं उगि/उगिउ/उगवि/उगिवि/उगेवि/उगेविणु/उगेप्पि/उगेप्पिणु वड्ढहिं/वड्ढन्ति/वड्ढन्ते/वड्ढिरे ।

(ग–2) **नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिये—**

1. णयरजण (णच्च, उट्ठ)
2. वसण (छुट्ट, नस्स)
3. भय (नस्स, पला)
4. गाण (गुंज, पसर)
5. विमाण (चिट्ठ, उड्ड)
6. णयरजण (जागर, चेट्ठ)

7. सासण (वड्ढ, पसर)
8. धन्न (उग्ग, सोह)
9. रज्ज (वस, पसर)
10. खीर (चुअ, पसर)

उदाहरण—

णयरजण/णयरजणा/णयरजणइं/णयरजणाइं उट्ठि/उट्ठिउ/उट्ठवि/उट्ठिवि/उट्ठेवि/उट्ठेविणु/उट्ठेप्पि/उट्ठेप्पिणु णच्चन्तु/णच्चेन्तु ।

(ग-3) **नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. विमाण (चिट्ठ, उड्ड)
2. णयरजण (ठा, विज्ज)
3. गाण (गुंज, फुर)
4. रिण (घट नस्स)
5. सुत्त (गल, तुट्ट)
6. बीअ (वड्ढ, उग)
7. लक्कुड (जल, नस्स)
8. गाण (विअस, फुर)
9. णयरजण (जागर, चेट्ठ)
10. वसण (छुट्ट, नस्स)

उदाहरण —

विमाण/विमाणा/विमाणइं/विमाणाइं चिट्ठि/चिट्ठिउ/चिट्ठवि/चिट्ठिवि/चिट्ठेवि/चिट्ठेविणु/चिट्ठेप्पि/चिट्ठेप्पिणु उड्डेसहि/उड्डेसन्ति/उड्डिहिहि/उड्डिहिन्ति ।

(घ) **नीचे अकारान्त संज्ञाएँ प्रत्ययों-सहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—**

1. घण
2. खेत्ता
3. सासण
4. पसाइं
5. लक्कुड
6. सोक्खाइं

7. णयरजणा	8. रज्जाइं	9. मयई
10. वसणइं	11. रत्ता	12. तिणाइं
13. भोयणइं	14. णाणइं	15. सुत्तइं
16. बीअ	17. सासणइं	18. गाणाइं
19. पोट्टलाइं	20. छिक्का	21. धन्नाइं
22. वत्थइं	23. कम्मा	24. णयरजणाइं
25. धणइं	26. सासणा	27. रज्जा
28. पोट्टला	29. छिक्कइं	30. वत्था

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
धण	अन्यपुरुष	एकवचन/बहुवचन	धण	नपंसकलिंग	शून्य

अभ्यास–15

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1 माता प्रसन्न होती है। 2. श्रद्धा बढ़े। 3. शिक्षा फैलेगी। 4. बहिन छीजती है। 5. भूख शान्त होवे। 6. वाणी थकती है। 7. मदिरा छूटे। 8. प्यास लगेगी। 9. आज्ञा प्रकट होती है। 10. बेटी प्रसन्न हो। 11. नदी सूखेगी। 12. लक्ष्मी घटती है। 13. प्रज्ञा सिद्ध हो। 14. अभिलाषा शान्त होगी। 15. गुफा नष्ट होगी। 16. पत्नी डरती है। 17. वाणी प्रकट होवे। 18. दया छूटती है। 19. गंगा फैलती है। 20. प्रतिष्ठा बढ़े। 21. परीक्षा होगी। 22. प्यास लगती है। 23. स्त्री उत्साहित हो। 24. सीता देर करेगी। 25. नींद घटे। 26. महिला तप करे। 27. पुत्री खांसती है। 28. प्रशंसा फैलेगी। 29. खड्डा बढ़ता है। 30. यमुना सूखेगी। 31. बुद्धि खिले। 32. पुत्री वमन करती है। 33. कन्या बाल उखाड़ेगी। 34. बेटी नीचे आती है। 35. तृष्णा घटे। 36. रात्रि सोने के लिए होती है। 37. नर्मदा फैलेगी। 38. शोभा बढ़े। 39. पुत्री सांस लेवे। 40. सीता शोभती है। 41. शोभा नष्ट होती है। 42. पुत्री डरकर सोती है। 43. बहिन शान्त होकर बैठे। 44. ननद घूमने के लिए रुकेगी। 45. पुत्री गिड़गिड़ाकर रोती है। 46. शिक्षा बढ़कर फैले। 47. कन्या देरी करके नीचे आती है। 48. बेटी बाल उखाड़कर रोती है। 49. पत्नी ठहरकर सोए। 50. माता वमन करके शान्त होती है। 51. स्त्री उत्साहित होकर प्रयत्न करे। 52. तृष्णा घटकर शान्त हो। 53. ननद छीजकर कूदती है। 54. पुत्री बैठने के लिए रुके। 55. लक्ष्मी बढ़कर शोभे। 56. कन्या रोकर देर करती है। 57. पुत्री खेलने के लिए खुश होवेगी। 58. बहिन खुश होकर घूमेगी। 59. कन्या सोने के लिए उठे। 60. बहिन खांसकर वमन करती है।

नोट—इस अभ्यास–15 को हल करने के लिए '**अपभ्रंश रचना सौरभ**' के पाठ 37–38 का अध्ययन करें।

उदाहरण—

माता प्रसन्न होती है=माया/माय हरिसइ/हरिसेइ/हरिसए ।

(ख) **नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट काल में वाक्य बनाइए । संज्ञा एवं क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. गंगा (पसर) वर्तमानकाल
2. जाआ (बिह) वर्तमानकाल
3. सद्धा (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
4. सिक्खा (पसर) भविष्यत्काल
5. वाया (थक्क) वर्तमानकाल
6. पण्णा (सिज्झ) विधि एवं आज्ञा
7. करुणा (फुर) भविष्यत्काल
8. कमला (घट) वर्तमानकाल
9. धूआ (हरिस) विधि एवं आज्ञा
10. ससा (छिज्ज) वर्तमानकाल
11. अहिलासा (उवसम) भविष्यत्काल
12. माया (उल्लस) वर्तमानकाल
13. वाया (फुर) विधि एवं आज्ञा
14. परिक्खा (हव) भविष्यत्काल
15. निसा (लग्ग) वर्तमानकाल
16. महिला (उच्छह) विधि एवं आज्ञा
17. कन्ना (चिराव) भविष्यत्काल
18. गिद्दा (घट) विधि एवं आज्ञा
19. सुया (खास) वर्तमानकाल
20. महिला (चेट्ठ) विधि एवं आज्ञा
21. सरिआ (सुक्क) भविष्यत्काल
22. गड्डा (वड्ढ) वर्तमानकाल
23. मेहा (विअस) विधि एवं आज्ञा
24. तणया (वम) वर्तमानकाल
25. नणन्दा (ऊतर) भविष्यत्काल
26. तण्हा (घट) विधि एवं आज्ञा
27. धूआ (लुंच) वर्तमानकाल
28. सुया (उस्सस) विधि एवं आज्ञा
29. गुहा (नस्स) भविष्यत्काल
30. सोहा (खय) वर्तमानकाल
31. मइरा (छुट्ट) विधि एवं आज्ञा
32. पइट्ठा (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
33. सीया (ऊतर) वर्तमानकाल
34. आणा (फुर) वर्तमानकाल
35. जरा (वड्ढ) वर्तमानकाल
36. जउणा (सुक्क) भविष्यत्काल
37. कहा (हव) भविष्यत्काल
38. कलसिया (चुअ) वर्तमानकाल

39. सभा (हो) भविष्यत्काल 40. निसा (हव) वर्तमानकाल

उदाहरण—

गंगा/गंग पसरइ/पसरेइ/पसरए ।

(ग–1) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. सुया (बिह, लोट्ट) 2. नणन्दा (गडयड, रुव)
3. कन्ना (विराव, ऊतर) 4. धूआ (लुंच, रुव)
5. माया (वम, उवसम) 6. कन्ना (उवसम, उवविस)
7. ससा (खास, वम) 8. महिला (छिज्ज, कुद्द)
9. जाआ (उस्सस, थंभ) 10. झुंपडा (वस, हो)

उदाहरण—

सुया/सुय बिहि/बिहिउ/बिहवि/बिहिवि/बिहेवि/बिहेविणु/बिहेप्पि/बिहेप्पिणु लोट्टइ/लोट्टेइ/लोट्टए ।

(ग–2) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. ससा (उवसम, उवविस) 2. सिक्खा (वड्ढ पसर)
3. जाआ (चिट्ठ, लोट्ट) 4. महिला (उच्छह, चेट्ठ)

5. तण्हा (घट, उवसम)
6. तणया (उवविस, थंभ)
7. कन्ना (लोट्ट, उट्ठ)
8. कमला (वड्ढ, सोह)
9. ससा (हरिस, ऊतर)
10. घूआ (थंभ, कील)

उदाहरण—

ससा/सस उवसमि/उवसमिउ/उवसमवि/उवसमिवि/उवसमेवि/उवसमेविणु/उवसमेप्पि/उवसमेप्पिणु उवविसउ/उवविसेउ ।

(ग–3) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. घूआ (थंभ, चेट्ठ)
2. सुया (कील, हरिस)
3. जाआ (बिह, पला)
4. महिला (चुक्क, खिज्ज)
5. ससा (हरिस, घुम)
6. णणन्दा (जगड, कुद्द)
7. कन्ना (चिराव, ऊतर)
8. झुंपडा (वस, हो)
9. करुणा (सोह, फुर)
10. माया (लोट्ट, चेट्ठ)

उदाहरण—

घूआ/घूअ थंभेवं/थंभण/थंभणहं/थंभणहिं/थंभेवि//थंभेविणु/थंभेप्पि/थंभेप्पिणु चेट्ठेसइ/चेट्ठेसए/चेट्ठिहिइ/चेट्ठिहिए ।

(घ) नीचे आकारान्त संज्ञाएँ प्रत्ययों-सहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. परिक्खा
2. सस
3. माया
4. करुण
5. वाय
6. आणा

7. णम्मय	8. भुक्खा	9. कलसिय
10. गुहा	11. मइर	12. धूअ
13. महिला	14. तिस	15. निसा
16. कह	17. गंग	18. अहिलासा
19. तण्हा	20. सोहा	21. झुंपडा
22. सरिअ	23. णणन्दा	24. सीय
25. जरा	26. णिद्दा	27. पसंसा
28. जाआ	29. सद्ध	30. मेहा

उदाहरण —

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
परिक्खा	अन्यपुरुष	एकवचन	परिक्खा	स्त्रीलिंग	शून्य

अभ्यास-16

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. माताएँ प्रसन्न होती हैं। 2. शिक्षाएं फैलेंगी। 3. बहिनें छीजती हैं। 4. अभिलाषाएं शान्त होंगी।। 5. बेटियां प्रसन्न होवें। 6. गुफाएं नष्ट होंगी। 7 पत्नियां डरती हैं। 8. परीक्षाएं होंगी। 9. स्त्रियां उत्साहित होवें। 10. कन्याएं देर करेंगी। 11. पुत्रियां खांसती हैं। 12. स्त्रियां तप करें। 13. खड्डे बढ़ते हैं। 14. पुत्रियां वमन करती हैं। 15. बेटियां बाल उखाड़ेंगी। 16. ननदें नीचे आती हैं। 17. पुत्रियां सांस लेवें। 18. माताएं बैठती हैं। 19. वाणियां सिद्ध होती हैं। 20. झोंपड़ियां शोभती हैं। 21. परीक्षाएं होती हैं। 22. पुत्रियां बैठती हैं। 23. नदियां सूखती हैं। 24. महिलाएं प्रयत्न करती हैं। 25. वाणियां प्रकट हों। 26. बहिनें ठहरेंगी। 27. पुत्रियां क्रीड़ा-कर प्रसन्न होंगी। 28. बहिनें खेलने के लिए झगड़ती हैं। 29. कन्याएं भागकर थकती हैं। 30. माताएं प्रसन्न होकर जीवें। 31. स्त्रियां थककर सोवें। 32. पुत्रियां नाचकर थकेंगी। 33. बहिनें शान्त होकर बैठें। 34. बेटियां प्रसन्न होकर ठहरेंगी। 35. शिक्षाएं बढ़कर फैलें। 36. कन्याएं डरकर नीचे आती हैं। 37. बेटियां बाल उखाड़कर रोती हैं। 38. माताएं वमन करके शान्त होती हैं। 39. पत्नियां सोने के लिए ठहरें। 40. स्त्रियां उत्साहित होकर प्रयत्न करें। 41. तृष्णाएं घटकर शान्त होवें। 42 पुत्रियां डरकर सोती हैं। 43. ननदें घूमने के लिए उठेंगी। 44. पुत्रियां रुककर बैठें। 45. कन्याएं रोकर देर करती हैं। 46. बहिनें खांसकर वमन करती हैं। 47. पुत्रियां सोने के लिए रोती हैं। 48. माताएं जीने के लिए प्रयत्न करें। 49. पुत्रियां खेलने के लिये खुश होवेंगी। 50. कन्याएं नाचकर थकती हैं। 51. माताएं शान्त होकर बैठें। 52. बहिनें सोकर उठें। 53. ननदें थकने के लिए घूमें। 54. बहिनें जागने के लिए प्रयास करें। 55. कन्याएं सोने के लिए उठेंगी। 56. पुत्रियां नाचने के लिए प्रयास करती हैं। 57. बहिनें खुश होकर घूमेंगी।

नोट—इस अभ्यास-16 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 39 का अध्ययन करें।

58. पुत्रियां खेलने के लिए कूदेंगी। 59. कन्याएं मूर्च्छित होकर मरती हैं। 60. बहिनें घूमने के लिए रुकें।

उदाहरण—

माताएं प्रसन्न होती हैं=माया/माय/मायाओ/मायओ/मायाउ/मायउ हरिसहि/हरिसन्ति/हरिसन्ते/हरिसिरे।

(ख) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइये। संज्ञा एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. धूआ (ऊतर) वर्तमानकाल
2. महिला (हरिस) विधि एवं आज्ञा
3. सिक्खा (पसर) भविष्यत्काल
4. माया (हरिस) वर्तमानकाल
5. सुया (लुंच) विधि एवं आज्ञा
6. झुंपडा (सोह) वर्तमानकाल
7. परिक्खा (हव) भविष्यत्काल
8. तणया (खास) वर्तमानकाल
9. ससा (थंभ) भविष्यत्काल
10. णणन्दा (उस्सस) भविष्यत्काल
11. कन्ना (पला) विधि एवं आज्ञा
12. वाया (फुर) विधि एवं आज्ञा
13. माया (वम) वर्तमानकाल
14. गुहा (खय) भविष्यत्काल
15. जाआ (उवविस) विधि एवं आज्ञा
16. वाया (सिज्झ) वर्तमानकाल
17. सरिआ (सुक्क) भविष्यत्काल
18. अहिलासा (उवसम) वि. एवं आ.
19. सुया (गडयड) वर्तमानकाल
20. कलसिया (लुढ) वर्तमानकाल
21. माया (चेट्ठ) विधि एवं आज्ञा
22. ससा (जगड) भविष्यत्काल
23. जाआ (जागर) विधि एवं आज्ञा
24. कन्ना (छिज्ज) वर्तमानकाल
25. णणन्दा (चिराव) भविष्यत्काल
26. परिक्खा (हव) वर्तमानकाल
27. कन्ना (उवविस) वर्तमानकाल
28. सुया (बिह) भविष्यत्काल
29. माया (खिज्ज) वर्तमानकाल
30. धूआ (कंद) वर्तमानकाल
31. तणया (ऊतर) विधि एवं आज्ञा
32. सरिआ (सुक्क) वर्तमानकाल

33. अहिलासा (वड्ढ) वर्तमानकाल
34. कलसिया (तुट्ट) भविष्यत्काल
35. ससा (हरिस) विधि एवं आज्ञा
36. सुया (थंभ) विधि एवं आज्ञा
27. महिला (विज्ज) भविष्यत्काल
28. कन्ना (लोभ) वर्तमानकाल
29. नणन्दा (चुक्क) वर्तमानकाल
40. धूआ (उच्छह) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—

धूआ/धूअ/धूआउ/धूअउ/धूआओ/धूअओ ऊतरहि/ऊतरन्ति/ऊतरन्ते/ऊतरिरे ।

(ग–1) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. ससा (कील, जगड)
2. कन्ना (बिह, ऊतर)
3. धूआ (लुंच, कंद)
4. माया (वम, उवसम)
5. सुया (बिह, लोट्ट)
6. नणन्दा (छिज्ज, कंद)
7. तणया (कंद, चिराव)
8. झुंपडा (वस, हो)
9. महिला (थंभ, उवविस)
10. कन्ना (णच्च, थक्क)

उदाहरण—

ससा/सस/ससाओ/ससओ/ससाउ/ससउ कीलेवं/कीलण/कीलणहं/कीलणहि/कीलेवि/कीलेविणु/कीलेप्पि/कीलेप्पिणु जगडहि/जगडन्ति/जगडन्ते/जगडिरे ।

(ग–2) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. माया (हरिस, जीव)
2. जाआ (लोट्ट, चिट्ठ)

3. ससा (जागर, चेट्ठ)
4. णणन्दा (थक्क, घुम)
5. सुया (थंभ, उवविस)
6. तण्हा (घट, उवसम)
7. सिक्खा (वड्ढ, पसर)
8. माया (उच्छह, चेट्ठ)
9 ससा (उवसम, उवविस)
10. धूआ (रम, कील)

उदाहरण—

माया/माय/मायाउ/मायउ/मायाओ/मायओ हरिसि/हरिसिउ/हरिसिवि/हरिसिविं/हरिसेवि/हरिसेविणु/हरिसेप्पि/हरिसेप्पिणु जीवन्तु/जीवेन्तु ।

(ग-3) **नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. कन्ना (लोट्ट, उट्ठ)
2. ससा (हरिस, घुम)
3. धूआ (कील, रम)
4. सिक्खा (वड्ढ, पसर)
5. गुहा (जल नस्स)
6. सुया (लुंच, कंद)
7. जाआ (बिह, पला)
8. महिला (जागर, उट्ठ)
9. झुंपडा (वस, हो)
10. णणन्दा (जगड, कंद)

उदाहरण—

कन्ना/कन्न/कन्नाउ/कन्नउ/कन्नाओ/कन्नओ लोट्टि/लोट्टिउ/लोट्टिवि/लोट्टिविं/लोट्टेवि/लोट्टेविणु/लोट्टेप्पि/लोट्टेप्पिणु उट्ठेसहिं/उट्ठेसन्ति/उट्ठिहिहिं/उट्ठिहिन्ति ।

(घ) **नीचे आकारान्त संज्ञाएँ प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—**

1. सीया
2 परिक्खउ
3 मायाओ

4. कहाउ	5. तणयओ	6. अहिलास
7. गंगाओ	8. णणन्दा	9. महिल
10. निसाउ	11. सरिअ	12. सिक्खउ
13. झुंपडाओ	14. कलसिय	15. गड्डाउ
16. जाआउ	17. गुहओ	18. कन्नाउ
19. पसंसाओ	20. धूअओ	21. महिलाओ
22. सीयाओ	23. झुंपडा	24. ससउ
25. सुयाउ	26. वायाओ	27. सरिअउ
28. मायउ	29. सिक्खाओ	30. निसा

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
सीया	अन्यपुरुष	एकवचन, बहुवचन	सीया	स्त्रीलिंग	शून्य

अभ्यास-17

(क) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. ऊंट बैठता है। 2. विमान उड़े। 3. परीक्षा होवेगी। 4. कुत्ता भोंकता है। 5. शासन फैले। 6. कन्याएं नाचेंगी। 7. पुस्तकें जलती हैं। 8. सुख बढ़े। 9 बहिन वमन करती है। 10. राजा प्रसन्न होवे। 11. गठरी लुढ़कती है। 12. छोटे घड़े टूटते हैं। 13. पोता प्रसन्न होवे। 14. नागरिक जागेंगे। 15. लक्ष्मी बढ़ती है। 16 मेघ गरजते हैं। 17. वैराग्य बढ़े। 18. अभिलाषाएं शान्त होंगी। 19. वस्त्र सूखता है। 20 रूप खिलेगा। 21. शिक्षा फैलेगी। 22. मामा उठे। 23. पानी टपकता है। 24. नदियां सूखेंगी। 25. अपयश फैलता है। 26. दुःख घटे। 27. गुफाएं नष्ट होंगी। 28. व्रत शोभते हैं। 29. ज्ञान सिद्ध हो। 30. बहिनें ठहरेंगी। 31. पुत्र कांपता है। 32. सदाचार शोभे। 33. प्यास लगेगी। 34. राक्षस मरे। 35. बीज उगेंगे। 36. महिलाएं उत्साहित हों। 37. सिंह भागते हैं। 38. सत्य खिले। 39. वाणी थकती है। 40. राक्षस कूदकर मरते हैं 41. नागरिक जागने के के लिए प्रयत्न करेगा। 42. पुत्री बाल उखाड़कर रोती हैं। 43. बालक रोकर सोयेंगे। 44. विमान ठहरकर उड़ेगा। 45. तृष्णा घटकर शान्त होवे। 46. सूर्य उगकर सोहता है। 47. मनुष्य जीने के लिए प्रयास करें। 48. पुत्रियां खेलने के लिए खुश होंगी। 49. मामा थककर बैठते हैं। 50. धागा गलकर टूटता है। 51. कन्या देरी करके नीचे आती हैं। 52. रत्न गिरकर टूटेगा। 53. राज्य फैलने के लिए झगड़ा करता है। 54. बेटी ठहरकर उठेगी। 55. पुस्तकें जलकर नष्ट होती हैं। 56. नागरिक प्रयास करके खेलें। 57 बहिन खुश होकर घूमेगी। 58. सर्प डरकर भागते हैं। 59. माताएं जीने के लिए प्रयत्न करें।

उदाहरण—

ऊँट बैठता है=करह/करहा/करहु/करहो अच्छइ/अच्छेइ/अच्छए।

नोट—इस अभ्यास–17 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 29 से 39 तक के पाठों को दोहराएं।

(ख) नीचे संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। निर्दिष्ट काल व किसी भी वचन में वाक्य बनाइए। संज्ञा एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल
2. पत्त (सुक्क) विधि एवं आज्ञा
3. सिक्खा (पसर) भविष्यत्काल
4. पोत्त (णच्च) वर्तमानकाल
5. लक्कुड (जल) विधि एवं आज्ञा
6. अहिलासा (उवसम) भविष्यत्काल
7. परिक्खा (हव) भविष्यत्काल
8. वत्थ (सुक्क) विधि एवं आज्ञा
9. पुत्त (कुट्ट) वर्तमानकाल
10. माया (थंभ) भविष्यत्काल
11. सलिल (चुअ) विधि एवं आज्ञा
12. वय (गल) वर्तमानकाल
13. घर (पड) वर्तमानकाल
14. सासण (पसर) विधि एवं आज्ञा
15. मेहा (विअस) भविष्यत्काल
16. मेह (गज्ज) वर्तमानकाल
17. रज्ज (चेट्ठ) विधि एवं आज्ञा
18. कन्ना (चिराव) भविष्यत्काल
19. माउल (पला) वर्तमानकाल
20. जोव्वण (विअस) वर्तमानकाल
21. कमला (घट) वर्तमानकाल
22. दुक्ख (गल) विधि एवं आज्ञा
23. वेरग्ग (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
24. पण्णा (सिज्झ) विधि एवं आज्ञा
25. हुअवह (जल) भविष्यत्काल
26. रज्ज (उच्छह) भविष्यत्काल
27. तिसा (लग्ग) भविष्यत्काल
28. मेहा (विअस) वर्तमानकाल
29. विमाण (उड्ड) वर्तमानकाल
30. आगम (सोह) विधि एवं आज्ञा
31. वाया (सिज्झ) वर्तमानकाल
32. णयरजण (चेट्ठ) विधि एवं आज्ञा
33. महिला (उच्छह) विधि एव आज्ञा
34. णर (उज्जम) भविष्यत्काल
35. बीअ (उग्ग) भविष्यत्काल
36. गुहा (नस्स) भविष्यत्काल
37. दुज्जस (पसर) वर्तमानकाल
38. सील (सोह) विधि एवं आज्ञा
39. करह (णच्च) वर्तमानकाल

उदाहरण—

कुक्कुर/कुक्कुरा/कुक्कुरु/कुक्कुरो बुक्कइ/बुक्केइ/बुक्कए ।

(ग–1) नीचे संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में कहीं एकवचन, कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया)के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. कुक्कुर (बुक्क, उवविस)
2. सलिल (चुअ, पसर)
3. ससा (खास, वम)
4. णर (उपज्ज, मर)
5. गाण (गुंज, फुर)
6. सुया (लोट्ट, कंद)
7. दिअर (वल, उवविस)
8. वय (गल, नस्स)
9. झुंपडा (वस, हो)
10. वसण (छुट्ट, नस्स)

उदाहरण —

कुक्कुर/कुक्कुरा/कुक्कुरु/कुक्कुरो बुक्कि/बुक्किउ/बुक्कवि/बुक्किवि/बुक्केवि/बुक्केविणु/बुक्केप्पि/बुक्केप्पिणु उवविसइ/उवविसेइ/उवविसए ।

(ग–2) नीचे संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में कहीं एकवचन व कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त–रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. रहुणन्दण (हरिस, अच्छ)
2. रज्ज (पसर, सोह)
3. गाण (गुंज, फुर)
4. महिला (उच्छह, चेट्ठ)
5. गाम (वस, पसर)
6. वसण (छुट्ट, नस्स)
7. जणेर (हस, जीव)
8. दिवायर (सोह, उग)
9. ससा (उवसम, उवविस)
10. सिक्खा (वड्ढ, पसर)

उदाहरण —

रहुणन्दणा/रहुणन्दणा/रहुणन्दणु/रहुणन्दणो हरिसि/हरिसिउ/हरिसवि/हरिसिवि/हरिसेवि/हरिसेविणु/हरिसेप्पि/हरिसेप्पिणु अच्छइ/अच्छेउ ।

(ग-3) नीचे संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में दो क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं में कहीं एकवचन व कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. सुत्त (गल, तुट्ट)
2. रयण (पड, तुट्ट)
3. विमाण (ठा, उड्ड)
4. घूआ (थंभ, चिट्ट)
5. सुया (खेल, रम)
6. ससा (हरिस, कील)
7. घर (पड, नस्स)
8. उदग (सुक्क, णिज्झर)
9. गंथ (जल, नस्स)
10. महिला (उच्छह, चेट्ठ)

उदाहरण—

सुत्त/सुत्ता/सुत्तु गलि/गलिउ/गलवि/गलिवि/गलेवि/गलेविणु/गलेप्पि/गलेप्पिणु तुट्टेसइ/तुट्टेसए/तुट्टिहिइ/तुट्टिहिए ।

(घ) नीचे प्रत्ययों-सहित संज्ञाएँ दी गई हैं, उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. सोक्खइं
2. ससा
3. पुत्तो
4. विमाणु
5. तणयाउ
6. वया
7. रज्जाइं
8. माय
9. सप्पु
10. लक्कुडु
11. मेहाओ
12. आगमो
13. सासणा
14. परिक्खा
15. परमेसरो

16. छिक्कु	17. सुयओ	18. रयणा
19. वत्थइं	20. आण	21 दुज्जसु
22. भोयणु	23. राया	24. सरियउ
25. खेत्तु	26. करुणा	27. भवो
28. सायरा	29. घणइ	30. उदग

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
सोक्खइं	अन्यपुरुष	बहुवचन	सोक्ख	नपुंसकलिंग	इं

अभ्यास-18

भूतकालिक कृदन्त

अभ्यास 1 से 17 में आप वर्तमानकाल, विधि एवं आज्ञा, भविष्यत्काल तथा संबंधक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) एवं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों से परिचित हो चुके हैं। किन्तु भूतकाल की क्रियाओं के लिए अपभ्रंश में वर्तमानकाल, विधि एवं आज्ञा तथा भविष्यत्काल की तरह प्रत्ययों का विधान नहीं है। अतः भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का ही प्रयोग किया जाता है। अभ्यास हल करने से पूर्व **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** पाठ–41 (भूतकालिक कृदन्त) का अध्ययन करें।

'अपभ्रंश रचना सौरभ' में पुरुषवाचक सर्वनामों का प्रयोग करते हुए उदाहरणस्वरूप वाक्य नहीं दिए गए हैं। अतः इन्हें यहां समझाने का प्रयास किया गया है।

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय हैं—**अ/य**। प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाने पर **'हस'** क्रिया का रूप बनता है—हसिअ/हसिय। भूतकालिक कृदन्त के रूप पुल्लिग सर्वनाम के साथ **'देव'** के समान तथा स्त्रीलिंग सर्वनाम के साथ **'कहा'** के अनुसार चलेंगे।

(i) पुल्लिग एकवचन — देव/देवा/देवु/देवो → हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ

(ii) पुल्लिग बहुवचन — देव/देवा → हसिअ/हसिआ

(iii) स्त्रीलिंग एकवचन — कहा/कह → हसिआ/हसिअ

(iv) स्त्रीलिंग बहुवचन — कहा/कह/कहाउ/कहउ/कहाओ/कहओ → हसिआ/हसिअ/हसिआउ/हसिअउ/हसिआओ/हसिअओ

(i) **मैं हँसा**—यहां पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिग एकवचन का है। अतः **'हस'** क्रिया का भूतकालिक कृदन्त बनाकर इसके रूप पुल्लिग में **'देव'** के अनुसार एकवचन में चलाने होंगे—

नोट—इस अभ्यास–18 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 41 का अध्ययन करें।

हउं हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ (यहां 'हउ' सर्वनाम पुल्लिग प्रथमा एकवचन है)।

(ii) मैं हँसी—यहां पुरुषवाचक सर्वनाम स्त्रीलिंग एकवचन का है। अतः कृदन्त के रूप स्त्रीलिंग में 'कहा' के अनुसार एकवचन में चलाने होंगे—

हउं हसिआ/हसिअ (यहां 'हउं' सर्वनाम स्त्रीलिंग प्रथमा एकवचन है)

(iii) हम हँसे—यहां पुरुषवाचक सर्वनाम पुल्लिग बहुवचन का है। अतः कृदन्त के रूप पुल्लिग में 'देव' के अनुसार बहुवचन में चलाने होंगे—
अम्हे/अम्हइं हसिअ/हसिआ (यहां 'अम्हे/अम्हइं' सर्वनाम पुल्लिग प्रथमा बहुवचन है)।

(iv) हम सब हँसी—यहां पुरुषवाचक सर्वनाम स्त्रीलिंग बहुवचन का है। अतः कृदन्त के रूप स्त्रीलिंग में 'कहा' के अनुसार बहुवचन में चलाने होंगे—

अम्हे/अम्हइं हसिआ/हसिअ/हसिआउ/हसिअउ/हसिआओ/हसिअओ
(यहां 'अम्हे/अम्हइं' सर्वनाम स्त्रीलिंग प्रथमा बहुवचन है)

इसी प्रकार

5. तुम हँसे —तुहुं हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ।
6. तुम हँसी —तुहुं हसिआ/हसिअ।
7. तुम सब हँसे —तुम्हे/तुम्हइं हसिअ/हसिआ।
8. तुम सब हँसी— तुम्हे/तुम्हइं हसिआ/हसिअ/हसिआउ/हसिअउ/हसिआओ/हसिअओ।
9. वह हँसा —सो हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ।
10. वह हँसी —सा हसिआ/हसिअ।
11. वे सब हँसे —ते हसिअ/हसिआ।
12. वे सब हँसी —ता हसिआ/हसिअ/हसिआउ/हसिअउ/हसिआओ/हसिअओ।

(क-1) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस	2. सय	3. णच्च
4. रूस	5. लुक्क	6. जग्ग
7. जीव	8. कंद	9. हरिस
10. गल		

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
हस	हसिअ/हसिय	हसिअ/हसिआ/हसिओ/हसिउ/हसिय/हसिया/हसियो/हसियु

(क-2) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. णच्च	2. खय	3. जल
4. सोह	5. सुक्क	6. पला
7. ठा	8. बुक्क	9. उग
10. नस्स		

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
णच्च	णच्चिअ/णच्चिय	णच्चिअ/णच्चिआ/णच्चिय/णच्चिया

(क-3) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. वड्ढ	2. विअस	3. मुंज

4. कुद्द 5. जागर 6. विज्ज

7. छुट्ट 8. वस 9 चुक्क

10. खिज्ज

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
वड्ढ	वड्ढिअ/वड्ढिय	वड्ढिअ/वड्ढिआ/वड्ढिउ

(क-4) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. विअस 2. हो 3. लुंच

4. खास 5. उवसम 6. थंभ

7. ऊतर 8. तुट्ट 9. उड्ड

10. वल

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
विअस	विअसिअ	विअसिअ/विअसिआ/विअसिअइं/विअसिआइं

(क-5) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त बनाकर स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. उट्ठ 2. ठा 3. हस

4. लज्ज 5. अच्छ 6. भिड

7. मर 8. खेल 9. कुल्ल

10 सय

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	आकारान्त रूप	आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
उट्ठ	उट्ठिअ/उट्ठिय	उट्ठिआ/उट्ठिया	उट्ठिआ/उट्ठिअ/उट्ठिया/उट्ठिय

(क–6) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. जग्ग
2. छिज्ज
3. विह
4. ऊतर
5. थंभ
6. उस्सस
7. हव
8. उच्छह
9. चेट्ठ
10. रम

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	आकारान्त रूप	आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
जग्ग	जग्गिअ/जग्गिय	जग्गिआ/जग्गिया	जग्गिआ/जग्गिअ/जग्गिआउ/जग्गिअउ/जग्गिआओ/जग्गिअओ

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञाओं व सर्वनामों के लिंग व वचन के अनुरूप (पु. व नपु. में) अकारान्त तथा (स्त्री. में) आकारान्त संज्ञाओं के प्रत्ययों से भूतकालिक कृदन्त बनाकर उसके सभी विकल्प लिखिए—

1. राजा हँसा। 2. पुत्र उठा। 3. व्रत गला। 4. रत्न गिरा। 5. अग्नि जली। 6. अपयश फैला। 7. पुस्तक नष्ट हुई। 8. बालक रोया। 9. हनुमान कूदा। 10 राक्षस मरा। 11. मेघ गरजे। 12. राजा हँसे। 13. पुत्र उठे। 14. व्रत गले। 15. रत्न गिरे। 16. वस्त्र सूखे। 17. गांव बसे। 18. पोते बैठे। 19. विमान उड़ा। 20. शासन फैला। 21. राज्य बढ़ा। 22. गठरी

लुढ़की । 23. सदाचार प्रकट हुआ । 24. रूप खिला । 25. लकड़ी जली । 26. जंगल नष्ट हुआ । 27. सिर दुखा । 28. सत्य खिला । 29. विमान उड़े । 30. कागज सूखे । 31. सुख बढ़े । 32. राज्य फैले । 33. लकड़ियां जलीं । 34. व्यसन छूटे । 35. वस्त्र सूखे । 36. धागे टूटे । 37. गीत गूंजे । 38. खेत शोभे । 39. परीक्षा हुई । 40. बहिन रुकी । 41. झोंपड़ी शोभी । 42. शिक्षा फैली । 43. नदी सूखी । 44. बेटी सोयी । 45. यमुना फैली । 46. पत्नी डरी । 47. पुत्री ठहरी । 48. प्रशंसा फैली । 49. पुत्रियां बैठीं । 50. परीक्षाएं हुईं । 51. बहिनें रूकीं । 52. शिक्षाएं फैली । 53. बेटियाँ सोयीं । 54. पुत्रियां जागीं । 55. नदियां सूखीं । 56. अभिलाषाएं बढ़ीं । 57. झोंपड़ियां बसीं । 58. गुफाएं नष्ट हुईं । 59. मैं जागा । 60. वह ठहरा । 61. तुम प्रसन्न हुए । 62. मैं बैठी । 63. तुम सोये । 64. वह हँसी । 65. मैं भागा । 66. वह मुड़ा । 67. तुम उठे । 68. वह खेला । 69. हम सब जागे । 70. वे सब ठहरे । 71 तुम सब प्रसन्न हुए । 72. हम दोनों बैठे । 73. तुम सब सोये । 74. वे सब कूदे । 75. हम दोनों भागे । 76. वे दोनों मुड़े । 77. तुम दोनों उठे । 78. वे सब खेले ।

उदाहरण—

राजा हँसा=नरिंद/नरिंदा/नरिंदु/नरिंदो हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ ।

(ग-1) **नीचे दी गई पुल्लिग संज्ञाओं का (कर्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए, मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा एवं भूतकालिक कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिये —**

1. कुक्कुर····बुक्क (अच्छ)
2. पुत्त····बिह (कंद)
3. गंथ····जल (नस्स)
4. मित्त····हरिस (जीव)
5. पोत्त····णच्च (उट्ठ)
6. रयण····पड (तुट्ट)
7. जणेर····जागर (डुल)
8. करह····थक्क (णच्च)
9. दुह····गल (नस्स)
10. वय····तुट्ट (गल)

उदाहरण—

कुक्कुर/कुक्कुरा/कुक्कुरु/कुक्कुरो बुक्कि अच्छिअ/अच्छिआ/अच्छिउ/अच्छिओ ।

(ग–2) नीचे दी गई नपुंसकलिंग संज्ञाओं का (कर्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त क रूप में प्रयोग कीजिए, मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा एवं भूतकालिक कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. विमाण····उड्ड (थभ)
2. सासण····पसर (वड्ढ)
3. लक्कुड····नस्स (जल)
4. णयरजण····कुद्द (पला)
5. सुत्त····गस्स (तुट्ट)
6. पोट्टल ·· लुढ (पड)
7. घय····चुअ (पसर)
8. भय····खय (पला)
9. बीअ····उग (वड्ढ)
10. रिण····घट (नस्स)

उदाहरण—

विमाण/विमाणा/बिमाणु उड्डिउ थंभिअ/थंभिआ/थंभिउ ।

(ग–3) नीचे दी गई स्त्रीलिंग सज्ञाओं का (कर्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए, मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा एवं भूतकालिक कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. सीया ·· थक्क (लोट्ट)
2. घूआ····बिह (कंद)
3. ससा····णच्च (थक्क)
4. महिला···· डर (पला)
5. तणया····लुंच (रुव)
6. जाआ····उवसम (उवविस)
7. तण्हा····घट (नस्स)
8. झुंपडा·· वस (हव)

9 पसंसा····वड्ढ (पसर) 10. कन्ना····कुद्द (ऊतर)

उदाहरण —

सीया/सीय थक्किउ लोट्टिआ/लोट्टिअ ।

(म-4) नीचे दिये गये पुरुषवाचक सर्वनामों का (कर्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए, मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए । पुरुष-वाचक सर्वनाम तथा भूतकालिक कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. त····णच्च (थक्क)
2. अम्ह····डर (पला)
3. तुम्ह····उच्छह (उज्जम)
4. ता····खेल (सय)
5. त····मर (कुल्ल)
6. अम्ह····चिराव (ऊतर)
7. तुम्ह····थक्क (घुम)
8. ता····कंद (मुच्छ)
9. अम्ह····हरिस (कील)
10. त····कलह (लज्ज)

उदाहरण—

ते णच्चवि थक्किअ/थक्किआ ।

(घ) निम्नलिखित भूतकालिक कृदन्तों की मूलक्रिया, लिंग, वचन एवं प्रत्यय लिखिए—

1. हसिअ
2. विअसिअइं
3. उट्ठिअउ
4. ठाअओ
5. बिहिआउ
6. थंभिअओ
7. लग्गिआ
8. चुक्किआ
9. कुद्दिउ
10. सुक्किअओ
11. खेलिआइं
12. उवसमिआओ
13. गलिअ
14. नस्सिअइं
15. हरिसिआ
16. णच्चिअ
17. जीविअउ
18. अच्छिआइं

19. लुक्किआओ	20. जग्गिअउ	21. जागरिआ
22. होअइं	23. सयिअ	24. ऊतरिअओ
25. जुज्झिअइं	26. घुमिअ	27 डरिआइं
28. उज्जमिआ	29. लज्जिअउ	30. भिडिआउ

उदाहरण —

	मूलक्रिया	लिंग	वचन	प्रत्यय
1. हसिअ	हस	पु./नपु./स्त्री.	एकवचन	अ
2. विअसिअइं	विअस	नपुंसकलिंग	बहुवचन	अ

अभ्यास-19

(क-1) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1 हस 2. डर

3. सय 4. णच्च

5. रूस 6. लज्ज

उदाहरण—

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
हस	हसन्त	हसन्त/हसन्ता/हसन्तु/हसन्तो
	हसमाण	हसमाण/हसमाणा/हसमाणु/हसमाणो

(क-2) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस 2. णच्च

3. खय 4. जल

5. सोह 6. उवसम

उदाहरण —

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
हस	हसन्त	हसन्त/हसन्ता
	हसमाण	हसमाण/हसमाणा

नोट—इस अभ्यास-19 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 42 का अध्ययन करें।

(क–3) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. वड्ढ
2. विग्रस
3. गुंज
4. कुद्द
5. जागर
6. ऊतर

उदाहरण—

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
वड्ढ	वड्ढन्त	वड्ढन्त/वड्ढन्ता/वड्ढन्तु
	वड्ढमाण	वड्ढमाण/वड्ढमाणा/वड्ढमाणु

(क–4) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. विग्रस
2. हो
3. थंभ
4. तुट्ट
5. उड्ड
6. डर

उदाहरण—

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
विग्रस	विग्रसन्त	विग्रसन्त/विग्रसन्ता/विग्रसन्तइं/विग्रसन्ताइं
	विग्रसमाण	विग्रसमाण/विग्रसमाणा/विग्रसमाणइं/विग्रसमाणाइं

(क–5) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. णच्च
2. उट्ठ

3. लज्ज		4. हस

5. भिड		6. रुव

उदाहरण—

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	आकारान्त-रूप	आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
णच्च	णच्चन्त	णच्चन्ता	णच्चन्ता/णच्चन्त
		णच्चमाणा	णच्चमाणा/णच्चमाण

(क–6) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. सय		2. जग्ग

3. बिह		4. थंभ

5. चेट्ठ		6. हरिस

उदाहरण—

क्रिया	कृदन्त	आकारान्त-रूप	आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
सय	सयन्त	सयन्ता	सयन्ता/सयन्त/सयन्ताउ/सयन्तउ/सयन्ताओ/सयन्तओ।
	सयमाण	सयमाणा	सयमाणा/सयमाण/सयमाणाउ/सयमाणउ/सयमाणाओ/सयमाणओ

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। कर्ता के लिंग व वचन के अनुरूप (पुल्लिंग व नपुंसकलिंग में अकारान्त तथा स्त्रीलिंग में आकारान्त संज्ञाओं के) प्रत्ययों से वर्तमान कृदन्त बनाकर उसके सभी विकल्प लिखिए—

1. पुत्र शरमाता हुआ बैठता है। 2. कुत्ता भौंकता हुआ भागता है। 3. राक्षस

कांपते हुए बैठते हैं। 4. बालक डरता हुआ रोता है। 5. अग्नि जलती हुई नष्ट होती है। 6. ऊँट नाचते हुए थकते हैं। 7. सदाचार बढ़ता हुआ खिलता है। 8. लकड़ियां जलती हुई नष्ट होती हैं। 9. वैराग्य बढ़ता हुआ शोभता है। 10. माता उत्साहित होती हुई बैठती है। 11. प्रतिष्ठा बढ़ती हुई शोभती है। 12. महिलाएं अफसोस करती हुई घूमती हैं। 13. श्रद्धा बढ़ती हुई शोभती है। 14. कर्म गलते हुए छूटते हैं। 15. वह शरमाता हुआ छिपता है। 16 मैं खेलता हुआ खुश होता हूँ। 17. तुम नाचते हुए थकते हो। 18. वे सब रोते हुए लड़ते हैं। 19. हम सब खेलते हुए खुश होते हैं। 20. तुम सब कलह करती हुई लड़ती हो। 21. मनुष्य हँसता हुए जीवे। 22. पिता खुश होता हुआ प्रयास करे। 23. बालक उत्साहित होते हुए खेलें। 24. महिलाएं उत्साहित होती हुई प्रयत्न करें। 25. कन्या शान्त होती हुई बैठे। 26 तुम प्रसन्न होते हुए खेलो। 27. मैं खुश होते हुए नाचूं। 28. तुम सब हँसते हुए बैठो। 29. हम सब भागते हुए खेलें। 30. सत्य सिद्ध होता हुआ शोभेगा। 31. शिक्षा बढ़ती हुई फैलेगी। 32. कन्याएं नाचती हुई थकेंगी। 33. रत्न गिरते हुए टूटेंगे। 34. मनुष्य प्रयास करते हुए कूदेंगे। 35. पोता बैठता हुआ मुड़ेगा। 36. राक्षस कूदते हुए मरेंगे। 37. मैं हँसती हुई जीवूंगी। 38. तुम कूदते हुए थकोगे। 39. वह प्रसन्न होती हुई नाचेगी। 40. हम सब प्रयास करते हुए जागेंगे। 41. वे सब शान्त होती हुई बैठेंगी। 42. तुम सब डरते हुए छिपोगे। 43. घी टपकता हुआ गिरा। 44. दादा प्रयास करता हुआ बैठा। 45. मित्र प्रयत्न करता हुआ प्रसन्न हुआ। 46 पोते लड़ते हुए कांपे। 47. पुत्र गिड़गिड़ाता हुआ बैठा। 48. पानी टपकता हुआ सूखा। 49. राक्षस छटपटाता हुआ मरा। 50. नागरिक लोभ करता हुआ जीया। 51. पुत्री प्रसन्न होती हुई उठी। 52 घास जलता हुआ नष्ट हुआ। 53. मैं खेलता हुआ प्रसन्न हुआ। 54. वह डरती हुई रोयी। 55. तुम अफसोस करते हुए बैठे। 56. वे सब रुकते हुए नीचे उतरे। 57. वे सब शान्त होती हुई बैठीं। 58. हम सब कूदते हुए थके।

उदाहरण—

पुत्र शरमाता हुआ बैठता है=पुत्त/पुत्ता/पुत्तु/पुत्तो लज्जन्त/लज्जन्ता/लज्जन्तु/लज्जन्तो अच्छइ/अच्छेइ/अच्छए।

(ग–1) नीचे दिये गये संज्ञा–सर्वनामों का (कर्ता–रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल का प्रयोग कर वाक्य बनाइए —

1. करह ··· (णच्च, थक्क)
2. वेरग्ग···· (वड्ढ, सोह)
3. झुंपडा ··· (पड, नस्स)
4. ता····· (डर, पला)
5. अम्ह···· (कील, हरिस)
6 तुम्ह···· (उच्छह, चेट्ठ)

उदाहरण —

करह/करहा/करहु/करहो णच्चन्त/णच्चन्ता/णच्चन्तु/णच्चन्तो थक्कइ/थक्केइ/थक्कए ।

(ग–2) नीचे दिये गये संज्ञा–सर्वनामों का (कर्ता–रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा का प्रयोग कर वाक्य बनाइए—

1. रज्ज····· (वड्ढ, पसर)
2. महिला····· (उच्छह, चेट्ठ)
3. बालअ···· (उच्छह, खेल)
4. तुम्ह···· (हस, अच्छ)
5. अम्ह ·· (पला, खेल)
6. त ·· (उवसम, बइस)

उदाहरण—

रज्ज/रज्जा/रज्जु वड्ढन्त/वड्ढन्ता/वड्ढन्तु पसरउ/पसरेउ ।

(ग–3) नीचे दिये गये संज्ञा–सर्वनामों का (कर्ता–रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल का प्रयोग कर वाक्य बनाइए—

1. सच्च····· (सिज्झ, सोह)
2. रक्खस····· (कुल्ल, मर)

3. कन्ना····(णच्च, थक्क)　　4. ता····(उवसम, अच्छ)

5. तुम्ह····(डर, लुक्क)　　6. अम्ह····(चेट्ठ, जागर)

उदाहरण—

सच्च/सच्चा/सच्चु सिज्झन्त/सिज्झन्ता/सिज्झन्तु सोहेसइ/सोहेसए/सोहिहिइ/सोहिहिए ।

(ग–4) नीचे दिये गये संज्ञा–सर्वनामों का (कर्ता–रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में भूतकाल के भाव को प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कर वाक्य बनाइए—

1. पोत्त····(जुज्झ, कंप)　　2. पुत्त ···(गडयड, बइस)

3. सुया····(हरिस, उट्ठ)　　4. ता····(डर, कंद)

5. तुम्ह ···(खिज्ज, उवविस)　　6. अम्ह ·· (कुद्द, थक्क)

उदाहरण—

पोत्त/पोत्ता/पोत्तु/पोत्तो कंपन्त/कंपन्ता/कंपन्तु/कंपन्तो जुज्झिअ/जुज्झिआ/जुज्झिउ/जुज्झिओ ।

(घ) निम्नलिखित वर्तमान कृदन्तों की मूलक्रिया, लिंग, वचन एवं प्रत्यय लिखिए —

1. हसन्त	2. विअसमाण	3. वड्ढन्तइं
4. कुद्दन्ताउ	5. रमन्तओ	6. गुंजमाणु
7. चिट्ठन्तु	8. चिरावमाणा	9. फुरन्ता
10. छुट्टन्तो	11. जागरन्त	12. घटमाणो
13. थंभमाणइं	14. ऊतरन्ताइं	15. खासन्ता

16. गडयडमाणइं 17. लज्जमाणु 18. डरन्तु

19. उट्ठन्ता 20. थक्कन्ताइं

उदाहरण—

	मूलक्रिया	लिंग	वचन	प्रत्यय
हसन्त	हस	स्त्री./पु./नपु.	एकव./बहुव.	न्त

अभ्यास–20

(क–1) निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. नरिंद	2. करह	3. दिवायर
4. मित्त	5. परमेसर	6. गंथ
7. रक्खस	8. जणेर	9. मेह

उदाहरण—

अका. पु. सं.	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
नरिंद	नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं

(क–2) निम्नलिखित अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. कमल	2. रज्ज	3. पोट्टल
4. खेत्त	5. वत्थ	6. कम्म
7. लक्कुड	8. णद्दं	9. णाण

उदाहरण—

अका. नपु. सं.	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
कमल	कमलें/कमलेण/कमलेणं	कमलहिं/कमलाहिं/कमलेहिं

(क–3) निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

नोट—इस अभ्यास–20 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 44 का अध्ययन कीजिए।

1. ससा	2. माया	3. जरा
4. कहा	5. कन्ना	6. झुंपडा
7. महिला	8. परिक्खा	9. सोहा

उदाहरण—

आका. स्त्री. सं.	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
ससा	ससाए/ससए	ससाहिं/ससहिं

(क–4) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. अम्ह	2. तुम्ह
3. त	4. ता

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त बनाइए। उनके नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन के रूप लिखिए —

1. हस	2. लज्ज	3. थक्क
4. पड	5. घुम	6. उच्छल
7. खेल	8. कुल्ल	9. जुज्झ
10. सय	11. बिह	12. पसर

उदाहरण —

क्रिया	भूतकालिक कृदन्त	नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन
हस	हसिअ/हसिय	हसिअ/हसिआ/हसिउ हसिय/हसिया/हसियु

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। वाक्यों को बनाने के लिए संज्ञा–सर्वनाम में वचनानुसार तृतीया एकवचन या बहुवचन का प्रयोग

कीजिए । भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का नपुंसक-लिंग प्रथमा एकवचन में प्रयोग कीजिए—

1. राजा द्वारा हँसा गया । 2. कुत्ते द्वारा भौंका गया । 3. नागरिक द्वारा जागा गया । 4. पोते द्वारा नाचा गया । 5. कन्या द्वारा नाचा गया । 6. मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ गया । 7. राक्षस द्वारा मरा गया । 8. परीक्षा द्वारा हुआ गया । 9. बेटी द्वारा खाँसा गया । 10. समुद्र द्वारा सूखा गया । 11. विमान द्वारा उड़ा गया । 12. गठरी द्वारा लुढ़का गया । 13. सिंह द्वारा गरजा गया । 14. माता द्वारा खुश हुआ गया । 15. पत्नी द्वारा डरा गया । 16. ऊँट द्वारा बैठा गया । 17. पुत्र द्वारा सोया गया । 18. वस्त्र द्वारा सूखा गया । 19. उसके द्वारा थका गया । 20. तुम्हारे द्वारा देर की गई । 21. मेरे द्वारा बैठा गया । 22. राजाओं द्वारा हँसा गया । 23. मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ गया । 24. राक्षसों द्वारा मरा गया । 25. बेटियों द्वारा खाँसा गया । 26. सिंहों द्वारा गरजा गया । 27. माताओं द्वारा खुश हुआ गया । 28. ऊँटों द्वारा बैठा गया । 29. पुत्रों द्वारा सोया गया । 30. कुत्तों द्वारा भौंका गया । 31. नागरिकों द्वारा जागा गया । 32. कन्याओं द्वारा नाचा गया । 33. समुद्रों द्वारा सूखा गया। 34. कुओं द्वारा सूखा गया । 35. रत्नों द्वारा शोभा गया । 36. राज्यों द्वारा लड़ा गया । 37. महिलाओं द्वारा शान्त हुआ गया । 38. विमानों द्वारा उड़ा गया । 39. कन्याओं द्वारा छिपा गया । 40. नागरिकों द्वारा अफसोस किया गया । 41. माताओं द्वारा प्रसन्न हुआ गया । 42. राजाओं द्वारा उपस्थित हुआ गया । 43. बालकों द्वारा खेला गया । 44. तुम सबके द्वारा डरा गया । 45. उनके द्वारा थका गया । 46. हमारे द्वारा बैठा गया । 47. तुम सबके द्वारा देर की गई । 48. उन स्त्रियों द्वारा सोया गया । 49. हमारे द्वारा घूमा गया ।

उदाहरण --

1. राजा द्वारा हँसा गया = नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं हसिअ/हसिआ/हसिउ ।

2. राजाओं द्वारा हँसा गया = नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं हसिआ/हसिआ/हसिउ ।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य में प्रयोग कीजिए। सभी विकल्प लिखिए —

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. मित्र प्रसन्न हुआ।	2. मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ गया।
3. राजा हँसा।	4. राजा द्वारा हँसा गया।
5. राक्षस कूदे।	6. राक्षसों द्वारा कूदा गया।
7. बेटी खाँसी।	8. बेटी द्वारा खाँसा गया।
9. पोते कूदे।	10. पोतों द्वारा कूदा गया।
11. माताएँ खुश हुई।	12. माताओं द्वारा खुश हुआ गया।
13. कुत्ता भौंका।	14. कुत्ते द्वारा भौंका गया।
15. पत्नी डरी।	16. पत्नियों द्वारा डरा गया।
17. पुत्र सोया।	18. पुत्रों द्वारा सोया गया।
19. नागरिक जागे।	20. नागरिक द्वारा जागा गया।
21. ऊँट बैठा।	22. ऊँट द्वारा बैठा गया।
23. पानी झरा।	24. पानी द्वारा झरा गया।
25. अपयश फैला।	26. अपयश द्वारा फैला गया।
27. अग्नि जली।	28. अग्नि द्वारा जला गया।
29. प्रतिष्ठा कम हुई।	30. प्रतिष्ठा द्वारा कम हुआ गया।
31. सुख गला।	32. सुख द्वारा गला गया।
33. विमान उड़ा।	34. विमान द्वारा उड़ा गया।
35 गठरी लुढ़की।	36. गठरी द्वारा लुढ़का गया।
37. वस्त्र सूखा।	38. वस्त्र द्वारा सूखा गया।
39. पुस्तक जली।	40. पुस्तक द्वारा जला गया।
41. कन्याएँ नाची।	42. कन्याओं द्वारा नाचा गया।
43. बादल गरजे।	44. बादलों द्वारा गरजा गया।

45. समुद्र सूखे ।

46. समुद्रों द्वारा सूखा गया ।

47. रत्न शोभे ।

48. रत्नों द्वारा शोभा गया ।

49. महिला शान्त हुई ।

50. महिलाओं द्वारा शान्त हुआ गया ।

उदाहरण—

कर्तृवाच्य—मित्र प्रसन्न हुआ=मित्त/मित्ता/मित्तु/मित्तो हरिसिअ/हरिसिआ/हरिसिउ/हरिसिओ ।

भाववाच्य—मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ गया=मित्तहिं/मित्ताहिं/मित्तेहिं हरिसिअ/हरिसिआ/हरिसिउ ।

अभ्यास-21

(क) **निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए –**

1. राजा हँसता है । 2. राजा हँसे। 3. राजा हँसेगा। 4. राजा हँसा। 5. राजा के द्वारा हँसा गया। 6. बालक बैठते हैं। 7. बालक बैठे। 8. बालक बैठेंगे। 9 बालक बैठा। 10. बालक द्वारा बैठा गया। 11. विमान उड़ता है। 12. विमान उड़े। 13. विमान उड़ेगा। 14. विमान उड़ा। 15. विमान द्वारा उड़ा गया। 16 नागरिक उपस्थित होते हैं। 17. नागरिक उपस्थित होवें। 18. नागरिक उपस्थित होंगे। 19. नागरिक उपस्थित हुए। 20 नागरिकों द्वारा उपस्थित हुआ गया। 21. माता प्रसन्न होती है। 22. माता प्रसन्न होवे। 23. माता प्रसन्न होवेगी। 24. माता प्रसन्न हुई। 25. माता के द्वारा प्रसन्न हुआ गया। 26. कन्याएँ छिपती हैं। 27. कन्याएँ छिपें। 28. कन्याएं छिपेंगी। 29. कन्याओं द्वारा छिपा गया। 30. वह जागता है। 31. वह जागे। 32. वह जागेगा। 33. वह जागा। 34. उसके द्वारा जागा गया। 35. तुम सब रुकते हो। 36. तुम सब रुको। 37. तुम सब रुकोगे। 38. तुम सब रुके। 39. तुम सबके द्वारा रुका गया 40. मैं ठहरती हूँ। 41. मैं ठहरूँ। 42. मैं ठहरूँगी। 43. मैं ठहरी। 44. मेरे द्वारा ठहरा गया। 45. वे सब उतरती हैं। 46. वे सब उतरें। 47. वे सब उतरेंगी। 48. वे सब उतरीं। 49. उन सब के द्वारा उतरा गया। 50. सीता सोने के लिए उठती है। 51. सीता सोने के लिए उठे। 52. सीता सोने के लिए उठेगी। 53. सीता सोने के लिए उठी। 54. सीता के द्वारा सोने के लिए उठा गया। 55. तुम नाचने के लिए उठते हो। 56. तुम नाचने के लिए उठो। 57. तुम नाचने के लिए उठोगे। 58. तुम नाचने के लिए उठे। 59. तुम्हारे द्वारा नाचने के लिए उठा गया।

उदाहरण—

राजा हँसता है=नरिंद/नरिंदा/नरिंदु/नरिंदो हसइ/हसेइ/हसए।

नोट—इस अभ्यास–21 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 44 तक दोहराएं।

(ख) निम्नलिखित संज्ञाओं एवं सर्वनामों के मूलशब्द, पुरुष, वचन, विभक्ति एवं लिंग लिखिये। संज्ञाओं के प्रत्यय भी लिखिए—

1. नरिंदु	2. पोत्तहिं	3. णरें
4. विमाणु	5. रज्जइं	6. वेरग्गा
7. कमलाउ	8. तणयाए	9. ससाहिं
10. गंगाओ	11. करहो	12. गंथेणं
13. रहुणन्दणेहिं	14. दिवायरु	15. कूव
16. णयरजणा	17. छिक्क	18. भोयणाहिं
19. कम्में	20. णाणेण	21. सो
22. तइ	23. ताउ	24. अम्हे
25. मइं	26. तुम्हेहिं	27. ता
28. तेण	29. ताहिं	30. अम्हइं

उदाहरण—

	मूलशब्द	पुरुष	वचन	विभक्ति	लिंग	प्रत्यय
नरिंदु	नरिंद	अन्यपुरुष	एकवचन	प्रथमा	पुल्लिग	उ

(ख) निम्नलिखित कृदन्तों के मूलक्रिया, प्रत्यय एवं नाम बताइए तथा जहां सम्भव हो वहां विभक्ति, वचन एवं लिंग भी बताइए—

1. हसिउ	2. णचन्त	3. जीविओ
4. रूसिआ	5. लुक्कन्तो	6. जग्गमाणो
7. सयिआ	8. लज्जिअइं	9. डरमाणइं
10. अच्छन्ता	11. पडन्ताउ	12. उट्ठन्तु
13. घुमन्ता	14. भिडिउ	15. णिज्झरिआ
16. जलन्त	17. सुक्कन्तइ	18. पसरमाणा
19. वुक्कमाणाइं	20. कंदन्ता	21. जलणहं

22. सोहणहिं	23. पसरिवि	24. कदेवि
25. तुट्टण	26. विग्रसेवं	27. हसणहं
28. फुरेविणु	29. णच्चि	30. जग्गेप्पि

उदाहरण—

	मूलक्रिया	प्रत्यय	विभक्ति	वचन	लिंग	कृदन्त
हसिउ	हस	इउ	—	—	—	संबंधक कृ.
हसिउ	हस	अ	प्रथमा	एकवचन	पु, नपु.	भूतका. कृ.
णच्चन्त	णच्च	न्त	प्रथमा	एकवचन	पु., नपु., स्त्री.	वर्तमान कृ.

अभ्यास-22

(क–1) निम्नलिखित क्रियाओं में 'अव्व' प्रत्यय लगाकर विधिकृदन्त बनाइये। उनके नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन के रूप लिखिए—

1. हस
2. लज्ज
3. कलह
4. अच्छ
5. घुम
6. चेट्ठ

उदाहरण—

क्रिया	विधि कृदन्त	विधि कृदन्त (परिवर्तनीय रूप) नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन
हस	हसिअव्व	हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु
	हसेअव्व	हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु

(क–2) निम्नलिखित क्रियाओं में 'इएव्वउं, एव्वउं, एवा' प्रत्यय लगाकर विधिकृदन्त बनाइए। (प्रयोग के लिए इनमें विभक्ति की आवश्यकता नहीं होती है)—

1. हस
2. उवसम
3. थंभ
4. कुद्द
5. जागर
6. थक्क

उदाहरण—

क्रिया	विधि कृदन्त (अपरिवर्तनीय रूप)
हस	हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा

नोट—इस अभ्यास-22 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 48 का अध्ययन कीजिए।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। इन वाक्यों को बनाने के लिए संज्ञा व सर्वनाम में तृतीया एकवचन/बहुवचन का, विधि के भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त के परिवर्तनीय तथा अपरिवर्तनीय रूपों का प्रयोग कीजिए—

1. राजा के द्वारा हँसा जाना चाहिए। 2. मित्र के द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए। 3. पुत्र द्वारा सोया जाना चाहिए। 4. राजाओं के द्वारा हँसा जाना चाहिए। 5. मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए। 6. पुत्रों के द्वारा सोया जाना चाहिए। 7. राज्य द्वारा लड़ा जाना चाहिए। 8. विमान द्वारा उड़ा जाना चाहिए। 9. राज्यों द्वारा लड़ा जाना चाहिए। 10. विमानों द्वारा उड़ा जाना चाहिए। 11. माता द्वारा खुश हुआ जाना चाहिए। 12. कन्या द्वारा छिपा जाना चाहिए। 13. माताओं द्वारा खुश हुआ जाना चाहिए। 14. कन्याओं द्वारा छिपा जाना चाहिए। 15. उसके द्वारा खेला जाना चाहिए। 16. तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए। 17 मेरे द्वारा प्रयत्न किया जाना चाहिए। 18. उसके (स्त्री) द्वारा नाचा जाना चाहिए। 19. हमारे द्वारा प्रयत्न किया जाना चाहिए। 20. उन सब के द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए।

उदाहरण—

राजा द्वारा हँसा जाना चाहिए=

नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेण (क) हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु
हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु।
(परिवर्तनीय रूप)

(ख) हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा।
(अपरिवर्तनीय रूप)

(ग) नीचे संज्ञा-सर्वनाम तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। क्रियाओं में विधि कृदन्त के परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए—

1. नरिंद (हस) 2. कमल (विअस)
3. ससा (जग्ग) 4. अम्ह (लुक्क)
5. पोत्त (कुल्ल) 6. विमाण (उड्ड)

7. माया (हरिस)　　8. तुम्ह (उज्जम)

9. ता (णच्च)　　10. रज्ज (जुज्झ)

उदाहरण—

कमलें/कमलेण/कमलेणं　(क) विम्रसिम्रव्व/विम्रसिम्रव्वा/विम्रसिम्रव्वु/
विम्रसेम्रव्व/विम्रसेम्रव्वा/विम्रसेम्रव्वु ।
(परिवर्तनीय रूप)

(ख) विम्रसिएव्वउं/विम्रसेव्वउं/विम्रसेवा ।
(अपरिवर्तनीय रूप)

(घ) निम्नलिखित विधिकृदन्तों की मूलक्रिया, वचन, विभक्ति, प्रत्यय एवं परिवर्तनीय/अपरिवर्तनीय रूप बताइए—

1. हसिम्रव्व	2. लज्जिएव्वउं	3. रुवेव्वउं
4. डरेम्रव्व	5. थक्किम्रव्वा	6. म्रच्छेवा
7. पडेम्रव्वु	8. उट्ठिम्रव्वु	9. घुमेम्रव्वा
10. उच्छलिम्रव्व	11. उज्जमिएव्वउं	12. कंपेव्वउं
13. मरेम्रव्व	14. खेलिम्रव्वा	15. कुल्लेवा
16. जुज्झेम्रव्वु	17. सयिम्रव्वु	18. णच्चेम्रव्वा
19. रूसिम्रव्व	20. लुक्किएव्वउं	19. विम्रसेव्वउं

उदाहरण

	मूलक्रिया	वचन	विभक्ति	प्रत्यय	परिवर्तनीय/अपरि. रूप
हसिम्रव्व	हस	एकवचन	प्रथमा	म्रव्व	परिवर्तनीय

अभ्यास-23

(क) निम्नलिखित क्रियाओं के भाववाच्य बनाइए। उनमें तीनों कालों के अन्यपुरुष एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस
2. णच्च
3. लुक्क
4. गल
5. हरिस
6. उल्लस

उदाहरण—

	भाववाच्य	वर्तमान	विधि	भविष्यत्काल
हस	हसिज्ज/हसिय	हसिज्जइ/हसियइ हसिज्जए/हसियए	हसिज्जउ/ हसियउ	हसेसइ/आदि

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। वाक्यों को बनाने के लिए संज्ञा व सर्वनाम में तृतीया एकवचन/बहुवचन का प्रयोग कीजिए। विभिन्न कालों को प्रकट करने के लिए क्रियाओं में भाववाच्य के प्रत्यय लगाने के पश्चात् अन्यपुरुष एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. राजा के द्वारा हँसा जाता है। 2. कमल के द्वारा खिला जाता है। 3. बहिन के द्वारा जागा जाता हैं। 4. मेरे द्वारा नाचा जाता है। 5. तुम्हारे द्वारा कूदा जाता है। 6. उसके द्वारा उठा जाता है। 7. उस (स्त्री) के द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। 8. राजाओं द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। 9. कमलों द्वारा खिला जाता है। 10. बहिनों द्वारा जागा जाता है। 11. हमारे द्वारा नाचा जाता है। 12. तुम सब के द्वारा कूदा जाता है। 13. उनके द्वारा उठा जाता है। 14. उन (स्त्रियों) के द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। 15. पुत्र के द्वारा खेला जाए। 16. नागरिक द्वारा उपस्थित हुआ जावे। 17. माता द्वारा बैठा जाए।

नोट – इस अभ्यास-23 को हल करने के लिए 'अपभ्रंश रचना सौरभ' के पाठ-46 का अध्ययन कीजिए।

18. मेरे द्वारा सोया जाए। 19. तुम्हारे द्वारा प्रयास किया जाए। 20. उसके द्वारा कूदा जाए। 21. उस (स्त्री) के द्वारा छिपा जाए। 22. पुत्रों के द्वारा खेला जाए। 23. नागरिकों द्वारा उपस्थित हुआ जाए। 24. माताओं द्वारा बैठा जाए। 25. हमारे द्वारा सोया जाए। 26 तुम दोनों के द्वारा प्रयास किया जाए। 27. उनके द्वारा कूदा जाए। 28. उन स्त्रियों के द्वारा कूदा जाए। 29. कुत्ते के द्वारा भौंका जायेगा। 30. विमान द्वारा उड़ा जायेगा। 31. कन्या के द्वारा लालच किया जायेगा। 32. उसके द्वारा उछला जायेगा। 33. उस स्त्री के द्वारा अफसोस किया जायेगा। 34. तुम्हारे द्वारा देर की जायेगी। 35. मेरे द्वारा नीचे आया जायेगा। 36. कुत्तों के द्वारा भौंका जायेगा। 37. विमानों द्वारा उड़ा जायेगा। 38. कन्याओं द्वारा लालच किया जायेगा। 39. उनके द्वारा उछला जायेगा। 40. हम सबके द्वारा नीचे आया जायेगा। 41. उन स्त्रियों के द्वारा अफसोस किया जायेगा। 42. तुम सब के द्वारा देर की जायेगी।

उदाहरण—

राजा के द्वारा हँसा जाता है=नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं हसिज्जइ/हसियइ/हसिज्जए/हसियए।

राजाओं द्वारा हँसा जाता है=नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं हसिज्जइ/हसियइ/हसिज्जए/हसियए।

(ग) **नीचे संज्ञाएँ, पुरुषवाचक सर्वनाम तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। संज्ञाओं व सर्वनामों में कहीं एकवचन, कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्टकाल में भाववाच्य के वाक्य बनाइए—**

1. नरिंद (हस) वर्तमानकाल
2. कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल
3. मित्त (हरिस) विधि एवं आज्ञा
4. सीह (गज्ज) विधि एवं आज्ञा
5. जणेर (अच्छ) विधि एवं आज्ञा
6. दिवायर (उग) भविष्यत्काल
7. कमल (विअस) वर्तमानकाल
8. सील (फुर) विधि एवं आज्ञा
9. रज्ज (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
10. विमाण (उड्ड) भविष्यत्काल

11. सीया (हस) वर्तमानकाल
12. ससा (जग्ग) वर्तमानकाल
13. माया (हरिस) विधि एवं आज्ञा
14. महिला (उवसम) विधि एवं आज्ञा
15. अम्ह (कुल्ल) वर्तमानकाल
16. अम्ह (खेल) वर्तमानकाल
17. तुम्ह (हरिस) विधि एवं आज्ञा
18. तुम्हे (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
19 त (उवविस) भविष्यत्काल
20. ता (णच्च) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—

नरिंदे/नरिंदेण/नरिंदेणं हसिज्जइ/हसियइ/हसिज्जए/हसियए ।

(ब) **निम्नलिखित भाववाच्यों की मूलक्रिया, पुरुष, वचन, प्रत्यय व काल लिखिए—**

1. हसिज्जइ
2. गलिज्जउ
3. खयेसइ
4. कीलिज्जइ
5. लोभिज्जउ
6. वसिहिए
7. कुल्लिज्जए
8. अच्छिज्जउ
9. रुविज्जए
10. भिडिहिइ

उदाहरण—

भाववाच्य	मूलक्रिया	पुरुष	वचन	प्रत्यय	काल
हसिज्जइ	हस	अन्यपुरुष	एकवचन	इज्ज	वर्तमान

अभ्यास-24

(क) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए । संज्ञाओं, क्रियाओं एवं कृदन्त-रूपों के प्रत्ययों के सभी विकल्प लिखिए । विधि एवं आज्ञा के भाववाच्य में क्रिया-रूपों एवं विधि कृदन्त दोनों का प्रयोग कीजिए—

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. बालक खेलते हैं ।	2. बालकों द्वारा खेला जाता है ।
3. बालक खेले ।	4. बालकों द्वारा खेला गया ।
5. बालक खेलें ।	6. बालकों द्वारा खेला जाए ।
7. बालक खेलेंगे ।	8. बालकों द्वारा खेला जायेगा ।
9 माता प्रसन्न होती है ।	10. माता द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है ।
11. माता प्रसन्न हुई ।	12. माता द्वारा प्रसन्न हुआ गया ।
13. माता प्रसन्न होवे ।	14. माता द्वारा प्रसन्न हुआ जावे ।
15. माता प्रसन्न होवेगी ।	16. माता द्वारा प्रसन्न हुआ जावेगा ।
17. मैं सोता हूँ ।	18. मेरे द्वारा सोया जाता है ।
19. मैं सोया ।	20. मेरे द्वारा सोया गया ।
21. मैं सोवूं ।	22. मेरे द्वारा सोया जावे ।
23. मैं सोउँगी ।	24. मेरे द्वारा सोया जायेगा ।

उदाहरण –

बालकों द्वारा खेला जाए = (i) बालग्रहिं/बालग्राहिं/बालएहिं खेलिज्जउ ।

(ii) बालग्रहिं/बालग्राहिं/बालएहिं (क) खेलिअव्व/खेलिअव्वा/खेलिअव्वु/ खेलेअव्व/खेलेअव्वा/खेलेअव्वु ।

(ख) खेलेवा/खेलेव्वउ/खेलिएव्वउ ।

नोट—इस अभ्यास-24 को हल करने के लिए 'अपभ्रंश रचना सौरभ' के पाठ 41 से 48 तक दोहराएं ।

(ख) **नीचे संज्ञाएँ, पुरुषवाचक सर्वनाम तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं । संज्ञाओं एवं सर्वनामों में कहीं एकवचन, कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्टकाल में कर्तृवाच्य एवं भाववाच्य दोनों में वाक्य बनाइए—**

1. विमाण (उड्ड) वर्तमानकाल
2. कन्ना (लुक्क) भूतकाल
3. रज्ज (जुज्झ) भविष्यत्काल
4. कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल
5. ता (णच्च) भूतकाल
6. सद्धा (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
7. माया (हरिस) विधि एवं आज्ञा
8. तुम्ह (थक्क) वर्तमानकाल
9. त (ण्हा) भूतकाल
10. सुआ (खेल) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—

1. विमाण/विमाणा/विमाणु उड्डइ/उड्डेइ/उड्डए । (कर्तृवाच्य)
2. विमाणें/विमाणेण/विमाणेणं उड्डिज्जइ/उड्डियइ । (भाववाच्य)

(ग) **निम्नलिखित वाक्य कर्तृवाच्य में दिए गए हैं । इनका भाववाच्य में परिवर्तन कीजिए—**

1. माउल/माउला/माउलु/माउलो उट्ठउ/उट्ठेउ ।
2. मित्त/मित्ता हरिसन्तु/हरिसेन्तु ।
3. णर/णरा उज्जमेसहिं/उज्जमेसन्ति/उज्जमिहिहिं/उज्जमिहिन्ति ।
4. लक्कुड/लक्कुडा/लक्कुडइं/लक्कुडाइं जलहिं/जलन्ति/जलन्ते/जलिरे ।
5. वत्थ/वत्था/वत्थइं/वत्थाइं सुक्किअ/सुक्किआ/सुक्किअइं/सुक्किआइं ।
6. हउं ठाउं/ठामि ।
7. तुहुं लुक्कहि/लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि ।
8. सो ण्हाइ ।
9. हउं णच्चमु/णच्चेमु ।
10. ता णच्चिआ/णच्चिअ/णच्चिआउ/णच्चिअउ/णच्चिआओ/णच्चिअओ ।

उदाहरण—

कर्तृवाच्य—माउल/माउलु/माउला/माउलो उट्ठउ/उट्ठेउ ।

भाववाच्य—(i) माउलें/माउलए/माउलेणं उट्ठिज्जउ/उट्ठियउ ।

(ii) माउलें/माउलेण/माउलेणं उट्ठिअव्व/उट्ठिअव्वा/उट्ठिअव्वु/
उट्ठेअव्व/उट्ठेअव्वा/उट्ठेअव्वु/
उट्ठेवा/उट्ठेव्वउं/उट्ठिएव्वउं ।

(घ) **निम्नलिखित वाक्य भाववाच्य में दिए गए हैं। इनका कर्तृवाच्य में परिवर्तन कीजिए—**

1. कुक्कुरें/कुक्कुरेण/कुक्कुरेणं बुक्किज्जइ/बुक्किज्जए/बुक्कियइ/बुक्कियए ।
2. पोत्तहिं/पोत्ताहिं/पोत्तेहिं सयिज्जइ/सयिज्जए/सययइ/सययए ।
3. णरहिं/णराहिं/णरेहिं उज्जमेसइ/उज्जमेसए/उज्जमिहिइ/उज्जमिहिए ।
4. मित्तहिं/मित्ताहिं/मित्तेहिं हरिसिअ/हरिसिआ/हरिसिउ ।
5. लक्कुडहिं/लक्कुडाहिं/लक्कुडेहिं जलिअ/जलिआ/जलिउ ।
6. पइं/तइं उट्ठिज्जइ/उट्ठिज्जए/उट्ठियइ/उट्ठियए ।
7. मइं कुल्लिज्जइ/कुल्लिज्जए/कुल्लियइ/कुल्लियए ।
8. पइ/तइं णच्चिज्जउ/णच्चियउ ।
9. तें/तेण/तेणं उवसमिज्जउ/उवसमियउ ।
10. मइं लुक्किअ/लुक्किआ/लुक्किउ ।

उदाहरण—

कुक्कुरें/कुक्कुरेण/कुक्कुरेणं बुक्किज्जइ/बुक्कियइ/बुक्कियए=कुक्कुर/कुक्कुरा/
कुक्कुरु/कुक्कुरो बुक्कइ/बुक्केइ/बुक्कए ।

अभ्यास-25

(क-1) निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. नरिंद	2. कुक्कुर	3. जलेर
4. णर	5. वय	6. मेह
7. रक्खस	8. सलिल	9. दिवायर
10. सीह	11. करह	12. माउल

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
नरिंद	नरिंद/नरिंदा/नरिंदु	नरिंद/नरिंदा

(क-2) निम्नलिखित अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. भोयण	2. विमाण	3. कम्म
4. णाण	5. सुत्त	6. वत्थ
7. खेत्त	8. सुह	9. णयरजण
10. रज्ज	11. असण	12. खीर

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
भोयण	भोयण/भोयणा/भोयणु	भोयण/भोयणा/भोयणइं/भोयणाइं

नोट—इस अभ्यास-25 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 50-51 का अध्ययन कीजिए।

(क–3) निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. माया	2. कमला	3. णम्मया
4. कहा	5. सरिआ	6. गुहा
7. कन्ना	8. पसंसा	9. निसा
10. सीया	11. तण्हा	12. मेहा

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
माया	माया/माय	माया/माय/मायाउ/मायउ/मायाओ/मायओ

(क-4) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. अम्ह	2. तुम्ह	3. त (पु)
4. त (नपु.)	5 ता (स्त्री)	

उदाहरण —

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
अम्ह	मइं	अम्हे/अम्हइं

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. राजा परमेश्वर को प्रणाम करता है। 2. ऊँट घास चरता है। 3 पुत्र माता को प्रणाम करता है। 4. तुम मुझको पालते हो। 5. पिता पुत्र की रक्षा करे। 6. राजा राज्यों को जाने। 7. पुत्री शिक्षा को समझे। 8. तुम मेरी रक्षा करते हो। 9. दादा पोते को पालेगा। 10. नागरिक गीत सुनेगा। 11. माता पुत्री की रक्षा करेगी। 12. वह उसको पालेगी। 13. राम परमेश्वरों को प्रणाम करता है। 14. शासन राज्यों को पालता है। 15. बहिनें कथाएं सुनती हैं।

16. वह हम सबकी रक्षा करती है। 17. राजा व्रतों को पाले। 18. पुत्र सुखों को समझे। 19. पुत्री शिक्षाओं को सुने। 20. तुम उन सबकी रक्षा करो। 21. वह तुमको जानती है। 22. सीता व्रतों को पालेगी। 23. वे मनुष्यों की रक्षा करेंगे। 24. ऊँट (विभिन्न प्रकार के) धानों को चरेंगे। 25. बेटी उन सबको प्रणाम करेगी। 26. पोता उन सबको प्रणाम करेगा। 27. वे हम सबको पालते हैं। 28. हनुमान राम को प्रणाम करता है। 29 हनुमान सीता की रक्षा करता है। 30. माता बेटियों की रक्षा करे। 31. राम हनुमान को समझता है। 32. ससुर (विभिन्न प्रकार के) भोजन खाता है। 33. दादा शास्त्रों को समझते हैं। 34. नागरिक रत्नों की रक्षा करें। 35. मित्र कथा सुनेगा। 36. दादा पोतों को पालेंगे। 37. नरेश नागरिकों को जानता है। 38. राज्य राजा की रक्षा करता है। 39. सीता कथा सुनेगी। 40. मैं तुमको प्रणाम करता हूँ। 41. राजा माता को प्रणाम करे। 42 परमेश्वर हम सबकी रक्षा करे। 43. पुत्री विभिन्न प्रकार के भोजन खायेगी। 44. सीता हनुमान को जानती है। 45. मेघ मनुष्यों को पालते हैं। 46. तुम दुःखों को जानो। 47. मैं उन सबको प्रणाम करूँ। 48. वे हम सबको जानते हैं। 49. राक्षस बच्चों को खाता है। 50 तुम उन सबकी रक्षा करो।

उदाहरण—

राजा परमेश्वर को प्रणाम करता है=नरिंद/नरिंदा/नरिंदु/नरिंदो परमेसर/परमेसरा/परमेसरु पणमइ/पणमेइ/पणमए।

(ग) नीचे संज्ञाएँ, पुरुषवाचक सर्वनाम तथा कोष्ठक में सकर्मक क्रियाएँ दी गई हैं। मध्य में दिए गए संज्ञाओं या सर्वनामों में द्वितीया एकवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट-कालों में वाक्य बनाइए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. करह, तिण (चर) वर्तमानकाल
2. सीया, हणुवन्त (जाण) वर्तमानकाल
3. अम्ह, त (पणम) विधि एवं आज्ञा
4. णयरजण, रयण (रक्ख) विधि एवं आज्ञा

5. पोत्त, त (पणम) भविष्यत्काल

6. मित्त, कहा (सुण) भविष्यत्काल

7. ससुर, भोयण (खा) वर्तमानकाल

8. त, अम्ह (जाण) वर्तमानकाल

9. तुम्ह, दुक्ख (जाण) विधि एवं आज्ञा

10. सुया, सिक्खा (सुण) विधि एवं आज्ञा

11. माया, वय (पाल) भविष्यत्काल

12. तणया, भोयण (खा) भविष्यत्काल

13. त, णर (रक्ख) भविष्यत्काल

14. ता, त (पाल) विधि एवं आज्ञा

15. अम्ह, तुम्ह (पणम) विधि एवं आज्ञा

16. नरिंद, परमेसर (पणम) विधि एवं आज्ञा

17. तुम्ह, अम्ह (जाण) भविष्यत्काल

18. बालअ, गाण (सुण) भविष्यत्काल

19. पुत्त, माया (पणम) वर्तमानकाल

20 जणेर, पुत्ता (रक्ख) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—

करह/करहा/करहु/करहो तिण/तिणा/तिणु चरइ/चरेइ/चरए ।

(घ) नीचे संज्ञाएँ व पुरुषवाचक सर्वनाम विभक्तिसहित दिये गये हैं। इनके मूलशब्द, लिंग, वचन एवं विभक्ति लिखिए। संज्ञाओं के प्रत्यय भी लिखिये—

1. माया	2. नरिंदु	3. भोयणा
4. अम्हइं	5. पइं	6. विमाणइं
7. ससाउ	8. करहा	9. मइं

10. सोक्खा	11. माउल	12. अहिलासाओ
13. ता	14. ताइ	15. पोत्तु
16. रज्जु	17. कमला	18. तं
19. त	20. हउं	21. अम्हइं

उदाहरण—

	मूलशब्द	लिंग	वचन	विभक्ति	प्रत्यय
माया	माया	स्त्रीलिंग	एकवचन, बहुवचन	प्रथमा, द्वितीया	शून्य

———

अभ्यास-26

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. मैं परमेश्वर की पूजा करती हूँ। 2. सदाचार अपयश को रोकता है। 3. तुम दूध चखो। 4. पत्नी वस्त्रों को धोयेगी। 5. कन्याएँ छोटे घड़े को उघाड़ती हैं। 6. हनुमान राम का उपकार करता है। 7. तुम भोजन चबाओ। 8. कुत्ते धान को उपाड़ते हैं। 9. मनुष्य व्यसन छोड़ें। 10. बहिनें धान पीसेंगी। 11. तृष्णा निद्रा को रोकती है। 12. जुआ मनुष्य को कलंकित करता है। 13. वह बीजों को चुने। 14. देवर सिंहों को देखेगा। 15. हम धान कूटते हैं। 16. दादा पोतों को बुलाता है। 17. तुम उनको पुकारो। 18. वे गठरी को काटेंगे। 19. वे दोनों खेत खोदते हैं। 20. महिलाएं व्रतों को धारेंगी। 21. बहिनें पुत्रियों को देखें। 22. हम गंगा का पूजन करेंगे। 23. तुम दोनो लकड़ी छीलते हो। 24. वे सब मदिरा छोड़ें। 25. पुत्रियां वस्त्र धोएं। 26 ननदें भोजन जीमती हैं। 27. राक्षस बच्चों को ठगते हैं। 28. बालक कमल को तोड़ता है। 29. राक्षस बच्चों को ठगेगा। 30. घी भोजन को स्निग्ध करता है। 31. मैं घी डालूंगा। 32. बहिनें नींद छोड़ें। 33. ससुर पत्नी की निन्दा करता है। 34. राजा रत्नों की खोज करता है। 35. तुम सब बादलों को देखो। 36. बेटी धागा तोड़ेगी। 37. नागरिक बालक को ठगता है। 38. मामा शस्त्रों को स्पर्श करता हैं। 39. प्रशंसा चित्त को छूती है। 40. वह सुख की खोज करे। 41. बालक विमान को देखते हैं। 42. तुम घी डालो। 43. दुःख सुख को रोकता हैं। 44. तुम जल को स्पर्श करो। 45. मैं जंगल को काटूंगा। 46. तुम सब भोजन जीमो। 47. भूख प्यास को रोकती है। 48. हम दोनों गड्ढे को खोदें। 49. माता पुत्र को स्पर्श करती है। 50. प्रज्ञा ज्ञान को प्रकट करती है। 51. वह वस्त्रों को फाड़ेगा। 52. राजा गर्व को छोड़े। 53. राक्षस कुत्ते को रोकेगा। 54. पुत्र घास काटे।

नोट—इस अभ्यास–26 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 52 का अध्ययन कीजए।

55. सत्य सदाचार को प्रकट करेगा। 56. पुत्र व्यसन छोड़े। 57. तुम सब मद्य को छोड़ो। 58. वह बीजों को पीसता है। 59. मैं कन्या को पुकारता हूँ। 60. महिला गड्ढे को ढकती है।

उदाहरण—

मैं परमेश्वर की पूजा करती हूँ=हउं परमेसर/परमेसरा/परमेसरु अच्चउं/
अच्चमि/अच्चामि/अच्चेमि ।

अभ्यास-27

(क–1) निम्नलिखित इकारान्त व ईकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. सामि
2. मुणि
3. केसरि
4. गिरि
5. रिसि
6. गामणी

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
सामि	प्रथमा	सामि/सामी	सामि/सामी
	द्वितीया	सामि/सामी	सामि/सामी
	तृतीया	सामिएं/सामीएं/सामिं/सामीं/ सामिण/सामीण/सामिणं/सामीणं	सामिहिं/सामीहिं

(क–2) निम्नलिखित इकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. दहि
2. अच्छि
3. अट्ठि
4. वारि

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
दहि	प्रथमा	दहि/दही	दहि/दही/दहिइं/दहीइं
	द्वितीया	दहि/दही	दहि/दही/दहिइं/दहीइं
	तृतीया	दहिं/दहीं/दहिएं/दहीएं/ दहिण/दहीण/दहिणं/दहीणं	दहिहिं/दहीहीं

नोट —इस अभ्यास–27 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 54–60 का अध्ययन कीजिए ।

(क–3) निम्नलिखित इकारान्त व ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिये—

1. भत्ति
2. रत्ति
3. थुइ
4. मणि
5. धिइ
6. सामिणी
7. इत्थी
8. परमेसरी
9. णारी
10. पुत्ती

उदाहरण —

		एकवचन	बहुवचन
भत्ति	प्रथमा	भत्ति/भत्ती	भत्ति/भत्ती/भत्तिउ/भत्तीउ/भत्तिओ/भत्तीओ
	द्वितीया	भत्ति/भत्ती	भत्ति/भत्ती/भत्तिउ/भत्तीउ/भत्तिओ/भत्तीओ
	तृतीया	भत्तिए/भत्तीए	भत्तिहिं/भत्तीहिं

(क–4) निम्नलिखित उकारान्त व ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1 जंतु
2. बिन्दु
3. मच्चु
4. सत्तु
5. रिउ
6. गुरु
7. खलपू
8. सयंभू

उदाहरण —

		एकवचन	बहुवचन
जंतु	प्रथमा	जंतु/जंतू	जंतु/जंतू
	द्वितीया	जंतु/जंतू	जंतु/जंतू
	तृतीया	जंतुएं/जंतूएं/जंतुं/जंतूं/ जंतुण/जंतूण/जंतुणं/जतूणं	जंतुहिं/जंतूहिं

(क-5) निम्नलिखित उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. महु
2. अंसु
3. वत्थु
4. जाणु
5. आउ

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
महु	प्रथमा	महु/महू	महु/महू/महुइं/महूइं
	द्वितीया	महु/महू	महु/महू/महुइं/महूइं
	तृतीया	महुं/महूं/महुएं/महूएं/ महुण/महूण/महुणं/महूणं	महुहिं/महूहिं

(क-6) निम्नलिखित उकारान्त व ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. धेणु
2. हणु
3. रज्जु
4. सस्सु
5. तणु
6. सासू
7. कण्डू
8. बहू
9. चमू
10. जंबू

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
धेणु	प्रथमा	धेणु/धेणू	धेणु/धेणू/धेणुउ/धेणूउ/धेणुओ/धेणूओ
	द्वितीया	धेणु/धेणू	धेणु/धेणू/धेणुउ/धेणूउ/धेणुओ/धेणूओ
	तृतीया	धेणुए/धेणूए	धेणुहिं/धेणूहिं

अभ्यास–28

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा व क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. मालिक प्रसन्न होता है। 2. मुनि बैठेंगे। 3. मन्त्री प्रयास करें। 4. शत्रु लड़ा। 5. गांव का मुखिया बैठता है। 6. दही टपकता है। 7. आंखें दुःखीं। 8. हड्डी सूखेगी। 9. जल झरे। 10. भक्ति बढ़े। 11. तृप्ति होवेगी। 12. रत्न गिरते हैं। 13. वैभव बढ़ा। 14. पुत्रियां खेलती हैं। 15. लक्ष्मी बढ़े। 16. स्त्रियां प्रयास करेंगी। 17. मौसी थकी। 18. साड़ी सूखती है। 19. बहिन नाची। 20. माता थकेगी। 21. दादी बैठे। 22. बूंदें गिरेंगी। 23. तेज खिले। 24. गुरु प्रसन्न होवे। 25. दुश्मन लड़ता है। 26. पिता हँसा। 27. मधु टपकता है। 28. आंसू झरेंगे। 29 घुटना थका। 30. आयु बढ़े। 31. पदार्थ सोहते हैं। 32. गायें भागती हैं। 33. चमची टूटी। 34. सास बैठे। 35. बहू प्रयत्न करती है।

उदाहरण—

मालिक प्रसन्न होता है=सामि/सामी हरिसइ/हरिसेइ/हरिसए।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा व क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. स्वामी भोजन जीमता है। 2. मुनि जल पीवें। 3. कवि व्रत पालेंगे। 4. गांव का मुखिया उन सबको लाड़-प्यार करता है। 5 आंखें मनुष्य को देखती हैं। 6. मैं दही खाऊँ। 7. कुत्ता हड्डियां चूसेगा। 8. मुनि जल पीते हैं। 9. मनुष्य भक्ति करें। 10. धरती रत्न पैदा करेगी। 11. माताएँ साड़ियां धोवेंगी। 12. बहिनें परमेश्वर को पूजें। 13. मनुष्य वैभव त्यागे। 14. मौसी पुत्री को लाड़-प्यार करती है। 15. पिता पुत्र की निंदा करता है। 16. साधु

नोट—इस अभ्यास–28 को हल करने के लिए '**अपभ्रंश रचना सौरभ**' के पाठ 54 व 58 का अध्ययन कीजिए।

गव छोड़े। 17. प्रभु तुम सब की रक्षा करेंगे। 18. रघु हम सबका उपकार करते हैं। 19 खलियान साफ करनेवाला गड्ढा खोदता है। 20. स्वयंभू राम को प्रणाम करता है। 21. पुत्र मधु खाता है। 22. पुत्र घुटने को स्पर्श करे। 23. तुम आंसुओं को रोको। 24. वह पदार्थों की खोज करेगा। 25. गाय जामुन के पेड़ को तोड़ती है। 26. बहू सास की सेवा करेगी। 27. सेना प्राणियों की हिंसा करेगी। 28. बहिन रस्सी चुराती है। 29. पुत्र वस्त्र मैला करता है। 30. हाथी जल पीवेगा।

उदाहरण—

स्वामी भोजन जीमता है=सामि/सामी भोवण/भोयणा/भोयणु जेमइ/जेमेइ/जेमए।

अभ्यास-29

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिये—

1. स्वामी मुझको बुलाता है। 2. स्वामी के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ। 3. मुनि हम सबको देखते हैं। 4. मुनि के द्वारा हम सब देखे जाते हैं। 5 दुश्मन तुमको मारेगा। 6. दुश्मन के द्वारा तुम मारे जाओगे। 7. राजा साधु को नमस्कार करे। 8. राजा के द्वारा साधु नमस्कार किया जावे। 9. तपस्वी कथा का व्याख्यान करेंगे। 10. तपस्वियों द्वारा कथा का व्याख्यान किया जावेगा। 11. भाई मुझको भूलता है। 12. भाई के द्वारा मैं भुलाया जाता हूँ। 13. सेनापति स्वामी को नमस्कार करे। 14. सेनापति के द्वारा स्वामी नमस्कार किया जावे। 15. माता धान कूटेगी। 16 माता के द्वारा धान कूटा जावेगा। 17. तुम मुझको पुकारते हो। 18. तुम्हारे द्वारा मैं पुकारी जाती हूँ। 19. हम सब तुमको स्मरण करेंगे। 20. हम सबके द्वारा तुम स्मरण किए जाओगे। 21. वह वैभव को त्यागे। 22. उसके द्वारा वैभव त्यागा जावे। 23. माताएँ पुत्रों को लाड़-प्यार करती हैं। 24. माताओं द्वारा पुत्र लाड़-प्यार किए जाते हैं। 25. सांप बालक को डसता है। 26. सांप द्वारा बालक डसा जाता है। 27. बहिन श्रमणी की सेवा करती है। 28. बहिन द्वारा श्रमणी की सेवा की जाती है। 29. वह उनकी स्तुति करता है। 30. उसके द्वारा वे स्तुति किए जाते हैं।

उदाहरण—

1. स्वामी मुझको बुलाता है=सामि/सामी मइं कोकइ/कोकेइ/कोकए।

2. स्वामी के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ=सामिएं/सामीएं/सामि/सामीं/सामिण/सामीण/सामिणं/सामीणं हउं कोकिज्जउं/कोक्किजमि/कोक्किज्जामि/कोक्किजेमि।

नोट—इस अभ्यास-29 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 53 व 54 का अध्ययन कीजिए।

(ख) नीचे प्रारम्भ में दिए गए संज्ञा–सर्वनामों का (कर्त्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा मध्य में दिए गए संज्ञा-सर्वनामों में द्वितीया एकवचन या बहुवचन का प्रयोग करते हुए कोष्ठक में दी गई सकर्मक क्रियाओं से निर्दिष्ट कालों में कर्तृवाच्य व कर्मवाच्य में वाक्य बनाइए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. भाइ ···· अम्ह (कोक) वर्तमानकाल
2. अम्ह ···· साहु (नम) भविष्यत्काल
3. कइ ···· गाण (गा) विधि एवं आज्ञा
4. मंति ···· नरवइ (नम) भविष्यत्काल
5. तुम्ह ···· त (थुण) विधि एवं आज्ञा
6. अरि ···· अम्ह (हण) वर्तमानकाल
7. अम्ह ···· तपस्सि (सुमर) वर्तमानकाल
8. तुम्ह ···· लक्कुड (रंग) विधि एवं आज्ञा
9. जामाउ ···· भोयण (खाद) भविष्यत्काल
10. पहु ···· अम्ह (पेच्छ) वर्तमानकाल

उदाहरण—

1. भाइ/भाई मइं कोकइ/कोकेइ/कोकए । कर्तृवाच्य
2. भाइं/भाईं/भाइएं/भाईएं/भाइण/भाईण/भाइणं/भाईणं हउं कोक्किज्जउं/कोक्कियउं । कर्मवाच्य

(ग) नीचे विभक्तिसहित संज्ञाएँ दी गई हैं। उनके मूलशब्द, लिंग, वचन, विभक्ति एवं प्रत्यय लिखिए—

1. सामिएं	2. कइहिं	3. वारिइं
4. अट्ठिण	5 भत्तिउ	6. भत्तिओ
7. तत्ति	8. लच्छीए	9. सत्तुहिं
10. पहू	11. साहू	12. महुहिं

13. वत्थुइं	14. अंसुएं	15. पुत्तिए
16. सस्सुउ	17 तणुए	18. चमूहिं
19. वाउं	20. बहिणीए	21. रहुणन्दणें

उदाहरण—

	मूलशब्द	लिंग	वचन	विभक्ति	प्रत्यय
सामीएं	सामि	पुल्लिग	एकवचन	तृतीया	एं

———

अभ्यास-30

(क–1) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम व कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. शत्रु द्वारा सेनापति मारा गया। 2. बालक के द्वारा वस्त्र फाड़े गए। 3. भाइयों द्वारा दूध पिया गया। 4 प्राणियों द्वारा कर्म बाँधे गए। 5. कवि द्वारा गाने गाए गए। 6. स्वामी द्वारा धागा काटा गया। 7. यति के द्वारा शिक्षा धारी गई। 8. ऋषियों द्वारा प्रज्ञा जानी गई। 9. नागरिक द्वारा भोजन खाया गया। 10. राम के द्वारा राक्षस मारे गए। 11. पुत्री के द्वारा लक्ष्मी चाही गई। 12. यति के द्वारा कथा कही गई। 13. मेरे द्वारा विमान देखे गए। 14. उसके द्वारा वैराग्य चाहा गया। 15. तुम्हारे द्वारा व्यसनों का वर्णन किया गया। 16. हमारे द्वारा पानी पिया गया। 17 उनके द्वारा दया उत्पन्न की गई। 18. उसके द्वारा आज्ञा पाली गई। 19. गुरु के द्वारा मुनि की स्तुति की गई। 20. दामाद द्वारा झोंपड़ी देखी गई।

उदाहरण—

शत्रु द्वारा सेनापति मारा गया=सत्तुं/सत्तूं/सत्तुएं/सत्तूएं/सत्तुण/सत्तूण/सत्तुणं/सत्तूणं सेणावइ/सेणावई हणिअ/हणिआ/हणिउ/हणिओ।

(क–4) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। विधि एवं आज्ञा का भाव प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम व कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. भाई के द्वारा पेड़ सींचा जाना चाहिए। 2. रघुपति के द्वारा साधु बुलाए जाने चाहिए। 3. कवियों के द्वारा गीत गाए जाने चाहिए। 4. हाथी द्वारा

नोट—इस अभ्यास–30 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 56 से 61 का अध्ययन कीजिए।

सिंह मारा जाना चाहिए। 5. ऋषि के द्वारा सूर्य की वन्दना की जानी चाहिए। 6. मेरे द्वारा दही खाया जाना चाहिए। 7. हमारे द्वारा जल पिया जाना चाहिए। 8. उनके द्वारा हड्डियां फेंकी जानी चाहिए। 9. तुम्हारे द्वारा पदार्थ सींचे जाने चाहिए। 10. उसके द्वारा आयु देखी जानी चाहिए। 11. तुम्हारे द्वारा वैभव प्राप्त किया जाना चाहिए। 12. उसके द्वारा तृप्ति मांगी जानी चाहिए। 13. पृथ्वी द्वारा रत्न धारण किए जाने चाहिए। 14. मौसी द्वारा साड़ियां खरीदी जानी चाहिए। 15. युवती द्वारा भक्ति की जानी चाहिए। 16. तुम्हारे द्वारा रस्सी गूंथी जानी चाहिए। 17. उसके द्वारा गाएं पाली जानी चाहिए। 18. हमारे द्वारा जामुन का पेड़ सींचा जाना चाहिए। 19. सासुओं द्वारा बहुएँ लाड़-प्यार की जानी चाहिए। 20. तुम्हारे द्वारा घास जलाई जानी चाहिए।

उदाहरण—

भाई के द्वारा पेड़ सींचा जाना चाहिए=भाइं/भाईं/भाइएं/भाईएं/भाइण/भाईण/भाइणं/भाईणं तरु सिंचिअव्व/सिंचिअव्वा/सिंचिअव्वु/सिंचिअव्वो/सिंचेवा/सिंचेव्वउ/सिंचिएव्वउं।

(ख–1) नीचे संज्ञाएं तथा कोष्ठक में सकर्मक क्रियाएँ दी गई हैं। मध्य में दी गई संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग करते हुए कर्मवाच्य में भूतकाल के वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिये—

1. रहुणन्दण ·· रक्खस (हण)
2. सामि····भोयण (खाद)
3. कइ··· वय (पाल)
4. ससा ···तुम्ह (लड्ड)
5. मित्त····अम्ह (वद्धाव)
6. भाइ ·· अम्ह (पुक्कर)
7. त····घण (मग्ग)
8. अम्ह····त (णिरक्ख)
9. तुम्ह····अम्ह (बंध)
10. मुणि····तुम्ह (पेस)

उदाहरण—

रहुणन्दणें/रहुणन्दणेण/रहुणन्दणेणं रक्खस/रक्खसा हणिअ/हणिआ।

(ख–2) नीचे संज्ञाएँ तथा कोष्ठक में क्रियाएँ दी गई हैं। मध्य में दी गई संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग करते हुए कर्मवाच्य में विधि के वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—

1. रहुवइ····साहु (कोक)
2. त····लक्कुड (रंध)
3. अम्ह····दुक्ख (मुल)
4. महेली ····परमेसर (थुण)
5. जोगि····आगम (पढ)
6. तवस्सि····अम्ह (सुमर)
7. तुम्ह····रज्जु (गुंथ)
8. त··· अम्ह (लहु)
9. अम्ह····वारि (पिब)
10. रिसि····दिवायर (वंद)

उदाहरण—

रहुवइएं साहू कोकिअव्व/कोकिअव्वा/कोकिअव्वु/कोकिअव्वो।

(ग) नीचे संज्ञाएँ व कृदन्त विभक्तिसहित दिए गए हैं। इनके मूलशब्द, लिंग, वचन, विभक्ति, प्रत्यय लिखिए। कृदन्त का नाम भी लिखिए—

1. कोकिओ
2. देखिअ
3. सुणिआउ
4. कीणिअव्वु
5. रक्खिअव्वा
6. लभिएव्वउं
7. झाएअव्वा
8. पिबिअव्व
9. गणेअव्वइं
10. पेच्छेव्वउं
11. धारिअ
12. पालिआइ
13. पेसिउ
14. धारेव्वउं
15. चक्खिअव्वाओ
16. माणिएव्वउं
17. बहुउ
18. घेणुओ
19. सामिएं
20. मुणिहिं
21. गामणीहिं
22. साहूं
23. विमाणइं
24. सीलेसु

25. अच्छिण	26. गुरुहिं	27. पुत्तो
28. बुज्झिअव्वा	29. गणिएव्वउं	30. सामिहिं

उदाहरण—

	मूलशब्द	लिंग	वचन	विभक्ति	प्रत्यय	कृदन्त नाम
कोकिओ	कोक	पुल्लिग	एकवचन	प्रथमा	'ओ'	भूतका. कृ.

अभ्यास-31

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, कृदन्त व क्रिया-रूपों का एक विकल्प लिखिए—

1. स्वामी रघुपति को नमन करते हुए उठता है। 2. वह गांव के मुखिया की सेवा करता हुआ थकेगा। 3 वे दोनों मधु को चखते हुए लालच करते हैं। 4. सिंह बालक को खाते हुए मारना है। 5. माता पुत्री को लाड़-प्यार करती हुई खुश होवेगी। 6. पुत्री गीत गाती हुई नाचे। 7. पिता खेत को सींचता हुआ थकेगा। 8. तुम ईश्वर की स्तुति करते हुए वन्दना करो। 9. बहिन पुत्र को मारती हुई अफसोस करती है। 10. वह पुत्र को भेजती हुई रोती है। 11. हम सब परमेश्वर की स्तुति करने के लिए उठें। 12. तुम तृप्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करोगे। 13. पिता पुत्री को कहने के लिए उत्साहित होता है। 14. वे सब रस्सी बांधने के लिए प्रयत्न करें। 15. महिला गाय को देखने के लिए उठती है। 16. वह वस्तु खरीदने के लिए जावेगी। 17. सेनापति शत्रु को मारने के लिए भागता है। 18. दादा पोते को बधाई देने के लिए जाता है। 19. तुम कथा सुनने के लिए उठो। 20. मैं भोजन को चबाने के लिए प्रयत्न करती हूँ। 21. स्वामी रघुपति को नमन करके प्रसन्न होता है। 22. कवि गुरु को प्रणाम करके बैठता है। 23. तुम भक्ति करके जाओ। 24. तुम तृप्ति प्राप्त करके खुश होवोगे। 25. वे गायों को देखकर उठते हैं। 26. ऋषि परमेश्वर की वन्दना करके ध्यान करते हैं। 27. भाई रत्न चोरकर भागता है। 28. राजा परमेश्वर को स्मरण करके सोवे। 29. राक्षस बालक को पीड़ा देकर उछलता है। 30. पुत्र रस्सी को टुकड़े कर फेंकता है।

उदाहरण—

स्वामी रघुपति को नमन करते हुए उठता है=सामि रहुवइ वन्दन्तो उट्ठइ।

नोट—इस अभ्यास-31 को हल करने के लिए 'अपभ्रंश रचना सौरभ' के पाठ-63 का अध्ययन कीजिए।

अभ्यास-32

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति के सभी विकल्प लिखिए—**

1. मेरा पुत्र सुख चाहता है। 2. राजा का पुत्र राम को प्रणाम करेगा। 3. पुत्र का सुख पिता का सुख होता है। 4. तुम्हारी माता कथा सुने। 5. मेरी पुत्री सुख चाहेगी। 6. स्वामी का भाई परमेश्वर की वन्दना करेगा। 7. तुम नर्मदा का पानी पीओ। 8. मेरे गुरु परमेश्वर का ध्यान करते हैं। 9 राजाओं के दुश्मन युद्ध करने के लिए विचार करते हैं। 10. मेरी मौसियां साड़ी खरीदती हैं। 11. उनकी पुत्रियां प्रसन्न होती हैं। 12. मेरी ननद उसका वर्णन करती है। 13. वह कवि के गीत को स्मरण करता है। 14. मामा की बहन कथा सुने। 15. मेरा मित्र उसके लिए गठरी मांगे। 16 भाई का शत्रु पुत्र को मारेगा। 17. उसकी आंखें दुःखती हैं। 18. मौसी का पुत्र बहिन के लिए पुस्तक खरीदे। 19. राजा का पुत्र तपस्वी की सेवा करता है। 20 भाई की पुत्री ईश्वर की स्तुति करे। 21. सेनापति की बहिन मामा के लिए मधु भेजेगी। 22. मामा की बेटी वैभव के लिए परमेश्वर की पूजा करती है। 23. तुम्हारा पुत्र आत्मा के लाभ के लिए प्रयत्न करे। 24. तुम साधु के लिए भोजन खरीदो। 25. दादी पोते के लिए भोजन बनाती है। 26. उसकी बहिन छिपे। 27. ननद की बेटी सोयेगी। 28. मौसी का बेटा उसका उपकार करेगा। 29. तुम्हारा पुत्र मेरे पुत्र को क्षमा करे। 30. तुम्हारे भाई मुनियों की गिनती करेंगे। 31. प्रभु तुम्हारे पुत्र की रक्षा करे। 32. जामुन का पेड़ बढ़ता है। 33. वह हाथी के लिए खड्डा खोदता है। 34. सास उसकी बहू को लाड़-प्यार करती है। 35. वह तृप्ति के लिए भोजन खाता है। 36. तुम प्राणियों के लिए वस्त्र प्राप्त करो। 37. मन्त्री का पुत्र राजा को नमस्कार करे। 38. राम का सुख मेरा सुख है। 39. सीता की माता कथा सुनेगी। 40. राज्य का शासन उसकी रक्षा करेगा। 41. स्वामियों के भाई उसको नमस्कार करते हैं। 42. कवियों के गुरु

नोट—इस अभ्यास–32 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 65 से 68 का अध्ययन कीजिए।

हमको देखते हैं। 43. उसके गुरु भोजन जीमते हैं। 44. वह उसकी पुस्तक परीक्षा के लिए पढ़ता है। 45. मेरा पुत्र सुख के लिए हँसेगा। 46. राजा का पुत्र राम के लिए गठरी मांगे। 47. वह शरीर के लिए नर्मदा का पानी पीता है। 48. उसकी माता तुमको पालेगी। 49. मैं गंगा की कथा सुनूंगा। 50. उसका पुत्र घर जावे।

उदाहरण—

मेरा पुत्र सुख चाहता है=महु/मज्झु पुत्तो सुहु/सोक्खु इच्छइ।

अभ्यास–33

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त पंचमी विभक्ति के सभी विकल्प लिखिए—

1 बालक सर्प से डरता है। 2. खेत से अन्न उत्पन्न होता है। 3. वह गाय से डरेगा। 4. जामुन के पेड़ से गठरी गिरती है। 5. पुत्र सिंह से डरकर भागेगा। 6. पहाड़ से बालक गिरता है। 7. पर्वत से गगा नीचे आती है। 8. वह मुझसे डरे। 9. वह तुझसे पुस्तक पढ़ेगा। 10. बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है। 11. पुत्र पिता से छिपता है। 12. हम सब पिताओं से डरते हैं। 13. वे सब युवतियों से छिपते हैं। 14. वे सब स्वामी से डरते हैं। 15. तुम साधु स पढ़ो। 16. वृक्ष से पत्ता उत्पन्न होता है। 17. तुम सब राजा से डरो। 18. बच्चे हाथी से डरते हैं। 19. मन्त्री राजा से डरता है। 20. छोटे कलश से पानी निकलता है। 21. मामा सर्प से डरेगा।

उदाहरण—

बालक सर्प से डरता है=बालअ सप्पहे/सप्पहु डरइ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त सप्तमी विभक्ति के सभी विकल्प लिखिए—

1. आकाश में बादल गरजते हैं। 2. नर्मदा में पानी सूखेगा। 3. सीता घर में कथा सुनती है। 4. वह पोटली पर बैठता है। 5. बुढ़ापे में वाणी थकेगी। 6. राम के राज्य में लक्ष्मी बढ़ती है। 7. उसकी माता घर में पुत्र को पालती है। 8. तुम हँसकर घर में नाचो। 9. वह परीक्षा में मूच्छित होती है। 10. तुम गाय को खेत में बांधो। 11. पुत्रियां आकाश में चन्द्रमा को देखेंगी। 12. वे सब खेत में पदार्थ फेंकती हैं। 13. तुम नहाने के लिए समुद्र में कूदो. 14 कुत्ता जगल में खड्डा खोदता है। 15. सर्प पेड़ पर डोलता है। 16. पिता घर में परमेश्वर

नोट—इस अभ्यास–33 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 70 से 76 का अध्ययन कीजिए।

की स्तुति गाता है। 17. मामा सायंकाल में लक्ष्मी की वन्दना करता है। 18. वह यमुना में नहाता है। 19. पदार्थ झोंपडी में जलकर नष्ट होंगे। 20. उसका चित्त घर में लगता है।

उदाहरण—

आकाश में बादल गरजते हैं=णहि/णहे मेहा गज्जहिं।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त सम्बोधन के सभी विकल्प लिखिए—

1. हे स्वामी! आप हमारी रक्षा करें। 2. हे राजा! आपके राज्य में सुख होवे। 3. हे मित्र! तुम मेरे घर पर आओ। 4. हे माता! तुम बालकों को पालो। 5. हे सीता! जंगल में दुःख होगा। 6. हे पुत्र! सत्य बोलो। 7. हे युवती! तुम हँसो। 8. बालको! तुम सब पुस्तक पढ़ो। 9. मित्रो! आप सब राज्य से डरो। 10. साधुओ! संयम पालो।

उदाहरण

हे स्वामी! आप हमारी रक्षा करें=सामि तुहुं अम्हइं रक्खि/रक्खे/रक्खु/रक्खहि/रक्खेहि/रक्ख/रक्खसु/रक्खेसु।

अभ्यास-34

(क) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए। क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप बनाकर वाक्य बनाइए—

1. वह आकाश में विमान उड़ाता है। 2. राजा राज्यों में शासन फैलावे। 3. मनुष्य घास उगाता है। 4. सेनापति सेना को छिपावेगा। 5. तुम बुढ़ापे में वैराग्य बढ़ावो। 6. साधु मनुष्य को जगाता है। 7. माता पुत्री को नचाने के के लिए रुकाती है। 8. वह मुझको हँसाती है। 9. मैं उसको जगाता हूँ। 10. तुम उसको छिपाते हो। 11. वे उन सबको नचाते हैं। 12. नागरिक खेत में धान उगाते हैं। 13. राक्षस बच्चे को मरवाता है। 14. मौसी पुत्री को समुद्र में कुदाती है। 15 दादी पोते को नहलाती है। 16. मामा बेटी को ठहराता है। 17. पिता पुत्री को सुलावे। 18. राक्षस बालको को डराते हैं। 19. दादी बालकों को खिलाती है। 20. साधु राजा को बैठाता है।

उदाहरण—

वह आकाश में विमान उड़ाता है=सो णहि/णहे विमाणु ओडुइ/उड्डावइ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए। कर्मवाच्य के प्रेरणार्थक जोड़कर वाक्य बनाइए—

1. उसके द्वारा आकाश में विमान उड़ाया जाता है। 2. राजाओं द्वारा राज्य में शासन फैलाया जाता है। 3. उसके द्वारा घास उगाया जाता है। 4. सेनापति द्वारा सेना छिपाई जाती है। 5. तुम्हारे द्वारा बुढ़ापे में वैराग्य बढ़ाया जाता है। 5. साधु द्वारा मनुष्य जिलाया जाता है। 7. माता द्वारा पुत्री नचाई जाती है। 8. उसके द्वारा मैं हँसाया जाता हूँ। 9 मेरे द्वारा वह जगाया जाता है। 10. तुम्हारे द्वारा वह छिपाया जाता है। 11. उनके द्वारा वे सब

नोट—इस अभ्यास–34 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 77 का अध्ययन कीजए।

नचाये जाते हैं। 12. नागरिक द्वारा खेत में धान उगाया जाता है। 13. राक्षस द्वारा बच्चा मरवाया जाता है। 14. मामा द्वारा बेटी ठहराई जाती है। 15. दादा द्वारा पोता नहलाया जाता है। 16. पिता द्वारा पुत्र खिलाया जाता है। 17. राक्षसों द्वारा बच्चा उठाया जाता है। 18. दादा द्वारा बालक हँसाया जाता है। 19. साधु द्वारा राजा बैठाया जाता है। 20. मौसी द्वारा वह समुद्र में डुबाया जाता है।

उदाहरण—

उसके द्वारा आकाश में विमान उड़ाया जाता है=तेण णहि विमाण/विमाणा/विमाणु उड्डाविज्जइ।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्तरूपों का कोई एक विकल्प लिखिए—

1. मेरे द्वारा वह हँसाया गया। 2. तुम्हारे द्वारा मैं छिपाया गया। 3. पिता द्वारा पुत्र दिखाया गया। 4. मौसी द्वारा पुत्री नचाई गई। 5. हमारे द्वारा पदार्थ खरीदवाये गए। 6. वह उसको हँसाते हुए खेलता है। 7. तुम दुश्मन को भगाते हुए थकते हो। 8. पुत्र मुझको डराते हुए छिपता है। 9. बालक बहिन को रुलाते हुए भागता है। 10. मामा माता को ठहराते हुए प्रसन्न होता है 11. तुम्हारे द्वारा वह हँसाया जाना चाहिए। 12. गुरु के द्वारा शिक्षा फैलाई जानी चाहिए। 13. बहिन द्वारा तपा जाना चाहिए। 14. योगी द्वारा ध्यान कराया जाना चाहिए। 15. उसके द्वारा पदार्थ रखवाया जाना चाहिए। 16. तुम हँसाकर जीते हो। 17. माता पुत्री को नचाकर प्रसन्न होती है। 18. मुनि मनुष्यों को ध्यान कराकर बैठता है। 19. वह जगाकर भागती है। 20. वे सब खिलाकर प्रसन्न होते हैं। 21. वह उसको हँसाने के लिए जागता है। 22. वह उसको भगाने के लिए कहता है। 23. योगी ध्यान कराने के लिए बैठता है। 24. माता पुत्री को नचाने के लिए उठती है। 25. दादी पोते को सुलाने के लिए प्रयत्न करती है। 26. वह हँसाया जाता हुआ खेलता है। 27. तुम भगाये जाते हुए थकते हो। 28. पुत्र डराया जाता हुआ छिपता है।

29. बालक रुलाया जाता हुआ भागता है। 30. मामा ठहराया जाता हुआ प्रसन्न होता है।

उदाहरण—

मेरे द्वारा वह हँसाया गया=मइं सो हसाविअ/हसाविआ/हसाविउ/हसाविओ।

अभ्यास-35

(क) संज्ञाओं में स्वार्थिक प्रत्यय जोड़कर निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. कमल खिलता है। 2. जीव प्रसन्न होता है। 3. योगी मुझको अच्छा लगता है। 4. पुत्र पिता का सम्मान करेगा। 5. सेनापति शत्रु को जीते। 6. बालक मधु चखता है। 7. आत्मा मन को प्रकाशित करती है। 8. राजा मन्त्री को धिक्कारता है। 9. माता पुत्र को लाड़-प्यार करती है। 10. पिता पुत्र को स्मरण करता है। 11. हाथी घास खावेगा। 12. मनुष्य गुरु की स्तुति करते हैं। 13. गुरु परमेश्वर की वन्दना करते हैं। 14. दामाद भोजन जीमे। 15 वृक्ष गिरता है। 16 धनुष सोहता है। 17. रत्न टूटता है। 18. घर अच्छा लगता है। 19. मौसी बैठे। 20. बहिन उठे।

उदाहरण—

कमल खिलता है=कमलअ/कमलडअ/कमलड विअसइ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए —

1. यह मनुष्य हँसता है। 2. ये मनुष्य हँसते हैं। 3. वह यह ग्रन्थ पढ़ता है। 4. वे ये ग्रन्थ पढ़ते हैं। 5. मैं इसके लिए जीता हूँ। 6. वह इनके लिए जीती है। 7. मैं यह व्रत पालता हूँ। 8. तुम क्या करते हो ? 9. जो मनुष्य थकता है वह सोता है। 10. जिसके द्वारा सोया जाता है, उसके द्वारा हँसा जाता है। 11. जिसका शरीर थका हुआ है, उसका बुढ़ापा बढ़ा हुआ है। 12. मैं जिसको बुलाता हूँ, वह तुम हो। 13. जिस लकड़ी पर तुम बैठे हो, वह मेरी है। 14. वह किसका पुत्र है ? 15. तुम किन कार्यों को करते हो ? 16. कौन नाचता है ? 17. वह किससे पानी पीता है ? 18 तुम किसके लिए जीते हो ? 19. तुम किस राज्य की रक्षा करते हो ? 20. किस घर में वह रहता है ?

नोट—इस अभ्यास-35 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश रचना सौरभ'** के पाठ 78 से 80 का अध्ययन कीजिए।

उदाहरण—

यह मनुष्य हँसता है=एहो णर हसइ ।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए । अव्ययों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए—

1. जब तक तुम पढ़ोगे तब तक मैं तुमको लाड़-प्यार करूँगा । 2. जब तक तुम जागते हो तब तक मैं चित्र देखता हूँ । 3. जहां तुम्हारा गांव है, वहां मेरा घर है । 4. जहां भी तुम जाओगे वहां प्रसन्न होओगे । 5. जिस प्रकार वह सुख चाहता है, उसी प्रकार मैं सुख चाहता हूँ । 6. जिस प्रकार तुम खेलते हो उसी प्रकार मैं खेलूंगा । 7. मन्त्री कहां रहता है । 8. वे सब कहां सोते हैं ? 9. मैं यहां सोता हूँ । 10. आज यहां मुनि आयेंगे । 11. तुम मत कूदो । 12. बालक नहीं उठता है । 13. माता नहीं थकती है । 14. यदि तुम कहते हो तो मैं गांव जाता हूँ । 15. यदि तुम कहोगे तो मैं खाना खाऊँगा । 16. जिस प्रकार तुम मन लगाकर खेलते हो उसी प्रकार पढ़ो भी । 17. जिस प्रकार मां पुत्र को पालती है उसी प्रकार राजा राज्य को पालता है । 18. जैसे तुम गाते हो वैसे नाचो भी । 19. तुम इस प्रकार मत बैठो । 20. तुम मद्य मत पीओ । 21. शत्रु लड़ा इसलिए मरा 22 जब तक वह सत्य बोलता है तब तक वह प्रसन्न होता है । 23. तुम पुत्र के बिना घर मत जाओ । 24. तुम भी नाचो वह भी नाचेगा ।

उदाहरण—

जब तक तुम पढ़ोगे तब तक मैं तुमको लाड़-प्यार करूँगा=जाम तुहुं पढेसहि ताम हउं पइं लड्डेसउं ।

अभ्यास-36

अनियमित कर्मवाच्य के क्रिया-रूप

(अपभ्रंश में) सकर्मक क्रिया में 'इज्ज' या 'इय' प्रत्यय लगाकर जो रूप बनाया जाता है वह कर्मवाच्य का **नियमित** क्रिया-रूप कहा जाता है। जैसे—'कर' क्रिया में 'इज्ज' या 'इय' प्रत्यय लगाकर बनाया गया—'कर+इज्ज=करिज्ज' 'कर+इय=करिय' रूप कर्मवाच्य का **नियमित** रूप है[1]। काल, पुरुष और वचन का प्रत्यय जोड़ने पर उस काल, पुरुष और वचन में कर्मवाच्य का **नियमित** क्रिया-रूप बन जायेगा। जैसे—करिज्जइ या करियइ=वर्तमानकाल अन्य पुरुष एकवचन।

इसके विपरीत सकर्मक क्रिया में बिना 'इज्ज' या 'इय' प्रत्यय लगाए जो रूप **तैयार मिलता है**, जिसमें काल, पुरुष और वचन का प्रत्यय लगा रहता है, वह कर्मवाच्य का **अनियमित** क्रिया-रूप कहा जाता है। जैसे—

1. **कीरइ, दीसइ** आदि—अनियमित कर्मवाच्य का क्रिया-रूप (वर्तमानकाल, अन्य पुरुष, एकवचन)
2. **थुव्वहि, वुच्चहि** आदि - अनियमित कर्मवाच्य का क्रिया-रूप (वर्तमानकाल, मध्यम पुरुष एकवचन)

इनमें क्रिया को अलग नहीं किया जा सकता है। इनका ज्ञान साहित्य में उपलब्ध प्रयोगों के आधार से किया जाना चाहिए। अनियमित कर्मवाच्य के कुछ क्रियारूप संग्रहीत हैं—

वर्तमानकाल अन्य पुरुष एकवचन

1. **आढप्पइ**= आरम्भ किया जाता है।
2. **कीरइ**= किया जाता है।
3. **खम्मइ** = खोदा जाता है।
4. **गम्मइ**= जाया जाता है।
5. **घेप्पइ** = ग्रहण किया जाता है।
6. **चिम्मइ**=इकट्ठा किया जाता है।
7. **चिव्वइ** = इकट्ठा किया जाता है।
8. **छिप्पइ**= छुआ जाता है।

---

1. 'अपभ्रंश रचना सौरभ' पाठ 53।

9. जिव्वइ = जीता जाता है ।
10. डज्झइ = जलाया जाता है ।
11. णज्जइ = जाना जाता है ।
12. णव्वइ = जाना जाता है ।
13. थुव्वइ = स्तुति की जाती है ।
14. दुब्भइ = दूहा जाता है ।
15. दीसइ = देखा जाता है ।
16. पुव्वइ = पवित्र किया जाता है ।
17. बज्झइ = बांधा जाता है ।
18. भण्णइ = कहा जाता है ।
19. भुज्जइ = भोगा जाता है ।
20. रुब्भइ = रोका जाता है ।
21. रुव्वइ = रोया जाता है ।
22. लब्भइ = प्राप्त किया जाता है ।
23. लुच्चइ = काटा जाता है ।
24. लुव्वइ = काटा जाता है ।
25. लिब्भइ = चाटा जाता है ।
26. वुच्चइ = कहा जाता है ।
27. विलिप्पइ = लीपा जाता है ।
28. विढप्पइ = उपार्जन किया जाता है।
29. सीसइ = कहा जाता है ।
30. संपज्जइ = प्राप्त किया जाता है ।
31. सुव्वइ = सुना जाता है ।
32. सिप्पइ = सींचा जाता है ।
33. हम्मइ = मारा जाता है ।
34. हीरइ = हरण किया जाता है ।

वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन

1. थुव्वहि = स्तुति किए जाते हो ।
2. दीसहि = दिखाई देते हो ।
3. धुव्वहि = पंखा किए जाते हो ।
4. वुच्चहि = कहे जाते हो ।
5. सुव्वहि = सुने जाते हो ।

(क) निम्नलिखित कर्मवाच्य के वाक्यों का अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए। अनुवाद में कर्मवाच्य के अनियमित क्रियारूपों का प्रयोग कीजिए—

1. मेरे द्वारा स्तुति आरम्भ की जाती है। 2. उस महिला के द्वारा व्रत किया जाता है। 3. दोनों भाइयों के द्वारा गड्ढा खोदा जाता है। 4. कन्याओं द्वारा गीत सुना जाता है। 5. हमारे द्वारा गुरु से शिक्षा ग्रहण की जाती है। 6. सेनापति द्वारा धन इकट्ठा किया जाता है। 7. बालक के द्वारा समुद्र का जल डरते हुए छुआ जाता है। 8. राजा के द्वारा गांव जीता जाता है। 9. उनके द्वारा मेरा घर जलाया जाता है। 10. योगियों द्वारा संसार का दुःख जाना जाता है। 11. बहिन द्वारा भोजन करने के लिए घर जाया जाता है। 12. मुनियों द्वारा आगम जाना जाता है। 13. माता द्वारा पुत्र की अभिलाषा जानी जाती है। 14. महिलाओं द्वारा मुनि की स्तुति की जाती है। 15. उसके द्वारा गाय दूही जाती है। 16. राजा के द्वारा राज्य की शोभा देखी जाती है। 17. योगियों द्वारा मेरा घर पवित्र किया जाता है। 18. मेरे द्वारा रस्सी से गाय बांधी जाती है। 19. श्रमणी के द्वारा व्रत की विधि कही जाती है। 20. राजाओं के द्वारा वैभव भोगा जाता है। 21. माता के द्वारा भागता हुआ पुत्र रोका जाता है। 22. दुःख के कारण मौसी के द्वारा रोया जाता है। 23. प्रयास करते हुए मामा द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। 24. उसके द्वारा जामुन का वृक्ष काटा जाता है। 25. बालक के द्वारा मधु चाटा जाता है। 26. महिला के द्वारा वस्त्र काटा जाता है। 27. तुम्हारे द्वारा धन प्राप्त किया जाता है। 28. साधु द्वारा कथा कही जाती है। 29. महिला के द्वारा झोंपड़ी लीपी जाती है। 30. पुत्र के द्वारा धन उपार्जन किया जाता है। 31. मुनि के द्वारा संसार का दुःख कहा जाता है। 32. स्वामिनी के द्वारा रत्न प्राप्त किया जाता है। 33. तुम्हारी पुत्री के द्वारा प्रशंसा की जाती है। 34. पुत्री के द्वारा जल से वृक्ष सींचा जाता है। 35. सेनापति के द्वारा शत्रु मारा जाता है। 36. मन्त्री द्वारा राजा का पुत्र हरण किया जाता है। 37. हे परमेश्वर! मनुष्यों द्वारा आप स्तुति किए जाते हो। 38. मेरे द्वारा तुम प्रसन्न होते हुए दिखाई देते हो। 39. सास के द्वारा तुम स्नेहपूर्वक पंखा किए

जाते हो । 40. उनके द्वारा तुम कहे जाते हो । 41. राजा के द्वारा तुम सुने जाते हो ।

उदाहरण—

मेरे द्वारा स्तुति आरम्भ की जाती है=मइं थुइ आढप्पइ ।

अभ्यास-37

अनियमित भूतकालिक कृदन्त

अपभ्रंश में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए क्रिया में 'अ' या 'य' प्रत्यय जोड़े जाते हैं[1]। जैसे—

हस + अ/य = हसिअ/हसिय = हँसा,

ठा + अ/य = ठाअ/ठाय = ठहरा,

झा + अ/य = झाअ/झाय = ध्यान किया गया आदि।

इस प्रकार 'अ' या 'य' प्रत्यय के योग से बने भूतकालिक कृदन्त 'नियमित भूतकालिक कृदन्त' कहलाते हैं। इनमें मूलक्रिया को प्रत्यय से अलग करके स्पष्टतः समझा जा सकता है। इन कृदन्तों के रूप पुल्लिग में 'देव' के समान, नपुंसकलिंग में 'कमल' के समान तथा स्त्रीलिंग में 'कहा' के समान चलेंगे।

किन्तु जब 'अ' या 'य' प्रत्यय जोड़े बिना ही भूतकालिक कृदन्त प्राप्त हो जाए या तैयार मिले तो वे अनियमित भूतकालिक कृदन्त कहलाते हैं। इनमें मूलक्रिया को प्रत्यय से अलग करके स्पष्टतः नहीं समझा जा सकता है। जैसे—

वुत्त = कहा गया,

दिट्ठ = देखा गया,

दिण्ण = दिया गया आदि।

ये सभी अनियमित भूतकालिक कृदन्त हैं इनमें से क्रिया को अलग नहीं किया जा सकता है। इनके रूप भी पुल्लिग में 'देव' के समान, नपुंसकलिंग में 'कमल' के समान तथा स्त्रीलिंग में 'कहा' के समान चलेंगे।

सकर्मक क्रियाओं से बने हुए भूतकालिक कृदन्त (नियमित या अनियमित) कर्मवाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं। केवल गत्यार्थक क्रियाओं से बने भूतकालिक कृदन्त (नियमित या अनियमित) कर्मवाच्य और कर्तृवाच्य दोनों में प्रयुक्त होते हैं। अकर्मक

---

1. 'अपभ्रंश रचना सौरभ' पाठ 41 व 56।

क्रियाओं से बने हुए भूतकालिक कृदन्त (नियमित या अनियमित) कर्तृवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। अनियमित भूतकालिक कृदन्तों का ज्ञान साहित्य में उपलब्ध उदाहरणों के आधार से किया जाना चाहिए। यहाँ अनियमित भूतकालिक कृदन्त के विभक्तिरहित प्रयोग संग्रहीत हैं—

1. सकर्मक क्रियाओं से बने अनियमित भूतकालिक कृदन्त—

	कृदन्त	कर्मवाच्य में अर्थ	प्रयोग
1.	दिट्ठ	देखा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
2.	संपुण्ण	पूर्ण कर दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
3.	खद्ध	खा लिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनो में
4.	दिण्ण	दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
5.	णिहिय	रक्खा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
6.	पवन्न	प्राप्त किया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
7.	छुद्ध	डाल दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
8.	दड्ढ	जलाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
9.	वुत्त	कहा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
10.	दुम्मिय	कष्ट पहुंचाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
11.	किअ	किया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
12.	लुअ	काट दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों मे
13.	हय	मारा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
14.	णीअ	ले जाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में

2. गत्यार्थक अनियमित भूतकालिक कृदन्त—

	कृदन्त	कर्तृवाच्य में अर्थ	प्रयोग	कर्मवाच्य में अर्थ	प्रयोग
1.	गय/गअ	गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	जाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में

2. **पत्त**	पहुंचा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	पहुंचा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में

3. **अकर्मक क्रियाओं से बने अनियमित भूतकालिक कृदन्त—**

कृदन्त	कर्तृवाच्य में अर्थ	प्रयोग	भाववाच्य में अर्थ	प्रयोग
1. **मुअ**	मरा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	मरा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
2. **थिअ**	ठहरा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	ठहरा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
3. **संतुट्ठ**	प्रसन्न हुआ	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	प्रसन्न हुआ गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
4. **नट्ठ**	नष्ट हुआ	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	नष्ट हुआ गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
5. **सुत्त**	सोया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	सोया गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
6. **बद्ध**	बंधा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	बंधा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
7. **भीय**	डरा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	डरा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में

1.क **सकर्मक क्रिया से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्त का सभी विकल्पोंसहित प्रयोग—**

कर्मवाच्य में प्रयोग

किअ=किया गया

(1) मामा के द्वारा गर्व किया गया।

—माउलें/माउलेण/माउलेणं गव्व/गव्वा/गव्वु/गव्वो **किअ/किआ/किउ/किओ।**

(2) बहिन के द्वारा व्रत किए गए ।
—ससाए/ससए वय/वया **किअ/किआ** ।

(3) राजा के द्वारा शासन किया गया ।
—नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं सासण/सासणा/सासणु **किअ/किआ/किउ** ।

(4) मालिक के द्वारा विभिन्न कर्म किए गए ।
—सामिएं/सामीएं/सामि/सामीं/सामिण/सामीण/सामिणं/सामीणं कम्म/कम्मा/कम्मइ/कम्माइं **किअ/किआ/किअइं/किआइं** ।

(5) गुरु के द्वारा परीक्षा की गई ।
—गुरुएं/गुरूएं/गुरुं/गुरूं/गुरुण/गुरूण/गुरुणं/गुरूणं परिक्खा/परिक्ख **किआ/किअ** ।

(6) युवती के द्वारा अभिलाषाएँ की गईं ।
—जुवइए/जुवईए अहिलासा/अहिलास/अहिलासाउ/अहिलासउ/अहिलासाओ/अहिलासओ **किआ/किअ/किआउ/किअउ/किआओ/किअओ** ।

2 क गत्यार्थक क्रिया से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्त का सभी विकल्पों-सहित प्रयोग—

कर्तृवाच्य में प्रयोग

गय/गअ=गया

(1) पुत्र घर आ गया ।
—पुत्त/पुत्ता/पुत्तु/पुत्तो घर/घरा/घरु **गय/गया/गयु/गयो/गअ/गआ/गउ/गओ** ।

(2) पोते घर गये ।
—पोत/पोत्ता घर/घरा/घरु **गय/गया/गअ/गआ** ।

(3) विमान जंगल गया ।
—विमाण/विमाणा/विमाणु वण/वणा/वणु **गय/गया/गयु/गअ/गआ/गउ** ।

(4) नागरिक घर गये ।

—णयरजण/णयरजणा/णयरजणइं/णयरजणाइं घर/घरा/घरु **गय/गया/गयइं/गयाइं/गअ/गआ/गअइं/गआइं** ।

(5) कन्या घर गई ।

— कन्ना/कन्न घर/घरा/घरु **गया/गय/गआ/गअ** ।

(6) पुत्रियां घर गईं ।

—सुया/सुय/सुयाउ/सुयउ/सुयाओ/सुयओ घर/घरा/घरु **गया/गय/गयाउ/गयउ/गयाओ/गयओ/गआ/गअ/गआउ/गअउ/गआओ/गअओ** ।

2.ख काव्य में गत्यार्थक क्रिया के कर्मवाच्य के प्रयोग बहुत कम मिलते हैं । अतः यहां एक ही उदाहरण दिया जा रहा है—

कर्मवाच्य में प्रयोग

(1) पुत्र के द्वारा घर जाया गया ।

—पुत्तें/पुत्तेण/पुत्तेणं घर/घरा/घरु/घरो **गय/गया/गयु/गयो/गअ/गआ/गउ/गओ** ।

3.क अकर्मक क्रिया से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्त का सभी विकल्पों-सहित प्रयोग—

कर्तृवाच्य में प्रयोग

मुअ=मरा

(1) शत्रु मरा ।

—सत्तु/सत्तू **मुअ/मुआ/मुउ/मुओ** ।

(2) शत्रु मरे ।

—सत्तु/सत्तू **मुअ/मुआ** ।

(3) नागरिक मरा ।

—णयरजण/णयरजणा/णयरजणु **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(4) नागरिक मरे ।

—णयरजण/णयरजणा/णयरजणइं/णयरजणाइं **मुअ/मुआ/मुअइं/मुआइं** ।

(5) पुत्री मरी ।
—सुया/सुय **मुआ/मुअ** ।

(6) बहिनें मरीं ।
—ससा/सस/ससाउ/ससउ/ससाओ/ससओ **मुआ/मुअ/मुआउ/मुअउ/मुआओ/मुअओ** ।

3.ख भाववाच्य में प्रयोग

मुअ=मरा गया

(1) शत्रु के द्वारा मरा गया ।
—सत्तुएं/सत्तूएं/सत्तुं/सत्तूं/सत्तुण/सत्तूण/सत्तुणं/सत्तूणं **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(2) शत्रुओं के द्वारा मरा गया ।
—सत्तुहिं/सत्तूहिं **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(3) नागरिक के द्वारा मरा गया ।
—णयरजणें/णयरजणेण/णयरजणेणं **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(4) नागरिकों के द्वारा मरा गया ।
—णयरजणहिं/णयरजणाहिं/णयरजणेहिं **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(5) पुत्री के द्वारा मरा गया ।
—सुयाए/सुयए **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(6) पुत्रियों के द्वारा मरा गया ।
—सुयाहिं/सुयहिं **मुअ/मुआ/मुउ** ।

(क) सकर्मक क्रियाओं से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्तों के सभी विकल्पों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. राजा द्वारा सेनापति के लिए हाथी दिया गया। 2. मुनि द्वारा पिता के लिए आगम दिए गए। 3. माता द्वारा पुत्री के लिए धन दिया गया। 4. माता द्वारा पुत्री के लिए वस्त्र दिए गए। 5. राजा द्वारा सेनापति के लिए मणि दी गई। 6. मालिक द्वारा भाई के लिए गायें दी गईं। 7. मामा के द्वारा घर में ग्रन्थ रखा गया। 8. हरि के द्वारा घर में आगम रखे गये। 9. दादा के द्वारा कलश में धन रखा गया। 10. दादी के द्वारा पोटलियां खेत में रखी गईं। 11. मौसी के द्वारा साड़ी पेड़ पर रखी गई। 12. महिलाओं के द्वारा कलश खेत में रखे गए। 13. तपस्वियों द्वारा जल प्राप्त किया गया। 14 मामा के द्वारा ग्रन्थ प्राप्त किए गए। 15. युवति के द्वारा भोजन प्राप्त किया गया। 16. बालकों द्वारा कमल प्राप्त किए गए। 17. राजा के द्वारा वैभव प्राप्त किया गया। 18. बहिन के द्वारा मणि प्राप्त की गई। 19 स्वामी के द्वारा धनुष पृथ्वी पर डाल दिया गया। 20 राजा के द्वारा समुद्र में रत्न डाल दिया गया। 21. महिला द्वारा धन कुवे में डाल दिया गया। 22. मनुष्यों द्वारा खेत में लकड़ियां डाल दी गईं। 23. मौसी द्वारा खेत में रस्सी डाल दी गई। 24. युवति द्वारा कलश में मणियां डाल दी गईं। 25. पुत्र के द्वारा वस्त्र जलाया गया। 26. मन्त्री के द्वारा घर जलाए गए। 27. मामा के द्वारा पोटली जलाई गई। 28. राजा के द्वारा राज्य जलाए गए। 29. पुत्री के द्वारा रस्सी जलाई गई। 30. शत्रुओं के द्वारा झोंपड़ियां जलाई गईं। 31. माता के द्वारा दुःख कहा गया। 32. मुनि के द्वारा आगम कहे गए। 33. मामा के द्वारा सत्य कहा गया। 34. बहिनों द्वारा सुख (विभिन्न) कहे गए। 35. पुत्री द्वारा कथा कही गई। 36. माता द्वारा कथाएं कही गईं। 37. राजा द्वारा मन्त्री कष्ट पहुंचाया गया। 38. दादा द्वारा पोते कष्ट पहुंचाए गए। 39. शत्रु द्वारा नागरिक कष्ट पहुंचाया गया। 40. मन्त्री द्वारा नागरिक कष्ट पहुंचाए गए। 41. बहिन द्वारा पुत्री कष्ट पहुंचायी गई। 42. बहिन द्वारा पुत्रियाँ कष्ट पहुंचायी गईं। 43. मामा द्वारा साँप देखा गया। 44 मामा द्वारा साँप देखे गए। 45. बालक द्वारा विमान देखा गया। 46. बालक द्वारा विमान देखे गए। 47. माता के द्वारा गुफा देखी गयी। 48. माता द्वारा गुफाएँ देखी गईं। 49. मुनि द्वारा विधि पूर्ण कर दी गई। 50. मुनियों द्वारा विधियां पूर्ण कर

दी गयीं। 51. मनुष्य द्वारा कर्म पूर्ण कर दिया गया। 52 मनुष्यों द्वारा कर्म पूर्ण कर दिए गए। 53. माता के द्वारा पुत्री की अभिलाषा पूर्ण कर दी गयी। 54. माता के द्वारा पुत्री की अभिलाषाएं पूर्ण कर दी गयीं। 55. सिंह के द्वारा गाय खा ली गयी। 56 सिंह के द्वारा गाये खा ली गयीं। 57. पुत्र के द्वारा जामुन खा लिया गया। 58. पुत्रों के द्वारा जामुन खा लिये गए। 59. पुत्री के द्वारा दही खा लिया गया। 60. कुत्ते के द्वारा हड्डियां खा ली गयीं। 61. मामा द्वारा पेड़ काट दिया गया। 62. मामाओं द्वारा पेड़ काट दिए गए। 63. पुत्र द्वारा कागज काट दिया गया। 64. पुत्र द्वारा कागज काट दिए गए। 65. सेनापति द्वारा शत्रु का घुटना काट दिया गया। 66. सेनापति द्वारा शत्रुओं के घुटने काट दिए गए। 67. राजा के द्वारा हाथी मारा गया। 68. राजा के द्वारा हाथी मारे गए। 69. सेनापति के द्वारा नागरिक मारा गया। 70. सेनापति के द्वारा नागरिक मारे गए। 71. शत्रु के द्वारा राजा की बहिन मारी गयी। 72. शत्रु द्वारा राजा की बहिनें मारी गयीं 73. मन्त्री के द्वारा पुत्र ले जाया गया। 74. मन्त्री के द्वारा पुत्र ले जाए गए। 75. राजा के द्वारा नागरिक ले जाया गया। 76. राजा के द्वारा नागरिक ले जाए गए। 77. मौसी के द्वारा पुत्री ले जायी गई। 78. मौसी के द्वारा पुत्रियां ले जायी गईं।

उदाहरण—

राजा द्वारा सेनापति के लिए हाथी दिया गया=नरिंदेण सेणावइ हत्थि दिण्ण।

(ख) गत्यार्थक क्रियाओं से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्तों के सभी विकल्पों-सहित निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. पुत्र घर गया। 2 पुत्र घर गए। 3. पुत्र द्वारा घर जाया गया। 4. माता खेत पहुँची। 5. माताएँ खेत पहुँची। 6. माता द्वारा खेत पहुंचा गया।

उदाहरण

पुत्र घर गया=पुत्त घर गय/गया/गयु/गयो/गअ/गआ/गउ/गओ।

(ग) अकर्मक क्रियाओं से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्तों के सभी विकल्पों-सहित निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. पुत्र प्रसन्न हुआ। 2. पुत्र प्रसन्न हुए। 3. नागरिक प्रसन्न हुआ। 4. नागरिक प्रसन्न हुए। 5. माता प्रसन्न हुई। 6. माताएं प्रसन्न हुईं। 7. गाँव नष्ट हुआ। 8. गांव नष्ट हुए। 9. विमान नष्ट हुआ। 10. विमान नष्ट हुए। 11. शत्रु मरा। 12 शत्रु मरे। 13. नागरिक मरा। 14. नागरिक मरे। 15. पुत्री मरी। 16. पुत्रियां मरीं। 17. मामा ठहरा। 18. मामा ठहरे। 19. नागरिक ठहरा। 20. नागरिक ठहरे। 21. स्त्री ठहरी। 22. स्त्रियाँ ठहरीं। 25. ऊँट सोया। 26. ऊँट सोये। 27. नागरिक सोया। 28. नागरिक सोये। 29. बहिन सोयी। 30. बहिनें सोयीं। 31. पोता डरा। 31. पोते डरे। 33. नागरिक डरा। 34. नागरिक डरे। 35 कन्या डरी। 36. कन्याएं डरीं। 37. शत्रु द्वारा मरा गया। 38. पुत्रियों द्वारा मरा गया। 39. शत्रुओ द्वारा मरा गया। 40. मामा द्वारा ठहरा गया। 41. स्त्रियों द्वारा ठहरा गया। 42. कर्मों द्वारा नष्ट हुआ गया। 43. बहिनों द्वारा सोया गया। 44. पोतों द्वारा डरा गया। 45. कन्या द्वारा डरा गया।

उदाहरण—

पुत्र प्रसन्न हुआ=पुत्त संतुट्ठ/संतुट्ठा/संतुट्ठु/संतुट्ठो।

अभ्यास-38

(क) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. हे पुत्र ! तू कहानी सुन । 2. नीच का साथ हृदय से छोड़ । 3. उसके द्वारा उच्च के साथ संग किया गया । 4. बनारस नगर में अरविन्द नामक राजा है । 5. वह अपने मन में सन्तोष धारण करता है । 6. वह एक दिन शिकार के लिए गया/जाता है । 7. राजा जलरहित जंगल में फंस गया । 8. भूख और प्यास सबको व्याकुल करती है । 9. वणिक के द्वारा अमृत से बने हुए फल दिए गए । 10. घर जाकर राजा ने उसको पुरस्कार दिया । 11. उच्च व्यक्ति के साथ संगति सुखकारी होती है । 12. वणिक सुन्दर नगर में रहता है। 13. उसने हृदय से नीच के संग को समझा । 14. उच्च के साथ संगति कर । 15. वह सम्पत्ति के लिए जीता है । 16. वे दोनों वहां अनुराग से रहते हैं । 17. राजा के द्वारा वणिक मन्त्री के पद पर रखा गया । 18. राजा वणिक पर सन्तुष्ट हुआ । 19. मन्त्री राजा के पुत्र का हरण करके भागा । 20. मेरे द्वारा राजा का पुत्र मारा गया है । 21. जो कोई भी राजा के पुत्र को बतायेगा, वह ही धन के साथ भूमि भी पायेगा । 22. मेरे द्वारा तुम्हारा पुत्र देखा गया । 23. वह तुम्हारे नये मन्त्री के द्वारा मारा गया है । 24. तब किसी ढीठ के द्वारा राजा के आगे शीघ्र कहा गया । 25. उसके वचन सुनकर सरलबाहु सन्तुष्ट हुआ । 26. मन्त्री के द्वारा तीन फल दिए गए । 27. राजा क्षण भर में प्रसन्न हुआ । 28. राजा के स्नेह को जानकार मन्त्री सन्तुष्ट हुआ । 29. उसके द्वारा राजा का पुत्र सौंप दिया गया । 30. हे राजा ! तुम्हारा चित्त मेरे द्वारा पहचान लिया गया है । 31. राजा के द्वारा पुरस्कार घोषित किया गया । 32. जो व्यक्ति बड़ों की संगति करता है वह इच्छित सम्पत्ति प्राप्त करता है । 33. करकंडु के द्वारा सभी कलाएं जान ली गयीं । 24. जो व्यक्ति नीति से व्यवहार करता है वह भूमण्डल को अवश्य ही भोग करता है । 35. उसने स्नेहपूर्वक कहा ।

नोट —इस अभ्यास-38 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ-12 का अध्ययन कीजिए ।

उदाहरण –

हे पुत्र ! तू कहानी सुन=पुत्तु तुहुं कहाणी सुणि ।

संज्ञा शब्द

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
अरविन्द	कहाणी	णयर	संग
सन्तोस	संपइ	णीचअ	मण
वणि (वणिअ)	पारद्धि	णाम	दिण
राअ	अडवी	जल	वय
पसाअ	तण्हा	अमिअ (य)	रयण
उवयार	भुक्खा	सुह	गुण
गहिरिम	विलासिणी	सील	णयण
सायर	आणणी (आणण)	मन्दिर	सरय
अणुराअ	रइ	हियय	वयण
कलायर	मेइणि	डिंडिम	देह
गण	मइ	दक्खिण	वलय
णदण	सारणि	चित्त	देव
जग	भू		फल
आगम	नीति		घर
ससहर	कला		मोल्ल
णरवइ			—
सणेह			पुल्लिग
णिव			ईस
णरणाह			खण
सुअ			णिव
मंति			णरेसर
धरणिणाह			मित्त

———

अभ्यास-39

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—**

1. विनयश्री कथा कहती है। 2. विनयश्री के द्वारा कथानक कहा जाता है। 3. किसी नगर में संखिणी नामक एक कबाड़ी रहता है। 4. उसने दुःखपूर्वक रुपया प्राप्त किया। 5. वह पत्नी के साथ एकान्त में जाता है। 6. उसने एक रुपया रोकड़ी प्राप्त किया। 7. उसके द्वारा कलश में रुपये रखकर धरती में गाड़े गए। 8. वह प्रातःकाल अपने स्नान के लिए चला। 9. सूर्यग्रहण के अवसर पर प्रभात में कुछ लोग निज-निवासों को छोड़कर तीर्थ-स्नान को जाते हैं। 10. तीर्थ में स्नान करके वे अपने घर पहुंचे। 11. उसके द्वारा उत्साह-पूर्वक देखा जाता है। 12. यह देखकर संखिणी हाथों से सिर पीटता है। 13. जो रुपया मूल में था वह भी नष्ट हो गया। 14. वह स्वाधीन सुख को चाहता हुआ लक्ष्मी को भोगता है। 15. रात्रि में नगर में एक सियार प्रविष्ट हुआ। 16. मुहल्ले के मुख पर मरा हुआ बैल देखा गया। 17. दिन होने पर नगर के लोगों द्वारा वह देखा जाता है। 18 सियार की पूंछ काट ली गई। 19. वह अपने मन को वश में करता है। 20. सियार कुत्तों के समुदाय द्वारा खाया गया। 21. तुम विषय में अन्धे मत रहो। 22. मैं अपने को मरा हुआ दिखाता हूँ। 23. मैं पुनः रात आने पर वन को जाऊँगा। 24. दिन में नगर के लोगों द्वारा वह देखा गया। 25. वह पत्थर से दांत तोड़ता है। 26. दांतों के बिना जीवन कठिन है। 27. जबूस्वामी कथानक कहते हैं। 28. कोई वणिक जहाज चलाता है। 29. वह जहाज ले जाकर खुश होता है। 30. वह दूसरे किनारे पर गया। 31. वह बहुमूल्य रत्नों को खरीदता है। 32. मैं बन्दर-गाह पर पहुंचूंगा। 33. मैं वहां यह माणिक्यरत्न बेचूंगा। 34. रत्न हाथ से निकलकर समुद्र में गिरता है। 35. हे उपस्थित लोगो! यहां पानी में रत्न गिरा था।

उदाहरण—

विनयश्री कथा कहती है=विनयसिरि कहा कहइ।

नोट—इस अभ्यास-39 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 9 का अध्ययन कीजिए।

संज्ञा शब्द

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
संखिणी	महिला	कहाणअ	दिण
वरइत्त	विणयसिरि	पुर	रुवअ→रुवग
सहाअ	सिद्धि	वण	दिवस→दिअस
कलस	मइ	भोयण	ठाण
लोय	आसा	रवि	रयण
मग्ग	लच्छी	गहण	पव्व
णाह	रयणि	तित्थ	समूह
णय	रच्छा	सुवण्ण	घर
उवाय	निसा	णिहाण	कण्ण
खोयण	पिया	णाण	पुण्ण
पह	आसा	दविण	मण
विहाण	भंति	घरायल	पाण
समय	पुहइ	हिअय	बिस
कर	संपया	मूल	तीर
सग्ग	णिद्दा	णयर	हत्थ
कुमार	गिरा	मुह	
सियाल	—	पमाण	
बलद्द	पु. स्त्री.	पहाय	
दन्त	मणि	आमिस	
विराम		मय	
वस		ओसह	
जण		कयण	
संचार		वण	

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु
वमाल		जल	
आगम		वेलाउल	
णर		माणिक्क	
रोअ		मज्झ	
जंबू		जाणवत्त	
लोअ		विस	
पाहण		पुंछ	
जव			
कंठ			
हरि			
सुणह			
विसय			
पलय			
साण			
समवाअ			
जंबूसामि			
वणिअ			
पोअ			
सायर			
हरि			
करि			
भंड			
णिव			
समुद्द			

अभ्यास-40

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. दशरथ पुत्र राम अपने घर आते हैं। 2. तुम्हारे द्वारा जिनेन्द्र का अभिषेक किया जाना चाहिए। 3. वे दिव्य सुगन्धित जल देवियों के लिए भेजते हैं। 4. सुप्रभा के पास कंचुकी नहीं पहुंचा। 5. वह स्त्री मन में दुःखी हुई। 6. वह पुरानी चित्रित भित्ति की तरह स्थिर और निस्तेज थी। 7. सुप्रभा राजा दशरथ को नमस्कार करती है। 8. राजा को प्रणाम करके सुप्रभा के द्वारा कहा गया। 9. मेरी कथा से तुमको क्या लाभ है ? 10. वह राजा के लिए प्राणों से प्रिय है। 11. वह हाथ में लकड़ी रखता है। 12. वह प्रभु को देखकर खुश होता है। 13. उसके द्वारा स्वामी नहीं देखा गया। 14. उसकी वाणी लड़खड़ाती है। 15. सुप्रभा के द्वारा गन्धोदक शीघ्र नहीं पाया गया। 16. वह प्रणाम करता हुआ बोला। 17. यौवन फीका पड़कर नष्ट होता है। 18. वह आंखों से पूर्ण अन्धा है। 19. उसका सिर कांपा। 20. उसके शरीर की कान्ति नष्ट हुई। 21. तुम्हारा यहां पर दूसरा जन्म ही हुआ है। 22. उसके शरीर में रक्त खत्म हो गया। 23. राजा कंचुकी के वचन सुनकर विचारता है। 24. दशरथ अत्यन्त विषाद को प्राप्त हुए। 25. सुख मधु के समान होता है। 26. दुःख मेरु पर्वत के समान लगता है। 27. तुम वह कर्म करो जिससे अजर अमर पद प्राप्त होता है। 28. पृथ्वी, धन, सिंहासन और छत्र सभी अस्थिर होते हैं। 29. पुत्र उपार्जित धन को छीन लेते हैं। 30. उसके द्वारा वर मांगा गया। 31. छत्र, सिंहासन और पृथ्वी भरत के लिए दी गई। 32. माता आते हुए उदास राम को देखती है। 33. आज तुम्हारा मुंह तेजहीन क्यों है ? 34. अपराजिता धरती पर रोती हुई गिर पड़ी।

उदाहरण—

दशरथ-पुत्र राम अपने घर आते हैं=दसरहहो पुत्त रहुणन्दण णिय घरि आवहिं।

नोट—1. इस अभ्यास–40 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 1 का अध्ययन कीजिए।

2. इस अभ्यास के संज्ञा शब्दों के लिंग कोश से ज्ञात कीजिए।

अभ्यास-41

(क) निम्नलिखित वाक्यों को अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. रघुनन्दन के द्वारा सीता का सतीत्व जाना गया। 2. वह हरिवंश में उत्पन्न हुई। 3. उसके द्वारा अग्नि जलाई गयी। 4. सीता पुष्पक विमान पर चढ़ी। 5. चार सागरों के मध्य में पृथ्वी स्थित है। 6. उसके द्वारा तृप्ति की जाती है। 7. वहाँ जीते हुए मनुष्य भी काट दिए जाते हैं। 8. सतीत्व के गर्व के कारण सीता नहीं डरती। 9. मनुष्य मरती हुई स्त्री के द्वारा भी विश्वास किए जाते हैं। 10. घास-फूस को बहाती हुई नर्मदा का जल समुद्र में गिरा। 11. समुद्र क्षार को देता हुआ नहीं थकता। 12. किसी जन के द्वारा कुत्ता आदर नहीं दिया जाता है। 13. वह गंगा में नहलाया गया। 14. चन्द्रमा से उत्पन्न प्रभा निर्मल होती है। 15. काले मेघ से उत्पन्न बिजली उज्ज्वल होती है। 16. अपूज्य पत्थर किसी के द्वारा भी नहीं पूजा जाता है। 17. पत्थर की प्रतिमा चन्दन से लीपी जाती है। 18. कीचड़ में उत्पन्न कमल की माला जिनेन्द्र के चढ़ी। 19. मेरे द्वारा सतीत्व की पताका आज भी ऊँची की गई है।

उदाहरण—

रघुनन्दन के दारा सीता का सतीत्व जाना गया=रहुणन्दणेण सीयाहे सइत्तणु जाणिउ।

नोट—1. इस अभ्यास–41 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 5 का अध्ययन कीजिए।

2. इस अभ्यास के संज्ञा शब्दों के लिंग शब्दकोश से ज्ञात कीजिए।

अभ्यास-42

क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. सभी के हाथ में लकड़ियाँ और तलवारें हैं। 2. वे हाथ में लकड़ी धारण करके चलते हैं। 3. रोकी गई भोगवती भी चल पड़ी। 4. उसके द्वारा दूर से देखा गया। 5. माता के द्वारा पुत्र रोका गया। 6. वह दूर से देखकर हांक देता है। 7. वे आते हुए देखे जाते हैं। 8. उनके द्वारा बछड़ों के समूह कहीं भी नहीं पाये गये। 10. मन में विचार करता हुआ वह भय से कांपता है। 11. वह पीछे देखने के लिए मुड़ता है। 12. माँ पुत्र को घर आने के लिए बुलाती है। 13. वह बछड़ों की रक्षा के लिए वन में जाता है। 14. उसकी माता के द्वारा अत्यन्त दुःख से रात्रि व्यतीत की गई। 15. माता के साथ सभी उसको खोजने के लिए चले। 16. वहाँ उसके शरीर के हाथ और पैर दसों दिशाओं में पड़े हुए देखे गए। 17. हे पुत्र ! मैं अत्यन्त दुःख में हूँ। 18. तुम्हारे द्वारा मैं क्यों छोड़ी गई ? 19. वह हाथ और पैरों को इकट्ठा करके स्नेह से आलिंगन करती है। 20. जिनवचन मनुष्यों के लिए श्रेष्ठ और दयावान होते हैं। 21. वह संसार को अनित्य न जानता हुआ मोह में जकड़ा हुआ है। 22. वह संसार को मन में अनित्य जानता है। 23. वह जिनधर्म ग्रहण करता है। 24. जिनधर्म के द्वारा इच्छित सुख प्राप्त किए जाते हैं। 25 तुम्हारे द्वारा संसार के दुःख नष्ट किए जाने चाहिए। 26. उसके द्वारा इच्छित सभी सुख प्राप्त किए गए। 27. उसको देखकर माता के हृदय में हर्ष उत्पन्न हुआ। 28. तुम्हारे द्वारा जिनागम का स्मरण करके श्रद्धा की जानी चाहिए। 29. उसकी माता मोह छोड़कर उत्तम ज्ञानवाली बनी। 30. उसने गुरु की वन्दना की। 31. उसने गुरु को तीन प्रदक्षिणा दी। 32. वह अपने दोषों की निन्दा करता है। 33. तुम्हारे द्वारा प्रशंसनीय देवपद प्राप्त किया जाए। 34. वह गुरु को साष्टांग प्रणाम करती है। 35. तुम मुनि को प्रणाम करो।

नोट—इस अभ्यास–42 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 13 का अध्ययन कीजिए।

उदाहरण—

सभी के हाथ में लकड़ियाँ और तलवारें हैं=सव्वहँ करहिं लउडि-खग्ग अत्थि ।

संज्ञा शब्द

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
कर	लउडि	मारण	खग्ग
वच्छ	हक्का	भय	उल
पवंच	मइ	गिह	मण
सीह	जणणि	पुर	गेह
खण	अवत्था	सयास	दुक्ख
सुव	तत्ति	खीर	घर
बंधव	छुहा	पेसण	णेत्त
विएस	तिसा	दुक्कम	दंसण
आयर	कंदरी	विवर	सरण
माम	विहावरी	सरूव	देह
भव	गुहा	चित्त	दाण
पवण	दिसि	सुप्पहाअ	वयण
आयम	जणणी	वार	भर
संसार	मायरि	चरण	सुक्ख
सिंघ	उवेक्खा	अरविन्द	खोज्ज
मुणि	गइ	कमल	गुण
पसाअ	वाया	वत्त	मल
गिरि	माया	हियअ	पाण
सोअ		वअ	सर
चलण			

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
ठाअ			
णंदण			
परलोअ			
गुरु			
सुरेस			
वेस			
मोह			
णेह			

अभ्यास-43

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. हे पुत्र ! तुम सात व्यसन सुनो। 2. सर्पादि एक जन्म में ही दुःख देते हैं। 3 विषय करोड़ों जन्मों में दुःख उत्पन्न करते हैं। 4 रुद्रदत्त दीर्घकाल तक नरक में पड़ा। 5. जो जुआ खेलता है वह माता बहिन, पत्नी और पुत्र को कष्ट देता है। 6 जो मद्य की इच्छा करता है वह बहुत बुराइयों में रमता है। 7 जो वीर होते हैं वे मृगों को नहीं मारते हैं। 8. शिकार का प्रेमी ब्रह्मदत्त नरक में गया। 9. चोर पकड़ा जाता है, बांधकर ले जाया जाता है, मुख्य मार्ग पर दण्डित किया जाता है। 10. वह मदिरा पीकर प्रिय मित्र को कष्ट पहुंचाता है। 11. अंगारक ने मरण प्राप्त किया। 12. तीर्थंकरों की माताएँ आज भी तीन लोक में प्रसिद्ध हैं। 13. विद्वान व्यक्ति शीलवान की प्रशंसा करता है। 14. निर्धन के चित्त से चिन्ता समाप्त नहीं होती। 15. धनवान से लोभ नहीं जाता है।

उदाहरण—
हे पुत्र ! तुम सात व्यसन सुनो=पुत्त तुहुं सत्त वसण णिसुणि।

———

नोट – 1. इस अभ्यास–43 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 10 का अध्ययन कीजिए।

2. इस अभ्यास के संज्ञा शब्दों के लिंग शब्दकोश से ज्ञात कीजिए।

अभ्यास–44

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. राजा गुणवान सेवक को त्यागता है। 2. तुम दुष्ट सेवकों का सम्मान मत करो। 3. वह दुष्ट मनुष्यों का सम्मान नहीं करता है। 4. पर्वत की शिखा से शिला गिरी। 5. तुम स्वय के गुणों को छिपाओ। 6. दुर्लभ सज्जन की कलियुग में पूजा की जानी चाहिए। 7. वृक्ष पर पक्षी बैठते हैं। 8. उसके कानों में दुष्ट के वचन प्रविष्ट नहीं हुए 9. वह जीवन को प्रिय मानती है। 10. जीवन और धन सबके लिए प्रिय हैं। 11. वह समय आ पड़ने पर धन को घास के समान गिनता है। 12. विशिष्ट व्यक्ति धन को तिनके के समान गिनता हुआ छोड़ता है। 13. तुम कुछ भी मत मांगो। 14. तुम भोजन प्राप्त करो। 15. तुम्हारे द्वारा स्वाभिमान नहीं छोड़ा जाना चाहिए। 16. दिन झटपट से व्यतीत होते हैं। 17. मैं विद्यमान भोगों को त्यागता हूँ। 18. अज्ञानी मनुष्य विद्यमान भोगों को भोगता है। 19. सागर के जल से प्यास का निवारण नहीं होता है। 20. जल निरर्थक आवाज करता रहता है। 21. कंजूस धर्म में रुपया व्यय नहीं करता है। 22. यम का दूत क्षण भर में पहुंचता है। 23. यमदूत वहां शीघ्रता से पहुंचा। 24. चन्द्रमा व समुद्र का प्रेम असाधारण होता है। 25. दूरी पर स्थित सज्जनों का प्रेम भी असाधारण होता है। 26. देश सज्जनों के रहते हुए होने से ही सुन्दर होते हैं। 27. जीभ इन्द्रिय के अधीन अन्य इन्द्रियां हैं। 28. तुम रसनेन्द्रिय को वश में करो। 29. तुम सम्पूर्ण कषाय की सेना को जीतो। 30. उसने जगत को अभयदान दिया। 31. उसने कषाय को जीतते हुए मोक्ष प्राप्त किया। 32. वह महाव्रतों को ग्रहण करेगा। 33. मुनि महाव्रत ग्रहण करते हुए तत्त्व का ध्यान करते हैं। 34. तत्त्व का ध्यान करके व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करते हैं। 35. निज धन को देना दुष्कर है।

उदाहरण—

राजा गुणवान सेवक को त्यागता है=राया सुभिच्चु परिहरइ।

नोट—इस अभ्यास–44 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 14 का अध्ययन कीजिए।

संज्ञा शब्द

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
सायर	सिला	तण	रयण
तल	दिसि	उड्डाण	चूर
मिच्च	सल्लई	सिंग	गुण
जण	तिसा	वण	दइव
गिरि	सरि (नदी)	सुक्ख	फल
कलि	बुद्धि	कमल	वयण
जुग	बहिण	जीविअ	कण्ण
सुअण	जिब्भा	धण	भर
तरु	तुंबिणी	तिण	खंड
सउणि	बलि	अब्भत्थण	उल (कुल)
धवल	कुडि	वड्डत्तण	गंड
सामि		झडप्पड	माण
अलि		जल	दिअस
करि		निवारण	मोग
अवसर		पल	सिव
बलि (राजा)		रअय	सीस
महुमहण (विष्णु)		उज्जाण	धम्म
कुंजर		कुडुम्ब	सर
सास		जिब्भिन्दिय	इन्दिय
कवल		मूल	तव
विहि		पण्ण	मण
मणोरह		बल	घर
दूअ		अभय	

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
ससहर		जय	
मयरहर		तत्त	
जम		सुह	
मेह			
सज्जण			
णेह			
देस			
कसाय			
महव्वय			

अभ्यास-45

(क) निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए—

1. दुर्जन के कारण ही सज्जन सुखी होते हैं। 2. उनके द्वारा सज्जन विख्यात किया जाता है। 3. मरकत मणि कांच से विख्यात होता है। 4. मन, वचन, कर्म से दया करनी चाहिए। 5. दया से पाप नहीं आता है। 6. छाती में बंधे हुए कवच के कारण घाव नहीं होता है। 7. बहुत गाढ़े बन्धन तोड़ने के लिए कठिन होते हैं। 8 सज्जन भोगों का परिमाण करके इन्द्रियों को दम्भी नहीं बनाता। 9 दूध से पाले हुए काले सर्प अच्छे नहीं होते। 10. कुपात्रों के लिए दान दूषण होता है। 11. गृहस्थ के द्वारा दान दिया जाना चाहिए। 12. पक्षी के भी घर होता है। 13. कृपणों के घर में संपदा नहीं होती। 14. समुद्र के खारे जल को कोई नहीं पीता। 15. खारा पानी किसी के भी द्वारा नहीं पिया जाता। 16. पात्रों के लिए थोड़ा भी दिया हुआ बहुत होता है। 17. जो अपने लिए प्रतिकूल है वह दूसरों के लिए नहीं करना चाहिए। 18. स्व-काया से किया हुआ धर्म ही शुद्ध होता है। 19. न्याय से आया हुआ धन ही उज्जवल होगा। 20. सज्जन देह से जीवनलाभ करते हैं। 21. अनियन्त्रित इन्द्रियों से मनुष्य के द्वारा सैंकड़ों दुःख प्राप्त किए गए। 22. दुर्जन व्यक्ति की पांचों इन्द्रियां स्वतन्त्र होती हैं। 23. कमलों को देखकर सूर्य हर्षित हुआ। 24. वह दुर्लभ मनुष्यता को प्राप्त करता है। 25. वह ईंधन के प्रयोजन से कल्पतरु काटेगा।

उदाहरण —

दुर्जन के कारण ही सज्जन सुखी होते हैं—दुज्जणें सुअणा सुहिअ हवहिं/हवन्ति।

नोट – इस अभ्यास-45 को हल करने के लिए **'अपभ्रंश काव्य सौरभ'** के पाठ 17 का अध्ययन कीजिए।

संज्ञा शब्द

पु.	स्त्री.	नपु.	पु. नपु.
दप्प	समिला	रंध	विस
सुयण	दया	जग	वासर
सायर	पवित्ति	कच्च	तम
जूय	मंति	जल	मरगअ
जीव	संपया	वय	मण
भव	धरणि	घण	उर
संबंध		घण्ण	खेत्त
काय	पु. स्त्री.	बंधण	भोग
पाअ	पंखी	पमाण	इंदिय
घाअ		दुद्ध	दाण
पसु		कुपत्त	धम्म
जिय		सोक्ख	देह
दोस		णीर	दुक्ख
पत्थर		बीअ	घर
उवहि		मूल	भोय
वड		जीविय	पाअ
अप्प		रवि	
काअ		कमल	
उज्जलअ		इंधण	
सप्प		कज्ज	
गिहत्थ		परिमाण	
कप्पयर			
णाअ			

पु.	स्त्री	नपु	पु नपु
लाह			
संतोस			
णंद			
मणुयत्तण			
कप्पयर			
सण्णाह			

अभ्यास-46

अपभ्रंश भाषा को अच्छी तरह समझने के लिए वाक्य में निहित प्रत्येक पद जैसे—संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कृदन्त आदि का व्याकरणिकरूप से विश्लेषण करने का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

इसके लिए प्रत्येक पद की व्याकरणिक विश्लेषण-पद्धति तथा कुछ वाक्यों का व्याकरणिक विश्लेषण उदाहरणस्वरूप दिया जा रहा है।

संकेत-सूची

अक —अकर्मक क्रिया
अनि —अनियमित
आज्ञा —आज्ञा
कर्म —कर्मवाच्य
क्रिविअ क्रिया विशेषण अव्यय
प्रे —प्रेरणार्थक क्रिया
भवि —भविष्यत्काल
भाव —भाववाच्य
भूकृ —भूतकालिक कृदन्त
व —वर्तमानकाल
वकृ —वर्तमान कृदन्त
वि — विशेषण
विधि —विधि
विधिकृ —विधिकृदन्त
स —सर्वनाम
संकृ — सम्बन्धक कृदन्त
सक —सकर्मक क्रिया
सवि —सर्वनाम विश्लेषण
स्त्री — स्त्रीलिंग
हेकृ — हेत्वर्थक कृदन्त

- ( ) —इस प्रकार के कोष्ठक में मूल-शब्द रखा गया है।
- [( ) + ( ) + ( ) ...]
  इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर + चिह्न शब्दों में सन्धि का द्योतक है। यहां अन्दर के कोष्ठकों में मूलशब्द ही रखे गए हैं।
- [( ) - ( ) - ( ) ...]
  इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर '—' चिह्न समास का द्योतक है।
- [[( ) — ( ) — ( )] वि]
  जहां समस्तपद विशेषण का कार्य करता है वहां इस प्रकार के कोष्ठक का प्रयोग किया गया है।
- जहां कोष्ठक के बाहर केवल संख्या (जैसे 1/1, 2/1 आदि) ही लिखी हैं वहां उस कोष्ठक के अन्दर का शब्द 'संज्ञा' है।
- जहां कर्मवाच्य कृदन्त आदि अपभ्रंश के नियमानुसार नहीं बने हैं वहां कोष्ठक के बाहर 'अनि' भी लिखा गया है।

1/1 अक या सक—उत्तम पुरुष/एकवचन
1/2 अक या सक—उत्तम पुरुष/बहुवचन
2/1 अक या सक—मध्यम पुरुष/एकवचन
2/2 अक या सक—मध्यम पुरुष/बहुवचन
3/1 अक या सक—अन्य पुरुष/एकवचन
3/2 अक या सक—अन्य पुरुष/बहुवचन

1/1 —प्रथमा/एकवचन
1/2 —प्रथमा/बहुवचन
2/1 —द्वितीया/एकवचन
2/2 —द्वितीया/बहुवचन
3/1 तृतीया/एकवचन
3/2—तृतीया/बहुवचन
4/1—चतुर्थी/एकवचन
4/2—चतुर्थी/बहुवचन
5/1—पंचमी/एकवचन
5/2—पंचमी/बहुवचन
6/1—षष्ठी/एकवचन
6/2—षष्ठी/बहुवचन
7/1—सप्तमी/एकवचन
7/2—सप्तमी/बहुवचन
8/1 —सम्बोधन/एकवचन
8/2—सम्बोधन/बहुवचन

व्याकरणिक विश्लेषण-पद्धति

संज्ञा	नरिंदसु	(नरिंद) 4/1
सर्वनाम	तेण	(त) 3/1 स
सर्वनाम विशेषण	सव्वु	(सव्व) 2/1 सवि
क्रिया	होसइ	(हो) भवि. 3/1 अक
सम्बन्धक कृदन्त	णिसुणेवि	(णिसुण + एवि) संकृ
हेत्वर्थक कृदन्त	हसण	(हस + अण) हेकृ
वर्तमानकालिक कृदन्त	जोयंतु	(जोय + न्त) वकृ 1/1
भूतकालिक कृदन्त	मारिउ	(मार→मारिअ) भूकृ 1/1
विशेषण	समग्गल	(समग्गल) 2/1 वि
भाववाच्य	णच्चिज्जइ	(णच्च + इज्ज) व भाव 3/1 अक
कर्मवाच्य	विलसिज्जइ	(विलस + इज्ज) व कर्म 3/1 सक
प्रेरणार्थक	दरिसावमि	(दरिस + आव) प्रे व 1/1 सक
स्वार्थिक प्रत्यय	जंबूउ	(जंबूअ) 1/1 'अ' स्वार्थिक

अव्यय	विणु	अव्यय
क्रिया विशेषण	अवसें	(अवस) 3/1 क्रिवि
भूतकालिक कृदन्त अनियमित	मुक्कु	(मुक्क) भूक 1/1 अनि
कर्मवाच्य अनियमित	लब्भइ	(लब्भइ) व कर्म 3/1 सक अनि

उदाहरण—

1. पणवेप्पिणु तेण वि वुत्तु एम, गय दियहा जोव्वणु ल्हसिउ देव ।

पणवेप्पिणु	(पणव+एप्पिणु) संकृ	प्रणाम करके
तेण	(त) 3/1 स	उसके द्वारा
वि	अव्यय	भी
वुत्तु	(वुत्त) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया
एम	अव्यय	इस प्रकार
गय	(गय) भूकृ 1/2 अनि	चले गये
दियहा	(दियह) 1/2	दिन
जोव्वणु	(जोव्वण) 1/1	यौवन
ल्हसिउ	(ल्हस) भूकृ 1/1	खिसक गया
देव	(देव) 8/1	हे देव

2. दाणु कुपत्तहं दोसडइ बोल्लिज्जइ ण हु भंति ।

दाणु	(दाण) 1/1	दान
कुपत्तहं	(कुपत्त) 4/2	कुपात्रों के लिए
दोसड	(दोस+अड) 1/1 'अड' स्वा.	दूषण
इ	अव्यय	ही
बोल्लिज्जइ	(बोल्ल) व कर्म 3/1 सक	कहा जाता है
ण	अव्यय	नहीं
हु	अव्यय	निश्चय ही
भंति	(भंति) 1/1	भ्रान्ति

3. तं णिसुणेवि वलेण पजम्पिउ, भरहहो सयलु वि रज्जु समप्पिउ ।

तं	(त) 2/1 स	उसको
णिसुणेवि	(णिसुण + एवि) संकृ	सुनकर
वलेण	(वल) 3/1	बलदेव के द्वारा
पजम्पिउ	(पजम्प→पजम्पिअ) भूकृ 1/1	कहा गया
भरहहो	(भरह) 4/1	भरत के लिए
सयलु	(सयल) 1/1 वि	सम्पूर्ण
वि	अव्यय	ही
रज्जु	(रज्ज) 1/1	राज्य
समप्पिउ	(समप्प→समप्पिअ) भूकृ 1/1	दे दिया गया है

अभ्यास-47

अमंगलिय पुरिसहो कहा[1]

एक्कहिं णयरि एक्कु अमंगलिउ मुद्ध पुरिसु आसि । सो एरिसु अत्थि जो को वि पभाये तहो मुह पासेइ, सो भोयणु पि न लहेइ । पउरा वि पच्चसे कयावि तहो मुहु न पिक्खहिं । नरवइएं वि अमंगलिय पुरिसहो वट्टा सुणिआ । परिक्खेवं नरिंदें एगया पभायकाले सो आहूउ, तासु मुहु दिट्ठु । जइयहुं राउ भोयणा उवविसइ, कवलु च मुहि पक्खिवइ, तइयहुं अहिलि नयरे अकम्हा परचक्क भयें हलबोलु जाउ । तावेहिं नरवइ वि भोयणु चयेवि सहसा उट्ठेविणु ससेण्णु नयरहे बाहिं निग्गउ ।

भय कारणु अदट्ठूण पुणु पच्छा आगउ । समाणु नरिंदु चिंतेइ – इमहो अमंगलियहो सरूवु मइं पच्चक्खु दिट्ठु, तओ एहो हंतव्वो । एवं चिंतेप्पि अमंगलिय कोक्काविएप्पिणु वहेवं चडालसु अप्पेइ । जइयहुं एहो रुवंतु, सकम्मु निंदंतु चंडालें सह गच्छंतु अत्थि, तइयहुं एक्कु कारुणिउ बुद्धिणिहाणु वहाहे नेइज्जमाणु तं दट्ठूणं कारणु णाइ तासु रक्खणसु कण्णि किंपि कहेप्पिणु उवाय दंसेइ । हरिसंतु जावेहिं वहस्सु थंभि ठविउ तावेहिं चंडालु तं पुच्छइ—'जीवणु विणा तउ कावि इच्छा होइ, तया मग्गियव्वा ।' सो कहेइ—महु नरिंद मुह दंसण इच्छा अत्थि । तया सो नरिंद समीवं आणीउ । नरिंदु तं पुच्छइ—एत्थु आगमण किं पओयणु ?

सो कहेइ—हे नरिंदु ! पच्चूसे महु मुहस्सु दंसणें भोयणु न लहिज्जइ । परन्तु तुम्हहं मुह पेक्खणें मज्झु बहु भवेसइ, तइयहुं पउर किं कहेसंति/कहेसहिं । महु मुहहे सिरिमंतहं मुह दंसणु केरिसु फलउ जाइ ? नायरा वि पभाए तुम्हहं मुह कहं पासिहिरे ? एवं तासु वयण जुत्तिए संतुट्ठु नरिंदु । सो वहाएसु निसेहेवि पारितोसिउ च दायवि हरिसिउ सो अमगलिउ वि संतुस्सिउ ।

---

1. 'पाइयगज्जसंगहो' (प्राच्य भारती प्रकाशन, आरा) में प्रकाशित प्राकृत कथा 'अमंगलिय पुरिसस्सकथा' का डॉ. कमलचन्द सोगाणीकृत अपभ्रंश रूपान्तरण ।

अमांगलिक पुरुष की कथा

एक नगर में एक अमांगलिक मूर्ख पुरुष था। वह ऐसा था—जो कोई भी प्रभात में उसके मुँह को देखता वह भोजन भी नहीं पाता (उसे भोजन भी नहीं मिलता)। नगर के निवासी भी प्रातःकाल में कभी भी उसके मुँह को नहीं देखते थे। राजा के द्वारा भी अमांगलिक पुरुष की बात सुनी गई। परीक्षा के लिए राजा के द्वारा एक बार प्रभातकाल में वह बुलाया गया, उसका मुख देखा गया। ज्योंहि राजा भोजन के लिए बैठा और मुँह में (रोटी का) ग्रास रखा त्योंहि समस्त नगर में अकस्मात् शत्रु के द्वारा आक्रमण के भय से शोरगुल हुआ। तब राजा भी भोजन को छोड़कर (और) शीघ्र उठकर सेना-सहित नगर से बाहर गया।

और भय के कारण को न देखकर बाद में आया। अहंकारी राजा ने सोचा—इस अमांगलिक के स्वरूप को मेरे द्वारा प्रत्यक्ष देखा गया, इसलिए यह मारा जाना चाहिए। इस प्रकार विचारकर अमांगलिक को बुलवाकर वध के लिए चांडाल को सौंप दिया। जब यह रोता हुआ स्व-कर्म की (को) निन्दा करता हुआ चाण्डाल के साथ जा रहा था, तब एक दयावान, बुद्धिमान ने वध के लिए ले जाए जाते हुए उसको देखकर, कारण को जानकर उसकी रक्षा के लिए कान में कुछ कहकर उपाय दिखलाया। (इसके फलस्वरूप वह) प्रसन्न होते हुए (चला)। जब (वह) वध के खम्भे पर खड़ा किया गया तब चाण्डाल ने उसको पूछा—जीवन के अलावा तुम्हारी कोई भी (वस्तु की) इच्छा हो, तो (तुम्हारे द्वारा) (वह वस्तु) मांगी जानी चाहिए। उसने कहा—मेरी इच्छा राजा के मुख-दर्शन की है। तब वह राजा के सामने लाया गया। राजा ने उसको पूछा—यहां आने का प्रयोजन क्या है?

उसने कहा—हे राजा! प्रातःकाल में मेरे मुख के दर्शन से (तुम्हारे द्वारा) भोजन ग्रहण नहीं किया गया, परन्तु तुम्हारे मुख के देखने से मेरा वध होगा तब नगर के निवासी क्या कहेंगे? मेरे मुँह (दर्शन) की तुलना में श्रीमान् का मुख-दर्शन कैसा फल उत्पन्न करता है? नागरिक भी प्रभात में तुम्हारे मुख को कैसे देखेंगे? इस प्रकार उसकी वचन की युक्ति से राजा सन्तुष्ट हुआ। (वह) वध के आदेश को रद्द करके और उसको पारितोषिक देकर प्रसन्न हुआ। (इससे) वह अमांगलिक भी सन्तुष्ट हुआ।

अमंगलिय पुरिसहो कहा

व्याकरणिक विश्लेषण

अमंगलिय	(अमंगलिय) 6/1 वि	=अमांगलिक
पुरिसहो	(पुरिस) 6/1	=पुरुष की
कहा	(कहा) 1/1	=कथा
एक्कहिं	(एक्क) 7/1 सवि	=एक
णयरि	(णयर) 7/1	=नगर में
एक्कु	(एक्क) 1/1 सवि	=एक
अमंगलिउ	(अमंगलिअ) 1/1 वि	=अमांगलिक
मुद्धु	(मुद्ध) 1/1 वि	=मूर्ख
पुरिसु	(पुरिस) 1/1	=पुरुष
आसि	(अस) भूत 3/1 अक	=था
सो	(त) 1/1 स	=वह
एरिसु	(एरिस) 1/1 वि	=ऐसा
अत्थि	(अस) व 3/1 अक	=है (था)
जो	(ज) 1/1 स	=जो
को	(क) 1/1 स	=कोई
वि	अव्यय	=भी
पभाये	(पभाय) 7/1	=प्रातःकाल/प्रभात में
तहो	(त) 6/1 स	=उसके
मुह	(मुह) 2/1	=मुख को
पासेइ	(पास) व 3/1 सक	=देखता है
सो	(त) 1/1 स	=वह
भोयणु	(भोयण) 2/1	=भोजन

पि	अव्यय	=भी
न	अव्यय	=नहीं
लहेइ	(लह) व 3/1 सक	=पाता है
पउरा	(पउर) 1/2	=नगर के निवासी
वि	अव्यय	=भी
पच्चूसे	(पच्चूस) 7/1	=प्रात:काल में
कयावि	अव्यय	=कभी भी
तहो	(त) 6/1 स	=उसका
मुहु	(मुह) 2/1	=मुख
न	अव्यय	=नहीं
पिक्खहिं	(पिक्ख) व 3/2 सक	=देखते हैं
नरवइएं	(नरवइ) 3/1	=राजा के द्वारा
वि	अव्यय	=भी
अमंगलिय	(अमंगलिय) 6/1 वि	=अमांगलिक
पुरिसहो	(पुरिस) 6/1	=पुरुष की
वट्टा	(वट्टा) 1/1	=बात
सुणिआ	(सुण) भूक 1/1	=सुनी गई
परिक्खेवं	(परिक्ख) हेकृ	=परीक्षा के लिए
नरिंदें	(नरिंद) 3/1	=राजा के द्वारा
एगया	अव्यय	=एक बार
पभायकाले	(पभायकाल)	=प्रभातकाल में
सो	(त) 1/1 स	=वह
आहूउ	(आहूअ) भूक 1/1 अनि	=बुलाया गया
तासु	(त) 6/1 स	=उसका
मुहु	(मुह) 1/1	=मुख

दिट्ठु	(दिट्ठ) भूक 1/1 अनि	=देखा गया
जइयहुं	अव्यय	=ज्योंहि
राउ	(राअ) 1/1	=राजा
भोयणा	(भोयण) 4/1	=भोजन के लिए
उवविसइ	(उवविस) व 3/1 अक	=बैठता है (बैठा)
कवलु	(कवल) 2/1	=ग्रास
च	अव्यय	=और
मुहि	(मुह) 7/1	=मुंह में
पक्खिवइ	(पक्खिव) व 3/1 सक	=रखता है (रखा)
तइयहुं	अव्यय	=त्योंहि
अहिलि	(अहिल) 7/1 वि	=समस्त
नयरे	(नयर) 7/1	=नगर में
अकम्हा	अव्यय	=अकस्मात्
परचक्क	(परचक्क) 6/1	=शत्रु के द्वारा आक्रमण के
भयें	(भय) 3/1	=भय से
हलबोलु	(हलबोल) 1/1	=शोरगुल
जाउ	(जाअ) भूक 1/1 अनि	=हुआ
तावेहिं	अव्यय	=तब
नरवइ	(नरवइ) 1/1	=राजा
वि	अव्यय	=भी
भोयणु	(भोयण) 2/1	=भोजन को
चयेवि	(चय) संकृ	=छोड़कर
सहसा	अव्यय	=शीघ्र
उट्ठेविणु	(उट्ठ) संकृ	=उठकर

ससेण्णु	(ससेण्ण) 1/1 वि	=सेनासहित
नयरहे	(नयर) 5/1	=नगर से
बाहिं	अव्यय	=बाहर
निग्गउ	(निग्गअ) भूक 1/1 अनि	=निकला
भय	(भय) 6/1	=भय के
कारणु	(कारण) 2/1	=कारण को
अदट्ठूण	संकृ अनि	=न देखकर
पुणु	अव्यय	=फिर
पच्छा	अव्यय	=बाद में
आगउ	(आगअ) भूक 1/1 अनि	=आ गया
समाणु	(समाण) 1/1 वि	=अहंकारी
नरिंदु	(नरिंद) 1/1	=राजा ने
चिंतेइ	(चिंत) व 3/1 सक	=सोचता है (सोचा)
इमहो	(इम) 6/1 सवि	=इस
अमंगलियहो	(अमंगलिय) 6/1 वि	=अमांगलिक का
सरूवु	(सरूव) 1/1	=स्वरूप
मइं	(अम्ह) 3/1 स	=मेरे द्वारा
पच्चक्खु	(पच्चक्ख) 1/1 वि	=प्रत्यक्ष
दिट्ठु	(दिट्ठ) भूक 1/1 अनि	=देखा गया
तओ	अव्यय	=इसलिए
एहो	(एत) 1/1 स	=यह
हंतव्वो	(हंतव्व) विधिकृ 1/1 अनि	=मारा जाना चाहिए
एवं	अव्यय	=इस प्रकार
चिंतेप्पि	(चिंत) संकृ	=विचारकर
अमंगलिय	(अमंगलिय) 2/1	=अमांगलिक को

कोक्काविएप्पिणु	(कोक्क+आवि) प्रे. संकृ	=बुलवाकर
वहेवं	(वह) हेकृ	=वध के लिए
चंडालसु	(चंडाल) 4/1	=चांडाल को (के लिए)
अप्पेइ	(अप्प) व 3/1 सक	=सौंपता है (सौंपा)
जइयहुं	अव्यय	=जब
एहो	(एत) 1/1 स	=यह
रुवंतु	(रुव) वकृ 1/1	=रोता हुआ
सकम्मु	[(स)-(कम्म) 2/1]	=स्वकर्म को (की)
निंदंतु	(निंद) वकृ 1/1	=निंदा करता हुआ
चंडालें	(चंडाल) 3/1	=चांडाल के
सह	अव्यय	=साथ
गच्छंतु	(गच्छ) वकृ 1/1	=जा रहा
अत्थि	(अस) व 3/1 अक	=है (था)
तइयहुं	अव्यय	=तब
एक्कु	(एक्क) 1/1 सवि	=एक
कारुणिउ	(कारुणिअ) 1/1 वि	=दयावान
बुद्धिणिहाणु	(बुद्धिणिहाण) 1/1 वि	=बुद्धिमान ने
वहाहे	(वह) 4/1	=वध के लिए
नेइज्जमाणु	(णी) कर्म वकृ 1/1	=ले जाए जाते हुए
तं	(त) 2/1 स	=उसको
दट्ठूणं	संकृ अनि	=देखकर
कारणु	(कारण) 2/1	=कारण को
णाइ	(णा) संकृ	=जानकर
तासु	(त) 6/1 स	=उसकी
रक्खणसु	(रक्खण) 4/1	=रक्षा के लिए

कण्णि	(कण्ण) 7/1	=कान में
किंपि	अव्यय	=कुछ
कहेप्पि	(कह) संकृ	=कहकर
उवाय	(उवाय) 2/1	=उपाय
दंसेइ	(दंस) व 3/1 सक	=दिखलाता है (दिखलाया)
हरिसंतु	(हरिस) वकृ 1/1	=प्रसन्न होते हुए
जावेहिं	अव्यय	=जब
वहस्सु	(वह) 6/1	=वध के
थंभि	(थंभ) 7/1	=खम्भे पर
ठविउ	(ठव) भूकृ 1/1	=खड़ा किया गया
तावेहिं	अव्यय	=तब
चंडालु	(चंडाल) 1/1	=चांडाल ने
तं	(त) 2/1 स	=उसको
पुच्छइ	(पुच्छ) व 3/1 सक	=पूछता है (पूछा)
जीवणु	(जीवण) 2/1	=जीवन के
विणा	अव्यय	=बिना
तउ	(तुम्ह) 6/1 स	=तुम्हारी
कावि	(का) 1/1 स वि (अव्यय) = भी	=कोई भी
इच्छा	(इच्छा) 1/1	=इच्छा
होइ	(हो) व 3/1 अक	=है
तया	अव्यय	=तो
मग्गियव्वा	(मग्ग) विधिकृ 1/1	=मांगी जानी चाहिए
सो	(त) 1/1 स	=वह

कहेइ	(कह) व 3/1 सक	=कहता है
महु	(अम्ह) 6/1 स	=मेरी
नरिंद	(नरिंद) 6/1	=राजा के
मुह	(मुह) 6/1	=मुख के
दंसण	(दंसण) 6/1	=दर्शन की
इच्छा	(इच्छा) 1/1	=इच्छा
अत्थि	(अस) व 3/1 अक	=है
तया	अव्यय	=तब
सो	(त) 1/1 स	=वह
नरिंद	(नरिंद) 6/1	=राजा के
समीवं	(समीव) 1/1 वि	=समीप
आणीउ	(आणीअ) भूक 1/1 अनि	=लाया गया
नरिंदु	(नरिंद) 1/1	=राजा ने
तं	(त) 2/1 स	=उसको
पुच्छइ	(पुच्छ) व 3/1 सक	=पूछता है (पूछा)
एत्थु	अव्यय	=यहाँ
आगमण[1]	(आगमण) 4/1	=आने का
किं	(किं) 1/1 स	=क्या
पओयणु	(पओयण) 1/1	=प्रयोजन
सो	(त) 1/1 स	=वह (उसने)
कहेइ	(कह) व 3/1 सक	=कहता है (कहा)
हे नरिंदु	(नरिंद) 8/1	=हे राजा
पच्चूसे	(पच्चूस) 7/1	=प्रातःकाल में

नोट— 1. प्रयोजन के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

महु	(अम्ह) 6/1 स	=मेरे
मुहस्स	(मुह) 6/1	=मुख के
दंसणें	(दंसण) 3/1	=दर्शन से
भोयणु	(भोयण) 1/1	=भोजन
न	अव्यय	=नहीं
लहिज्जइ	(लह) व कर्म 3/1 सक	=किया जाता है (गया)
परंतु	अव्यय	=परन्तु
तुम्हहं	(तुम्ह) 6/2 स	=तुम्हारा
मुह	(मुह) 2/1	=मुख
पेक्खणें	(पेक्खण) 3/1	=देखने से
मज्झु	(अम्ह) 6/1 स	=मेरा
वहु	(वह) 1/1	=वध
भवेसइ	(भव) भवि 3/1 अक	=होगा
तइयहुं	अव्यय	=तब
पउर	(पउर) 1/2	=नगर के निवासी
किं	(किं) 1/1 स	=क्या
कहेसंति/कहेसहिं	(कह) भवि 3/2 सक	=कहेंगे
महु	(अम्ह) 6/1 स	=मेरे
मुहहे[1]	(मुह) 5/1	=मुंह की तुलना में
सिरिमंतहं	(सिरिमंत) 6/2	=श्रीमान् का
मुह	(मुह) 1/1	=मुख
दसणु	(दंसण) 1/1	=दर्शन

नोट—1. जिससे किसी वस्तु का तुलनात्मक भेद दिखाया जाए उसमें पंचमी होती है।

केरिसु	(केरिस) 2/1 वि	=कैसा
फलउ	(फलअ) 2/1 'अ' स्वार्थिक	=फल
जाइ	(जा) व 3/1 सक	=उत्पन्न करता है
नायरा	(नायर) 1/2	=नागरिक
वि	अव्यय	=भी
पभाए	(पभाअ) 7/1	=प्रभात में
तुम्हहं	(तुम्ह) 6/2	=तुम्हारे
मुहं	(मुह) 2/1	=मुख को
कहं	अव्यय	=कैसे
पासिहिरे	(पास) भवि 3/2 सक	=देखेंगे
एवं	अव्यय	=इस प्रकार
तासु	(त) 6/1 स	=उसकी
वयण	(वयण) 6/1	=वचन की
जुत्तिए	(जुत्ति) 3/1	=युक्ति से
संतुट्ठु	(संतुट्ठ) भूक 1/1 अनि	=संतुष्ट हुआ
नरिंदु	(नरिंद) 1/1	=राजा
सो	(त) 1/1 स	=वह
वहाएसु	[(वह)+(आएसु)] [(वह)-(आएस) 2/1]	=वध के आदेश को
निसेहेवि	(निसेह) संकृ	=रद्द करके
पारितोसिउ	(पारितोसिअ) 2/1	=पारितोषिक
च	अव्यय	=और

दाएवि	(दा) संकृ	=देकर
हरिसिउ	(हरिस) भूकृ 1/1	=प्रसन्न हुआ
सो	(त) 1/1 स	=वह
अमंगलिउ	(अमंगलिअ) 1/1 वि	=अमांगलिक भी
संतुस्सिउ	(संतुस्स) भूकृ 1/1	=संतुष्ट हुआ

अभ्यास–48

विउसीहे पुत्त-बहूहे कहाणगु[1]

कहिं णयरि लच्छीदासु सेट्ठि वरीवट्टइ । सो बहुधण-संपत्तिए गव्विट्ठु आसि । भोगविलासहिं एव लग्गु कयावि धम्मु ण कुणेइ । तासु पुत्तु वि एयारिसु अत्थि । जोव्वणि पिउए धम्मिअहो धम्मदासहो जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पुत्तसु पाणिग्गहणु करावित्रउ । सा कन्ना जइयहुं अट्ठवासा जाया, तइयहुं ताए पिउ पेरणाए साहुणी सगासहु सव्वण्ण धम्म सवणें सम्मत्तु अणुव्वयइं य गहीयइं, सव्वण्ण धम्मि अईव निउणा संजाआ ।

जइयहुं सा ससुर गेहि आगया तइयहुं ससुराइ धम्महु विमुहु देक्खेवि ताए बहुदुहु संजाउ । कहं मज्झु नियवय निव्वाहु होसइ ? कहं वा देवगुरुह विमुहहं ससुराइ धम्मोवएसु भवेसइ, एवं सा वियारेइ ।

एगया संसारु असारु, लच्छी वि असारा, देहु वि विणस्सरु, एक्कु धम्मु च्चिय परलोअपवन्नहं जीवहं आहारु त्ति उवएसदाणें नियभत्ता सव्वण्ण धम्में वासिउ कउ । एव सासू वि कालतरे बोहेइ । ससुर पडिबोहेवं सा समयु मग्गेइ ।

एगया ताहे घरि समणगुणगणालंकिउ महव्वइ णाणी जोव्वणत्थु एक्कु साहु भिक्खसु समागउ । जोव्वणि वि गहीयवय संत दंत साहु घरे आगय देक्खेप्पिणु आहारे विज्जमाणे वि ताए वियारिय–जोव्वणे महव्वय महादुल्लहु, कहं एतें एतहिं जोव्वणत्तणे गहीय ? इति परिक्खेवं समस्साहे उत्तरं पुट्ठं—अहुणा समउ न संजाउ किं पुव्वं निग्गया ? ताहे हियये गउ भाउ णाइ साहुए उत्तु-'समयनाणु', कया मच्चु होसइ त्ति नत्थि नाणु, तेण समय विणा निग्गउ । सा उत्तरु णाएवि तुट्ठा । मुणिएं वि सा पुट्ठा—कइ वरिसा तुहुं संजाया ? मुणि पुच्छाभावु णाइ वीसवासेहिं जाअहिं वि ताए बारसवासु त्ति उत्तु । पुणु 'तुज्झ सामि कइ वासा जाआ' ति पुट्ठु । ताहे पियहो पणवीसवासहिं जाअहिं वि पंचवासा उत्ता, एवं सासूहे 'छमासा' कहिया । मुणिएं ससुरहो पुच्छिउ, सो 'अहुणा न उप्पण्णु अत्थि' ति सट्ठा भणिया ।

---

1. 'पाइयगज्जसंगहो' में प्रकाशित 'विउसीए पुत्तवहूए कहाणगं' का डॉ. कमलचन्द सोगाणीकृत अपभ्रंश रूपान्तरण ।

विदुषी पुत्रवधू का कथानक

किसी नगर में लक्ष्मीदास सेठ भली प्रकार से रहता था। वह बहुत धन-सम्पत्ति के कारण अत्यन्त गर्वीला था। भोगविलासों में ही (वह) लगा हुआ (था) (और) कभी भी धर्म नहीं करता था। उसका पुत्र भी ऐसा ही था। यौवन में पिता द्वारा धार्मिक धर्मदास की यथानाम शीलवती कन्या के साथ पुत्र का विवाह करवा दिया गया। जब वह कन्या आठ वर्ष की हुई, तब उसके द्वारा पिता की प्रेरणा से (एक) साध्वी के पास सर्वज्ञ के धर्म के श्रवण से सम्यकत्व और अणुव्रत ग्रहण किए गए। सर्वज्ञ के धर्म में (वह) बहुत निपुण हुई।

जब वह ससुर के घर में आ गई, तब ससुर आदि को धर्म से विमुख देखकर, उसके द्वारा बहुत दुःख प्राप्त किया गया। मेरे निजव्रत का निर्वाह कैसे होगा? अथवा देव-गुरु से विमुख ससुर आदि के लिए धर्मोपदेश कैसे सम्भव होगा? इस प्रकार वह विचार करती है।

संसार असार है, लक्ष्मी भी असार है, देह भी विनाशशील है, एक धर्म ही परलोक जानेवाले जीव के लिए आधार है, इस प्रकार एक बार उपदेश देने से निज पति सर्वज्ञ के धर्म में संस्कारित किया गया। कुछ समय पश्चात् (वह) इस प्रकार सास को भी समझाती है। ससुर को समझाने के लिए वह समय खोजने लगी।

एक बार उसके घर में श्रमण-गुण-समूह से अलंकृत महाव्रती ज्ञानी, यौवन में स्थित एक साधु भिक्षा के लिए आए। यौवन में ही व्रत को ग्रहण किए हुए शान्त और जितेन्द्रिय साधु को घर मे आया हुआ देखकर आहार को प्राप्त करते हुए होने पर ही उसके द्वारा विचार किया गया—यौवन में महाव्रत अत्यन्त दुर्लभ (है)। इनके द्वारा इस यौवन अवस्था में (महाव्रत) कैसे ग्रहण किए गए? इस प्रकार परीक्षा के लिए समस्या का उत्तर पूछा गया—अभी समय न हुआ, पहिले ही (आप) क्यों निकल गए? उसके हृदय में उत्पन्न भाव को जानकर साधु के द्वारा कहा गया—ज्ञान समय (है)। कब मृत्यु होगी ऐसा, ज्ञान किसी को नहीं है. इसलिए समय के बिना निकल गया। वह उत्तर को समझकर सन्तुष्ट हुई। मुनि के द्वारा वह भी पूछी गई—तुम्हें उत्पन्न हुए कितने वर्ष हुए? मुनि के प्रश्न के आशय को जानकर बीस वर्ष हो जाने पर भी उसके द्वारा बारह वर्ष कहे गए। फिर, तुम्हारे स्वामी का जन्म हुए) कितने वर्ष हुए? इस प्रकार (यह) पूछा गया। उसके द्वारा प्रिय का (जन्म हुए) पच्चीस वर्ष हो जाने पर भी पाँच वर्ष कहा गया. इस प्रकार सासू का छः माह कहा गया, ससुर के लिए पूछने पर 'वह अभी उत्पन्न नहीं हुआ है', इस प्रकार शब्द कहे गए।

एवं वहू साहु वट्टा अंतट्ठिएं ससुरें सुआ। लद्धभिक्खे साहुहि गए सो अईव कोहाउलु संजाउ, जओ पुत्तवहू मइं उद्दिस्सेवि 'न जाउ' त्ति कहेइ। रुट्ठु सो पुत्तसु कहेवि हट्टु गच्छइ। गच्छन्तु ससुरु सा वयइ—मुञ्जेविहे ससुरु ! तुहुं गच्छहि। ससुर कहेइ—जइ हउं न जाउ अत्थि, तो कहं भोयणु चव्वेमि-भक्खेमि, इअ कहेप्पिणु हट्टि गउ। पुत्तसु सव्वु वुत्तंतु कहेइ—तउ पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि. अओ तं गिहाहु निक्कास।

सो पिउं सह गेहि आगउ। (सो) बहू पुच्छइ—किं माउ पिउ अवमाणु कउ? साहुं सह वट्टाहिं किं असच्चु उत्तरु दिण्णु ? ताए उत्तु – तुम्हे मुणि पुच्छह, सो सव्वु कहिहिइ। ससुरु उवस्सइ जाएवि सावमाणु मुणि पुच्छइ– हे मुणि, अज्जु महु गेहि भिक्खसु तुम्हे किं आगया ? मुणि कहेइ—तुम्हहं घरु ण जाणामि, तुहुं कुत्थ वसहि ? सेट्ठि वियारेइ—मुणि असच्चु कहेइ। पुणु पुट्ठु—कत्थ वि गेहि बालाए सह वट्टा कया किं ? मुणि कहेइ—'सा बाला अईव कुसला, ताए महु वि परिक्खा कया।' ताए हउं वुत्तु – समया विणा कहं निग्गउ सि ? मइं उत्तरु दिण्णु "समयहो–मरणसमयहो नाणु नत्थि, तेण पुव्ववये निग्गउ म्हि।" मइं वि परिक्खेवि सव्वाहु ससुराइ वासाइं पुट्ठाइं। ताए सम्मं कहियाइं। सेट्ठि पुच्छइ— ससुरु न जाउ इअ ताए किं कहिय ? मुणि उत्तु — सा चिअ पुच्छिज्जउ, जओ 'विउसीए ताए जहत्थु भावु णाइज्जइ'।

इस प्रकार बहू और साधु की वार्ता भीतर बैठे हुए ससुर के द्वारा सुनी गई। भिक्षा को प्राप्त साधु के चले जाने पर वह अत्यन्त क्रोध से व्याकुल हुआ, क्योंकि पुत्रवधू मुझको लक्ष्य करके कहती है कि (मैं) उत्पन्न नहीं हुआ। वह रूठ गया, (और) पुत्र को कहने के लिए दुकान पर गया। जाते हुए ससुर को वह कहती है—हे ससुर! आप भोजन करके जाएं। ससुर कहता है यदि मैं उत्पन्न नहीं हुआ हूं, तो भोजन कैसे चबाऊँगा-खाऊँगा। इस (बात) को कहकर दुकान पर गया। पुत्र को सब वार्ता कहता है—तेरी पत्नी दुराचारिणी है और अशिष्ट बोलनेवाली है, इसलिए (तुम) उसको घर से निकालो।

वह पिता के साथ घर में आया। (वह) बहू को पूछता है (तुम्हारे द्वारा) माता-पिता का अपमान क्यों किया गया? साधु के साथ वार्ता में असत्य उत्तर क्यों दिए गए? उसके द्वारा कहा गया—तुम्हीं मुनि को पूछो, वह सब कह देंगे। ससुर ने उपासरे में जाकर अपमानसहित मुनि को पूछा हे मुनि! आज मेरे घर में भिक्षा के लिए तुम क्यों आये? मुनि ने कहा—तुम्हारे घर को नहीं जानता हूं, तुम कहां रहते हो? सेठ विचारता है कि मुनि असत्य कहता है। फिर पूछा गया क्या किसी भी घर में बाला के साथ वार्ता की गई? मुनि ने कहा—वह बाला अत्यन्त कुशल है। उसके द्वारा मेरी भी परीक्षा की गई। उसके द्वारा मैं कहा गया—समय के बिना तुम कैसे निकले हो? मेरे द्वारा उत्तर दिया गया—समय का-मरण समय का ज्ञान नहीं है, इसलिए आयु के पूर्व में ही निकल गया हूं। मेरे द्वारा भी परीक्षा के लिए ससुर आदि सभी के वर्ष (आयु) पूछे गए (तो) उसके द्वारा (बाला के द्वारा) उचित प्रकार से उत्तर कहे गये। सेठ ने पूछा—ससुर उत्पन्न नहीं हुआ, यह उसके द्वारा क्यों कहा गया? मुनि के द्वारा कहा गया—वह ही पूछी जाए, क्योंकि उस विदुषी के द्वारा यथार्थ भाव जाने जाते (जाने गये) हैं।

ससुरु गेहु जाइ पुत्तवहु पुच्छइ—'तइं मुणि पुरओ किं एव वुत्त—महु ससुरु जाउ वि न।' ताए उत्त—'हे ससुर, धम्महीणु मणुसहो माणव भवु पत्तु वि अपत्तु एव, जओ सद्धम्म किच्चहिं सहलु भवु न कउ सो मणुसभव निप्फल चिय। तओ तउ जीवणु पि धम्महीणु सव्वु गउ। तेण मइं कहिअ महु ससुरहो उप्पत्ति एव न।' एवं सच्चि ठाणि तुट्ठु धम्माभिमुहु जाउ। पुणु पुट्ठु—पइ सासू छम्मासा कहं कहिआ? ताए उत्त—सासू पुच्छह। सेट्ठिएं सा पुट्ठा। ताए वि कहिअ—पुत्तवहू वयणु सच्चु, जओ महु सव्वण्हु धम्मपत्तीहि छमासा एव जाया, जओ इओ छमासाहु पुव्वं कत्थ वि मरणपसंगे हउं गया। तत्थ थीहु विविहगुणदोसवट्टा जाया।

एगाए वुड्ढाए उत्त नारीहु मज्झे इमाहे पुत्तवहू सेट्ठा। जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जे सा एव अपमत्ता, गिहकज्जहिं वि कुसला नन्ना एरिसा। इमाहे सासू निब्भगा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तवहूए वि धम्मकज्जि पेरिज्जमाणावि धम्मु न कुणेइ, इमु सुणेवि बहुगुणरंजिआ ताहे मुहहे धम्मो पत्तो। धम्मपत्तीहिं छमासा जाया, तओ पुत्तवहुए छम्मासा कहिआ, तं जुत्तु।

पुत्तु वि पुट्ठु, तेण वि उत्तु—रत्तिहिं समय-धम्मोवएसपराए भज्जाए संसारासारदंसणे भोगविलासहं च परिणामदुहदाइत्ताणे, वासाणईपूरतुल जुव्वणतणे य देहसु खणभंगुरतणे जयि धम्मु एव सारु ति उवदिट्ठु। हउं सव्वण्णु-धम्माराहगो जाउ, अज्जु पंचवासा जाया। तओ बहुए मइं उद्दिस्सेवि पंचवासा कहिआ, त सच्चु। एव कुडुंबसु धम्मपत्तिहे वट्टाए विउसीहे य पुत्तबहूहे जहत्थवयणु सुणेप्पिणु लच्छीदासु वि पडिबुद्धु वुड्ढत्तणि वि धम्मु आराहिउ सग्गइ पत्तु सपरिवारु।

नोट—अकादमी-पद्धति से ईसं कथा की व्याकरणिक विश्लेषणी करके अकादमी कार्यालय में जांचने के लिए भिजवाएं।

ससुर घर जाकर पुत्रवधू से पूछता है—तुम्हारे द्वारा मुनि के समक्ष इस प्रकार से क्यों कहा गया (कि) मेरा ससुर उत्पन्न ही नहीं (हुआ है)। उसके द्वारा कहा गया—हे ससुर! धर्महीन मनुष्य का मनुष्यभव प्राप्त किया हुआ भी प्राप्त नहीं किया हुआ (अप्राप्त) ही है, क्योंकि सत्-धर्म की क्रिया के द्वारा (मनुष्य) भव सफल नहीं किया गया (है) (तो) वह मनुष्य जन्म निरर्थक ही है। उस कारण से तुम्हारा सारा जीवन धर्महीन ही गया, इसलिए मेरे द्वारा कहा गया—मेरे ससुर की उत्पत्ति ही नहीं है। इस प्रकार सत्य बात पर (वह) सन्तुष्ट हुआ और धर्माभिमुख हुआ। फिर पूछा गया – तुम्हार द्वारा सासू की (उम्र) छः मास कैसे कही गई? उसके द्वारा उत्तर दिया गया— सासू को पूछो। सेठ के द्वारा वह पूछी गई। उसके द्वारा भी कहा गया पुत्र की बहू के वचन सत्य हैं, क्योंकि मेरी सर्वज्ञ-धर्म की प्राप्ति में छः माह ही हुए हैं, क्योंकि इस लोक में छः मास पूर्व मैं किसी (की) मृत्यु के प्रसंग में गई। वहाँ उस स्त्री (बहू) के विविध गुण-दोषों की वार्ता हुई।

(वहाँ) एक वृद्धा के द्वारा कहा गया— स्त्रियों के मध्य में इसकी पुत्रवधू श्रेष्ठ है। यौवन की अवस्था में भी वह सासू की भक्ति में लीन (तथा) धर्म-कार्यों में भी अप्रमादी है, गृहकार्यों में भी कुशल (उसके) समान दूसरी नहीं है। इसकी सासू अभागी है ऐसी भक्ति प्रेमी पुत्रवधू द्वारा धर्म-कार्य में प्रेरित किए जाते हुए भी धर्म नहीं करती है। इसको सुनकर बहू के गुणों से प्रसन्न हुई (मेरे द्वारा) उसके मुख से धर्म प्राप्त किया गया। धर्म-लाभ में छः मास हुए। इसलिए पुत्रवधू के द्वारा छः मास कहे गये वह युक्त है।

पुत्र भी पूछा गया, उसके द्वारा भी कहा गया - रात्रि में सिद्धान्त और धर्म के उपदेश में लीन पत्नी के द्वारा संसार में असार के दर्शन से और भोगविलास के परिणाम के दुःखदाई होने से, वर्षा नदी के जल-प्रवाह के समान यौवनावस्था के कारण और देह की क्षणभंगुरता से, जगत में धर्म ही सार (है), इस प्रकार बताया गया। मैं सर्वज्ञ के धर्म का आराधक बना, आज पाँच वर्ष हुए। इसीलिए बहू के द्वारा मुझको लक्ष्य करके पाँच वर्ष कहे गए, वह सत्य है। इस प्रकार कुटुम्ब के लिए धर्म-लाभ की वार्ता से विदुषी पुत्रवधू के यथार्थ वचन को सुनकर लक्ष्मीदास भी ज्ञानी (हुआ) और बुढ़ापे में (उसके द्वारा) भी धर्म पाला गया। उसने सपरिवार सन्मार्ग प्राप्त किया।

अभ्यास-49

अन्वय

करकण्डचरिउ

2.16

पुत्त पुणु उच्चकहाणी णिसुणि । ज विचित्त संपइ संपज्जइ ।
हिएण णीचहो संगु परिकलिवि तेण उच्चेण समउ संगु किउ ।
वाणारसिणयरि मणोहिरामु अरविंदु णामु णराहिउ अत्थि ।
णियमणम्मि संतोसु वहंतउ एक्कहिँ दिणम्मि पारद्धिहे गउ ।
सो जलरहियहिँ अडविहिँ पडिउ, तहिँ भुक्खएँ तण्हएँ विण्णडिउ ।
वणिणा अमिएण विणिम्मिय ताइँ सुहयराइँ फलइँ तहो दिण्णइँ ।
राउ तहो वणिवरहो संतुट्ठउ । घरि जाइवि तहो पसाउ दिण्णउ ।
महंतउ उवयारु जाणएण तेण वणि मंतिपयम्मि णिहियउ ।

घत्ता— विण्णि वि तेय-दिणयर-कलायर णं गुण-गणरयणहँ सीलणिहि गहिरिमाइँ सायर (णं) अणुराएँ तहिँ वसहिँ ।

2.17

ता एक्कहिँ दिणि तेण मंतीवरेण तहो रायहो णंदणु हरिवि ।
आहरणइँ लेविणु तुरिउ दिहिकरासु विलासिणिमंदिरासु गउ ।
वणिणा तहिँ गय मोल्लइँ जण-णयणहँ पियाइँ (आहरणइँ) ताहे समप्पियाइँ ।
पुणु तेण सरय-आगम-ससहरआणणीहे विलासिणीहे कहियउ ।
मइँ णरवईहिँ णंदणु मारिउ, इउ सयलु वि थिररईहिँ कहियउ ।
तं सुणिवि ताइँ सणेहु पभणिउ, एहु कासु वि पयडु मा करेहि ।
एत्तहिँ णिवेण सुउ-अलहंतें, तेण णयरे डिंडिमु देवाविउ ।
जो को वि रायहो णंदणु कहइ, सो वि दविणइँ सहुँ मेइणि लहइ ।

घत्ता— ता केण वि धिट्ठें तुरियएण णरणाहहो अग्गइँ भणिउ । देव तुहु सुउ मइँ उवलक्खिउ । सो णवलइँ मंतिएँ हणिउ ।

तं वयणु सुणेविणु धरणिणाहु सरलबाहु मंतिहे संतुट्ठउ ।
तिहिँ फलहिँ मज्झे मइवरासु एक्कहो फलासु रिणु मइँ णिरहरियउ ।
ईसु अवराह दोण्णि अज्ज वि खम ।
धरणिईसु खणि पसण्णउ हुयउ ।
रायणेहु परियाणिवि मंतिइँ दिव्वदेहु णिवणंदणु अप्पिउ ।
अइ णरेसर परममित्तु होहि । देव मइँ तुहारउ चित्तु कलिउ ।
वणिवयणु सुणेविणु तेण णरवरेण अइपउरु पसाउ पइण्णु ।
जो जणु गुरुआण संगु वहेइ सो हियइच्छिय संपइ लहेइ ।
पुत्तय एह गुणसारणि उच्चकहाणी तुज्झु कहिय ।
हियइँ बुज्झु ।

घत्ता— खेयरइँ हियबुद्धिएँ करकंडु सयलउ कलउ जणाविउ (जाणाविउ) ।
इय णित्तिएँ जो णरु ववहरइ सो णिच्छिउ भूवलउ भुंजइ ।

नोट—यहाँ 'अपभ्रंश काव्य सौरभ' के पाठ 12 का अन्वय करके बताया गया है । इसी पद्धति से 'अपभ्रंश काव्य सौरभ' के पाठ 1, 5, 9, 10, 13, 14, 17 का अन्वय करके जांचने के लिए अकादमी कार्यालय में भिजवायें ।

अभ्यास-50

छंद

छंद के दो भेद माने गए हैं—

1. मात्रिक छंद, 2. वर्णिक छंद

1. **मात्रिक छंद**—मात्राओं की संख्या पर आधारित छंदों को 'मात्रिक छंद' कहते हैं। इनमें छंद के प्रत्येक चरण की मात्राएँ निर्धारित रहती हैं। किसी वर्ण के उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर दो प्रकार की मात्राएं मानी गई हैं— ह्रस्व और दीर्घ। ह्रस्व (लघु) वर्ण की एक मात्रा और दीर्घ (गुरु) वर्ण की दो मात्राएं गिनी जाती हैं—

लघु (ल) (।) (ह्रस्व)

गुरु (ग) (ऽ) (दीर्घ)

मात्राएं गिनने के कुछ नियम हैं—

(i) संयुक्त वर्णों से पूर्व का वर्ण यदि लघु है तो वह दीर्घ/गुरु माना जाता है। जैसे—'मुच्छिय' शब्द में 'च्छि' से पूर्व का 'मु' वर्ण गुरु माना जाएगा।

(ii) जो वर्ण दीर्घस्वर से संयुक्त होगा वह दीर्घ या गुरु माना जायेगा। जैसे – रामे। यहां 'रा' और 'मे' दीर्घ वर्ण हैं। यदि मे को ह्रस्व करना होगा तो 'मॅ' इस प्रकार लिखा जाएगा।

(iii) अनुस्वार-युक्त ह्रस्व वर्ण भी दीर्घ/गुरु माने जाते हैं। जैसे—'वंदेप्पिणु' में 'व' ह्रस्व वर्ण है किन्तु इस पर अनुस्वार होने से यह गुरु (ऽ) माना जाएगा।

(iv) चरण के अन्तवाला ह्रस्व वर्ण भी यदि आवश्यक हो तो दीर्घ/गुरु मान लिया जाता है और यदि गुरु मानने की आवश्यकता न हो तो वह ह्रस्व या दीर्घ जैसा भी हो बना रहेगा।

(v) चन्द्रबिन्दु का मात्रा की गिनती पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे—
देवहुँ। 'हुँ' पर चन्द्रबिन्दु का कोई प्रभाव नहीं है।

2. वर्णिक छन्द—जिस प्रकार मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गिनती होती है उसी प्रकार वर्णिक छन्दों में वर्णों की गणना की जाती है। वर्णों की गणना के लिए गणों का विधान महत्वपूर्ण है। प्रत्येक गण तीन मात्राओं का समूह होता है। गण आठ हैं जिन्हें नीचे मात्राओं सहित दर्शाया गया है—

यगण—। ऽ ऽ

मगण—ऽ ऽ ऽ

तगण —ऽ ऽ।

रगण—ऽ। ऽ

जगण—। ऽ।

भगण—ऽ। ।

नगण —। । ।

सगण—। । ऽ

इस प्रकार वर्णिक छन्दों में वर्ण-संख्या और गणयोजना निश्चित रहती है। यहां निम्नलिखित छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण प्रस्तुत हैं—

मात्रिक छन्द—	1. पद्धडिया	2. सिंहावलोक
	3. पादाकुलक	4. वदनक
	5. दोहा	6. चन्द्रलेखा
	7. आनन्द	8. गाहा
	9. खंडयं	10. मधुभार
	11. दीपक	12. करभकरभुजा
	13. मदनविलास	14. जभेटिया
वर्णिक छन्द—	15. सोमराजी	16. स्रग्विणी
	17. समानिका	18. चित्रपदा
	19. भुजंगप्रयात	20. प्रमाणिका

मात्रिक छन्द

1. पद्धडिया छन्द

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं व चरण के अन्त में जगण (। S ।) होता है।

उदाहरण—

जगण   जगण

। । S । । S S   । । । S ।   । । । । S । ।   । । S । S ।
जसु केवलणाणें जगु गरिट्ठु   करयल-आमलु व असेसु दिट्ठु ।

जगण   जगण

। । S । । । । । । S । S ।   S S । । । । । । । । । S ।
तहों सम्मइ जिणहों पयारविंद   वंदेप्पिणु तह अवर वि जिणिंद ।

सुदंसणचरिउ 1.1 11

अर्थ—जिनके केवलज्ञान में यह समस्त महान जगत हस्तामलकवत् दिखाई देता है, ऐसे सन्मति जिनेन्द्र के चरणारविंदों तथा शेष जिनेन्द्रों की भी वन्दना करके (नयनन्दि अपने मन में विचार करने लगे)।

2. सिंहावलोक छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं तथा चरण के अन्त में सगण (।।S) होता है।

उदाहरण—

सगण   सगण

S । । । । S । । । । । । S   । । S । । S । । S । । S
जं अहिणव-कोमल कमल-करा, बलिमण्डएँ लेवि अणङ्गसरा।

। । S । । । । । । । । । । S S । । S । । । । । । । । S
स-विमाणु पवण-मण-गमण-गउ, देवहुँ दाणवहु भि रणें अजउ।[1]

पउमचरिउ 68.9

---

1. चरणान्त के 'उ' ह्रस्वस्वर को लघु होने पर भी छन्दानुरोध से दीर्घ माना गया है।

अर्थ—अभिनव, सुन्दर कोमल हाथोंवाली अनंगसरा को वह विद्याधर जबर्दस्ती ले गया । पवन और मन के समान गतिवाले विमान में बैठा हुआ वह देवताओं और दानवों के लिए अजेय था ।

3. **पादाकुलक छन्द**

लक्षण— इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं और सर्वत्र लघु होता है ।

उदाहरण—

। ।
सुरणर-विसहर-वर-खयर-सरणु, कुसुम-सर-पहर-हर-समवसरणु ।

।। ।। । । । । । ।।। । ।। ।। । । ।। । । । । । ।। ।। ।
पइसरइ णिवइ पहु सरइ थुणइ, बहु-भव-भव-कयरय-पडलु धुणइ ।

—णायकुमारचरिउ 1.1 1.1

अर्थ— विपुलाचल पर्वत पर पहुंचकर राजा ने तीर्थंकर के उस समोसरण में प्रवेश किया जहां देव, मनुष्य, नाग और विद्याधर विराजमान थे और जो कामदेव के प्रहारों से बचानेवाला था । वहां पहुंचकर राजा श्रेणिक ने महावीर प्रभु को स्मरण करते हुए उनकी स्तुति की और उसके द्वारा अपने जन्म-जन्मान्तर के कर्मों की धूलि को उन्होंने झाड़ डाला ।

4. **वदनक छन्द**

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त में दो मात्राएं लघु (।।) होती हैं ।

उदाहरण—

लघु-लघु लघु-लघु

S S । । । S । S S ।। । । S S । । S । । S । ।
रामे जणणि जं जें आउच्छिय, णिरु णिच्चेयण तक्खणें मुच्छिय ।

। । S S । । ।। ।। S ।। S । S । ।। S । ।S । ।
चमरुक्खेवें हिं किय पडिवायण, दुक्खु दुक्खु पुणु जाय सचेयण ।

—पउमचरिउ 23.4

अर्थ—राम ने जब मां से इस प्रकार पूछा तो वह तत्काल मूर्च्छित हो गयी। चमर धारण करनेवाली स्त्रियों ने हवा की। बड़ी कठिनाई से वह सचेतन हुई।

5. दोहा छन्द

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। पहले व तीसरे में तेरह-तेरह मात्राएं होती हैं और दूसरे व चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएं होती हैं।

उदाहरण

S I I   I I   I I I I I I I   II II S I   I S I
जाणमि वणि गुणगणसहिउ, परजुवईहिँ विरत्तु।
I I   I I   S I I   I II II   I I   S S I   I S I
पर महु अंबुले हियवडउ, णउ चिंतेइ परत्तु।

—सुदंसणचरिउ 8.6.1-2

अर्थ—मैं जानती हूं कि वह वणिग्वर बड़ा गुणवान है और पराई युवतियों से विरक्त है। किन्तु हे माता! मेरा हृदय और कहीं लगता ही नहीं।

6. चन्द्रलेखा छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएं होती हैं व अन्तर्यमक[1] की योजना होती है।

उदाहरण—

I I I I S I S I   I I S I S I   S S I I
वलु वयणेण तेण, सहुँ साहणेण, संचल्लिउ।
S I I S I S I   I I I I I S I   S S I I
णाइ महासमुद्दु, जलयर-रउद्दु, उत्थल्लिउ॥

—पउमचरिउ 40.16.2

अर्थ इन शब्दों से राम सेना के साथ यहां-वहां इस प्रकार चले जैसे रौद्र महासमुद्र ही उछल पड़ा हो।

---

1. चरण के बीच में तुक मिलने को अन्तर्यमक कहा गया है। जैसे—प्रथम चरण में तेण व साहणेण।

7. आनन्द छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में पाँच मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त में लघु (।) आता है।

उदाहरण—

ऽ ।।। ।।।।।
मा रमसु, परिहरसु।

।। ऽ। ऽऽ।
इय छंदु आणदु।

—सुदंसणचरिउ 4.12

अर्थ इससे रमण मत करो, इसे त्याग दो। यह आनन्द छन्द है।

8. गाहा छंद

लक्षण—इसमें दो चरण होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में सत्ताइस मात्राएं होती हैं। प्रथम व तृतीय यतियां शब्द के बीच में आती हैं।

उदाहरण -

।।ऽ।।ऽ। ।ऽ।। ऽ।।ऽऽ ऽ। ।।
मयरद्धयनच्चु नडं,तिउ जंबुकुमारें भेल्लियउ ।

।।ऽ। ऽ। ऽ ऽ।। ऽ।।।।ऽऽ ।।।
बहुवाउ ताउ णं दि,ट्ठउ कट्ठमयउ वाउल्लियउ ।।

—जंबूसामिचरिउ 9.1.5

अर्थ मकरध्वज का नाच नाचती हुई उन वधुओं को जंबुकुमार ने अपने सम्पर्क में लायी हुई काठ की पुतलियों के समान देखा।

9. खंडयं छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में तेरह मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त में रगण (ऽ।ऽ) रहता है।

उदाहरण—

रगण रगण

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । । । । ऽ । । ऽ । ऽ

पहु तउ दंसणकारणं, लहिवि वियप्पइँ मे मणं ।

रगण रगण

। । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । । । । । । ऽ । ऽ

सहुँ तुम्हेहिँ समुच्चयं, चिरभवि कहि मि परिच्चयं ।

—जंबूसामिचरिउ 8.2

अर्थ—प्रभु आपके दर्शनों का हेतु प्राप्त कर मेरे मन में ऐसा विकल्प हुआ है कि आपके साथ कहीं पूर्वभव में विशिष्ट (प्रगाढ़) परिचय रहा ।

10. मधुभार छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में 8 मात्राएँ होती हैं ।

उदाहरण—

। । । । ऽ । । ऽ । । । । ऽ । ।

तिहुवण–रम्महुँ, तो वि ण धम्महुँ ।

ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ।

लग्गहिँ मूढिउ, पाव परूढिउ ।

—सुदंसणचरिउ 6.15

अर्थ इतने पर भी वे मूढ पाप में फँसी हुई, त्रिभुवनरम्य धर्म में मन नहीं लगाती ।

11. दीपक छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में 10 मात्राएँ होती हैं । चरण के अन्त में लघु (।) होता है ।

उदाहरण—

ऽ । । । ऽ ऽ । । । । । । । ऽ ऽ ।

ता हयइँ तूराइँ, भुवणयल–पूराइँ ।

ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ ।

वज्जंति वज्जाइँ, सज्जंति सेण्णाइँ ।

—करकंडचरिउ 3.15

अर्थ—तब नगाड़ों पर चोट पड़ी जिससे भुवनतल पूरित हो गया। बाजे बज रहे हैं और सैन्य सज रहे हैं।

12. **करमकरभुजा छंद**

लक्षण— इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में 8 मात्राएँ होती हैं व चरण के अन्त में लघु-गुरु (। S) होते हैं।

उदाहरण—

S S । । S   S S । । S
भीसावणिया, संतावणिया।
S S । । S   S S । । S
विद्दावणिया, सम्मोहणिया।

— णायकुमारचरिउ 6.6

अर्थ—भयोत्पादिका, सन्तापिका, विद्रावणिका सम्मोहनिका।

13. **मदनविलास छंद**

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में 8 मात्राएँ होती हैं व चरण के अन्त में गुरु-गुरु (S S) होते हैं।

उदाहरण—

S । ।   S S   S । । S S
चंदण –लित्तं, पंडुरगत्तं   ।
S ।   । S S   । । । । S S
खंधे तिसुत्तं, कयसिर छत्तं।

—सुदंसणचरिउ 4.1

अर्थ—(कपिल) चन्दन से लिप्त, गौरवर्ण, कंधे पर त्रिसूत्र (जनेऊ) तथा सिर पर छत्र धारण किए (था)।

14. **जम्भेटिया छंद**

लक्षण— इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में 9 मात्राएँ होती हैं व चरण के अन्त में रगण (S । S) आता है।

उदाहरण—

रगण रगण

ऽ।।ऽ।ऽ ऽ।।ऽ।ऽ
सेसवलीलिया, कीलणसीलिया ।

रगण रगण

।।ऽ ऽ।ऽ ऽ। । ऽ।ऽ
पडुणा दाविया, केण ण माविया ।

—महापुराण, 4.4.1

अर्थ—शैशव की क्रीड़ाशील जो लीलाएँ प्रभु ने दिखायीं वे किसे अच्छी नहीं लगीं ?

वर्णिक छंद

15. सोमराजी छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में 6 वर्ण व दो यगण (।ऽऽ) होते हैं ।

उदाहरण—

यगण यगण यगण यगण

।ऽ ऽ।ऽऽ ।ऽ ऽ ।ऽऽ
णिवो सोयभिण्णो, थिओ जा विसण्णो ।
1 2 3 4 5 6 1 2 3 4 5 6

यगण यगण यगण यगण

।ऽ ऽ । ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ
सुरो को वि धण्णो, णहाओ पवण्णो ।
1 2 3 4 5 6 1 2 3 4 5 6

—करकंडचरिउ 4.16

अर्थ—इस प्रकार शोक से विह्वल विषादयुक्त हुआ राजा जब वहां बैठा था, तभी कोई एक पुण्यवान देव आकाश से वहां आ उतरा ।

16. स्रग्विणी छन्द

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में चार रगण (ऽ।ऽ) और बारह वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

रगण रगण रगण रगण
ऽ । ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ।ऽ
के वि रोमंच - कंचेण संजुत्तया,
1 2 345 678 9101112

रगण रगण रगण रगण
ऽ । ऽ ऽ। ऽऽ। ऽऽ।ऽ
के वि सण्णाह - संबद्ध - संगत्तया ।
1 2 345 678 9101112

रगण रगण रगण रगण
ऽ । ऽऽ। ऽऽ।ऽ ऽ।ऽ
के वि संगाम- भूमीरसे रत्तया,
1 2 345 6789 101112

रगण रगण रगण रगण
ऽ।ऽ ऽ। ऽऽ। ऽऽ।ऽ
सग्विणी -छंद - मग्गेण संपत्तया ॥
123 45 678 9101112

—करकंडचरिउ 3.14

अर्थ—कितने ही रोमांचरूपी कंचुक से संयुक्त थे और कितने ही अपने गात्र पर सन्नाह बांधकर तैयार थे। कितने ही संग्रामभूमिरस से रत होकर स्वर्ग पाने के इच्छित मार्ग से आ पहुंचे। इस कडवक की रचना स्रग्विणी छंद में हुई है।

17. समानिका छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में क्रमशः रगण (ऽ।ऽ), जगण (।ऽ।), गुरु (ऽ), लघु (।) आते हैं व आठ वर्ण होते हैं।

उदाहरण —

रगण जगण गु.ल. रगण जगण गु.ल.
S I S I S I S I S I S I S I S I
मे कणिट्ठु भाइ एक्कु, मंडलं तरम्मि थक्कु ।
1 2 3 4 5 6 7 8 1 23 45 6 7 8

रगण जगण गु.ल. रगण जगण गु.ल
S I S I S I S I S I S I S I S I
वच्छरेसु आउ अज्जु, जाणिऊण तुज्झ कज्जु ॥
1 234 5 6 7 8 1 2 34 5 6 7 8

— जंबूसामिचरिउ 9.17

अर्थ—मेरा एक कनिष्ठ भाई जो तभी से देशान्तर में रहता था, वह आज तेरा विवाह कार्य जानकर (आया है) ।

18. चित्रपदा छंद

लक्षण— इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में दो भगण (S I I) और दो गुरु (S S) होते हैं व आठ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

भगण भगण गु.गु. भगण भगण गु.गु.
S I I S I I S S S I I S I I S S
खेयरु हूयउ कीरो, पव्वयमत्थय-धीरो ।
123 456 7 8 1 234 56 7 8

भगण भगण गु.गु. भगण भगण गु.गु.
S I I S I I S S S I I S I I S S
भोयसएहिँ णभग्गो, कंतहेँ णेहइँ लग्गो ।
1 2345 6 7 8 123 4 56 7 8

— करकंडचरिउ 8.3.1–2

अर्थ—वह खेचर एक पर्वत के मस्तक (शिखर) पर धैर्यवान सुआ हुआ । वह आकाश में उड़ता हुआ अपनी कान्ता के स्नेह में लगकर सैकड़ों भोगों सहित (सुख से रहता हुआ दीर्घकाल तक भोग भोगता रहा) ।

19. भुजंगप्रयात छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में 12 वर्ण और चार यगण (। ऽ ऽ) आते हैं।

उदाहरण—

यगण यगण यगण यगण

। ऽ ऽ । ऽऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
भडो को वि दिट्ठो परिच्छिन्न गत्तो,
12 3 4 56 78 9 10 1112

यगण यगण यगण यगण

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
सदन्ती समन्ती सचिन्धो सघत्तो ।
12 3 45 6 7 8 9 101112

यगण यगण यगण यगण

। ऽ ऽ । ऽऽ। ऽऽ। ऽ ऽ
भडो को वि वावल्ल–भल्लेहिँ भिण्णो,
12 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

यगण यगण यगण यगण

। ऽ ऽ । ऽऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ
भडो को वि कप्पद्दुमो जेम छिण्णो ।
12 3 4 5 67 8 910 11 12

—पउमचरिउ 40.3.2–3

अर्थ—कोई सुभट अपने हाथी, मन्त्री, चिह्न और छत्र के साथ छिन्न-शरीर दिखाई दिया। कोई योद्धा बावल्ल और भालों से विदीर्ण हो गया। कोई भट कल्पवृक्ष की तरह छिन्न हो गया।

20. प्रमाणिका छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में आठ वर्ण क्रमशः जगण (। ऽ ।), रगण (ऽ । ऽ), लघु (।), गुरु (ऽ) आते हैं।

उदाहरण—

जगण रगण ल.गु. जगण रगण ल.गु.

ISIS ISIS ISI SI SIS

पहन्तरे भयङ्करो, झसाल-छिण्ण- कक्करो ।

1234 567 8 1 2 3 4 5 6 78

जगण रगण ल.गु. जगण रगण ल.गु.

ISI SI SIS ISIS ISIS

वलोव्व सिङ्ग-दीहरो, णियच्छिओ महीहरो ।

12 3 4 5 6 78 12 3 4 56 78

—पउमचरिउ 32.3

अर्थ—पथ के भीतर उन्होंने भयंकर झसालों से छिन्न और कठोर महीधर देखा जो बैल के समान शृंगों (सींगों और शिखरों) से दीर्घ था ।

(क) निम्नलिखित पद्यों के मात्राएं लगाकर इनमें प्रयुक्त छन्दों के लक्षण व नाम बताइए —

(1) तओ पेल्लियं झत्ति जाणेण जाणं, गइंदेण अण्ण गईदं सदाणं ।
तुरंगेण मग्गम्मि तुंगं तुरंगं भुयंगं भुयंगेण वेसासु रगं ।
जं. सा. च 4.21.13–14

अर्थ—तब झटपट यान से यान भिड़ गया व हाथी से दूसरा मदमत्त हाथी । मार्ग में तुरंग से ऊँचा (बलिष्ठ तुरंग) वेश्याओं में आसक्त, जार से जार ।

(2) विधति जोह जलहरसरिसा, वावल्लभल्ल-कण्णिय-वरिसा ।
फारक्क परोप्परु ओवडिया, कोंताउह कोंतकरहिं भिडिया ।
जं.सा च. 6.6.7–8

अर्थ योद्धा लोग जलधरों के समान बल्लम, भालों व बाणों की वर्षा करते हुए (परस्पर को) बींध रहे थे । फारक्क (शस्त्र को) धारण करनेवाले एक-दूसरे पर टूट पड़े और कुंतवाले कुंत धारणकरनेवाले प्रतिपक्षियों से भिड़ पड़े ।

(3) सरलंगुलिउब्भिवि जंपिएहिं पयडेइ व रिद्धि कुडंबिएहिं ।
देउलहिं विहूसिय सहहिं गाम सग्ग व अवइण्ण विचित्तधाम ।
—जं. सा. च. 1.8 7–8

अर्थ—सरल अंगुलियों को उठा-उठाकर बोलनेवाले अपने कुटुम्बी अर्थात् किसान गृहस्थों के द्वारा जो अपनी ऋद्धि-समृद्धि को प्रकट करता है । देवकुलों से विभूषित वहां के ग्राम ऐसे शोभायमान हैं मानो विचित्र भवनोंवाले स्वर्ग अवतीर्ण हो गए हों ।

(4) इय संसारें जं पियं निसुणेंवि जणणी जंपियं ।
चउगइदुक्खनियामिणा भणिय जंबूसामिणा ।
— जं. सा. च 8 8.1–2

अर्थ—इस संसार में जो प्रिय है, जननी के वैसे कथन को सुनकर चारों गतियों के दुःख का नियमन करनेवाले जंबूस्वामी ने कहा ···· ।

(5) परियणहिहयहरणु गुणगणणिहि दहछहसयलु लहु य अविचलदिहि ।
णहमणिकिरणअरुणकयणहयलु भुयबल-तुलिय-सवल-दिसगयउलु ।

—सु. च. 1.5 1–8

अर्थ—वह अपने परिजनों के हृदय को हरण करनेवाला तथा गुणों के समूह का निधान था । वह षोडश कलाओं से संयुक्त तथा सहज ही अविचल धैर्यधारण करता था । वह श्रेणिक राजा अपने नखरूपी मणियों की किरणों से नभस्थल को लाल करता था और अपने बाहुबल से सबल दिग्गजों के समूह को तोलता था ।

(6) केण णिव्वाणसेलो समुच्चालिओ, केण मूढेण कालाणलो जालिओ ।
को णिरुंभेइ चंडंसुणो संदणं, को विमाणं पि एयं मणाणंदणं ।।

—सु. च. (11.14.9–10)

अर्थ—किसने सुमेरु पर्वत को चलायमान किया है ? किस मूर्ख ने कालानल को प्रज्ज्वलित किया है ? कौन ऐसा है जो सूर्य के रथ को रोके ? और कौन है वह जो इस मनानन्ददायी विमान को रोके ?

(7) गुणजुत्त भो मित्त ।
जाईहिं पयईहिं । —सु. च. 4.12.1–2

अर्थ—हे गुणवान मित्र, उक्त प्रकृतियों, सत्वों ..... ।

(8) पहुत्तो अणंतो पुलिंदेण जित्तो ।
भएणं पणट्ठो णिओ नाम रुट्ठो ।। —सु. च. 10.5.6–7

अर्थ—अनंत सेनापति वहां पहुंचा । किन्तु पुलिन्द ने उसे जीत डाला । अनंत भयभीत होकर भाग आया तब राजा रुष्ट हुआ ।

(9) देउल देउ वि सत्थु गुरु, तित्थु वि वेउ वि कव्वु ।
वच्छु जु दीसइ कुसुमियउ, इंधणु होसइ सव्वु ।।

—परमात्मप्रकाश, 130

अर्थ—देवल (देवकुल/जिनालय), देव (जिनदेव) भी शास्त्र, गुरु, तीर्थ भी, वेद भी, काव्य, वृक्ष जो कुसुमित दिखायी पड़ता है वह सब ईंधन होगा ।

(10) दिण्णानन्द-भेरि, पडिवक्ख खेरि खरवज्जिय ।
णं मयरहर-वेल, कल्लोलबोलं, गलगज्जिय ।।

पउमचरिउ 40 16.3

अर्थ—शत्रु को क्षोभ उत्पन्न करनेवाली आनन्दभेरी बजा दी गयी मानो लहरों के समूहवाली समुद्र की बेला ही गरज उठी हो ।

(ख) निम्नलिखित पद्यों के मात्रा लगाकर इनमें प्रयुक्त छंदों के लक्षण एवं नाम बताइए—

(1) उवयागउ भावसरूवें भुंजइ कम्मासएँण विणु ।
संसाराभावहो कारणु भाउ जि छड्डिय परदविणु ।।

—जं सा च. 9.1.18–19

अर्थ—ज्ञानी इस परिस्थिति को उदयागत भावों (कर्मों) के अनुसार (नवीन) कर्मास्रव के बिना, परद्रव्य (में आसक्ति) को छोड़कर भोगता है, और यही भाव (विवेक) संसाराभाव अर्थात् मोक्ष का कारण है ।

(2) ता तहिं मंडवें थक्कयं दिट्ठं सेट्ठिचउक्कयं ।
तोरणदारपराइया तेहिं मि ते वि विहाइया ।।

—जं. सा. च. 8.9.1–2

अर्थ—तब (इन दोनों पुरुषों ने वहां जाकर) मंडप में बैठे हुए चारों श्रेष्ठियों को देखा और तोरणद्वार पार करते ही वे दोनों भी उन श्रेष्ठियों के द्वारा देखे गए ।

(3) पइँ विणु को हय-गयहुँ चडेसइ, पइँविणु को भिन्दुएँण रमेसइ ।
पइँ विणु को पर-वलु भञ्जेसइ, पइँविणु को महँ साहारेसइ ।।

—पउमचरिउ 23.4.8, 10

अर्थ –तुम्हारे बिना अश्व और गज पर कौन चढ़ेगा ? तुम्हारे बिना कौन गेंद से खेलेगा ? तुम्हारे बिना कौन शत्रु-सेना का नाश करेगा ? तुम्हारे बिना कौन मुझे सहारा देगा ?

(4) कहिं जि दिट्ठ-छारया, लवन्त मत्त-मोरया ।
कहिं जि सीह-गण्डया, धुणन्त पुच्छ दण्डया ।।

—पउमचरिउ 32.3.5-6

अर्थ—कहीं पर भालू दिखायी दे रहा थे और कहीं पर बोलते हुए मस्त मोर । कहीं पर अपने पूँछ-रूपी दण्डों को धुनते हुए सिंह और गैंडे थे ।

(5) उम्मोहणिया सखोहणिया ।
अक्खोहणिया उत्तारणिया ।

—णायकुमारचरिउ 6 6.11-12

अर्थ—उम्मोहणिका, संक्षोभणिका, अक्षोभणिका, उत्तरणिका ।

(6) नंदणो मुणेवि माय कारणेण केण आय ।
आनमसियं पयाइँ पुच्छइ त्ति अम्मि काइँ ।

—ज. सा च. 9.17.5-6

अर्थ—किसी कारण से मां को आयी जानकर पुत्र ने मां के पैरों को नमस्कार करके पूछा - मां क्या बात है ?

(7) कुंटिउ मंटिउ मोट्टिउ छोट्टिउ ।
बहिरिउ अंधिउ अइदुग्गंधिउ ।।

—सु च. 6 15 9-10

अर्थ वे ठूंठी, लंगडी, मोटी, छोटी बहरी, अंधी अतिदुर्गन्धी होती हैं ।

(8) अच्छइ जाव सुहेणं भुंजइ भोय चिरेणं ।
ताव सधम्मु सुसीलो मत्तयकुंजरलीलो ।।

—करकण्डचरिउ 8.3.3-4

अर्थ—सुख से रहता हुआ दीर्घकाल तक भोग भोगता रहा । तब एक, धर्मवान, सुशील, मत्त कुंजर के समान लीला करता हुआ .... ।

(9) ता अमियवेएण अमरेण हूएण ।
थियएण सग्गमि चिंतियउ हिययम्मि ।।

—करकण्डचरिउ 5.11.1-2

अर्थ—तब जो अमितवेग देव हुआ था उसने स्वर्ग में स्थित होते हुए हृदय में चिन्ता की।

(10) सयलु वि जणु उम्माहिज्जन्तउ खणु वि ण थक्कइ णामु लयन्तउ।
उव्वेलिज्जइ गिज्जइ लक्खणु मुरव-वज्जें वाइज्जइ लक्खणु ।
—पउमचरिउ 24.1.1–2

अर्थ—समस्त जन उत्पीड़ित होता हुआ, नाम लेता हुआ एक क्षण भी नहीं थकता। लक्खण (लक्ष्मण) को उछाला जाता, गाया जाता, मृदंग वाद्य में बजाया जाता।

(ग) **निम्नलिखित पद्यों के मात्राएं लगाकर इनमें प्रयुक्त छंदों के नाम एवं लक्षण बताइए—**

(1) रिउमारणिया णिद्दारणिया ।
महिदारणिया णहचारणिया ।
— णायकुमारचरिउ 6.6.14–15

अर्थ—रिपुमारणिका, निर्दारणिका, महिदारणिका, णभचारणिका।

(2) तं जो घोट्टइ सो णरु लोट्टइ।
गायइ णच्चइ सुयणइँ णिंदइ।
—सुदंसणचरिउ 6.2.5–6

अर्थ—इसे जो पीता है, वह मनुष्य (उन्मत्त होकर) लोटता है, गाता है, नाचता है, सज्जनों की निन्दा करता है।

(3) जसु रूउ णियंतउ सहसणेत्तु हुउ विभियमणु णउ तित्ति पत्तु।
जसु चरणंगुट्ठें सेलराइ टलटलियउ चिरजम्माहिसेइ ।
—सुदंसणचरिउ 1.1.5–6

अर्थ—जिनके रूप को देखते हुए इन्द्र विस्मित मन हो गया और तृप्ति को प्राप्त न हुआ। जिनके जन्माभिषेक के समय चरणांगुष्ठ से शैलराज सुमेरु भी चलायमान हो गया।

(4) आणंदरूउ मणजोयहों जइ तो रमणिजोउ पवरु ।
विणु मोक्खें सोक्खघव,क्कउ पच्चक्खु जि पावेइ णरु ।

—जंबूसामिचरिउ 9.2.12–13

अर्थ—यदि मनोयोग (अर्थात् चित्तवृत्तियों का निरोध व ध्यानसमाधि) का स्वरूप आनंदमय है तो उससे श्रेष्ठ तो रमण योग है जिससे पुरुष मोक्ष के बिना ही प्रत्यक्ष सुख की अनुभूति पा लेता है ।

(5) ता कुलकारिणा णायवियारिणा ।
सुहहलसाहिणा भणियं णाहिणा ।

—महापुराण 4.8.1–2

अर्थ—तब न्याय का विचार करनेवाले शुभफल के वृक्ष कुलकर स्वामी (नाभिराज) ने कहा ।

(6) कज्जलसामलो उडुदसणुज्जलो ।
पत्तउ भीयरो तमरयणीयरो ।

—महापुराण 4.16.1–2

अर्थ—तब काजल की तरह श्याम, नक्षत्ररूपी दांतों से उज्ज्वल भयंकर तमरूपी निशाचर प्राप्त हुआ ।

(7) गुणाणं णिवासो दुहाणं विणासो ।
विरायं हणंतो सरायं जणंतो ।

—करकण्डचरिउ 4 16 3–4

अर्थ—वह गुणों का निवास और दुःखों का विनाश था एवं विराग का हन्ता और सराग का जनक ।

(8) मंति चित्तस्स अच्चंतु सो भाविओ, सूरतावेण वाएण णे पाविओ ।
भूमिगेहम्मि जा बद्धओ अच्छए, सग्गिणीछंदकीरो वि तं पेच्छए ।

—करकण्डचरिउ 8.2.7–8

अर्थ—मंत्री के चित्त को वह अत्यन्त भाया । उसके तेज को सूर्यताप तथा वेग को वायु भी नहीं पाते थे । जब वह भूमिगृह (घुड़साल)में बाँधा हुआ रहता था तब एक सुआ उसे स्वच्छन्द भाव से देखा करता था।

(9) कहिं जि भीमकन्दरो झरन्त-णीर-णिज्झरो ।
कहिं जि रत्तचन्दणो तमाल-ताल-वन्दणो ।

—पउमचरिउ 32.3.3-4

अर्थ—जो कहीं पर भीम गुफाओंवाला और कहीं पर झरते हुए जल से युक्त निर्झरवाला था। कहीं पर रक्त, चंदन, तमाल, ताल और पीपल के वृक्ष थे।

(10) पीवरदीहरबाहो सुंदरु गोहणणाहो ।
तेत्थ वणम्मि पवण्णो चेट्ठइ जाव णिसण्णो ।

—करकण्डचरिउ 8.3.5-6

अर्थ—प्रबल और दीर्घ भुजाओं से युक्त, एक सुन्दर गोधननाथ (ग्वाला) उस वन में आया वह जब वहां बैठा हुआ था।

(घ) निम्नलिखित पद्यों के मात्राएं लगाकर इनमें प्रयुक्त छंदों के लक्षण एवं नाम बताइए—

(1) तहों सुह लक्खण भायणा गुरुदेवच्चणकयमणा ।
सिंगारासयसिप्पिणी पढमकलत्तं रुप्पिणी ।

—जंबूसामिचरिउ 8.4.1-2

अर्थ – उसकी शुभलक्षणों की भाजन, गुरु व देवता के अर्चन में मन लगानेवाली तथा शृंगार के आशय की शिल्पिनी अर्थात् शृंगार के मर्म को समझने में दक्ष ऐसी रुक्मिणी नाम की प्रधान रानी है।

(2) णव णीलुप्पल णयण-जुय सोएं णिरु संतत्त ।
पवणपुत्त पइं विरहियउ कवणु पराणइ वत्त ।

—पउमचरिउ 54.1.3-4

अर्थ—यह देखकर नवनील कमल की तरह नेत्रवाली शोक से संतप्त सीतादेवी अपने मन में सोचने लगी कि पवनपुत्र तुम्हे छोड़कर अब कौन मेरी कुशल वार्ता ले जा सकता है ?

(3) भवयत्तु जेट्ठु तुहुँ पवरभुओ लहुवारउ तहिं भवएउ हुओ ।
तवचरणु करिवि आउसि खइए उप्पण्ण मरेवि सग्गे तइए ।।

—जंबूसामिचरिउ 3.5.7–8

अर्थ—तू जेठा भाई भवदत्त था और तेरा छोटा भाई उत्तम भुजाओंवाला भवदेव था । तपश्चरण करके आयुष्य क्षय होने पर मरकर तीसरे स्वर्ग में उत्पन्न हुए ।

(4) तं सुणिवि तहों वयणु मुणि भणइ हयमयणु ।
तहों कहइ वरधम्मु जं करइ सुहजम्मु ।

—करकण्डचरिउ 9.20.1–2

अर्थ— करकण्ड का यह वचन सुनकर कामविजयी मुनि बोले और उन्हें ऐसा उत्तम धर्म समझाने लगे जिससे जन्म सफल हो ।

(5) जय थियपरिमियणहकुडिलचिहुर जय पयणयजणवयणिहयविहुर ।
जय समय समयमयतिमिरमिहिर जय सुरगिरिथिर मयरहरगहिर ।

—णायकुमारचरिउ 1.11 3–4

अर्थ—जिनके नख और कुटिल केश स्थित और परिमित हैं ऐसे हे भगवान आपकी जय हो । जय हो आपकी जो चरणों में नमस्कार करनेवाले जन-समूह की विपत्तियों का अपहरण करते हैं ।

(6) सा वि जोइया णिवेण, णाणसायरं गएण ।
तम्मि दिट्ठु हेमकंतु अंगुलीउ णामवंतु ।

— करकण्डचरिउ 1.7.5–6

अर्थ— तब ज्ञान के सागर तक पहुँचे हुए उस राजा ने उस पिटारी को जोहा (ध्यान से देखा) उसमें देखा कि स्वर्णमयी अंगुली की मोहर लगी है जिस पर नाम भी लिखा है ।

(7) अइचडुलु घणवडलु ।
गडयडइ णं पडइ ।

— सुदंसणचरिउ 11.22 5–6

अर्थ—उसके कारण घनपटल अत्यन्त चंचल होकर गड़गड़ाने लगा, मानो वह पृथ्वी पर गिर रहा हो।

(8) वियसियवत्तं णेहलणेत्तं ।
इय गुणजुत्तं दिट्ठं मित्तं ।।

—सुदंसणचरिउ 4.1.8

अर्थ—प्रसन्नमुख और स्नेहिल नेत्रोंवाला था। इन सब गुणों से युक्त देखकर सुदर्शन ने उसे अपना मित्र बना लिया।

(9) चावहत्था पसत्था रणे दुद्धरा धाविया ते णरा चारुचित्ता वरा।
के वि कोवेण वावंति कप्पंतया के वि उग्गिण्णखग्गेहिं दिप्पंतया ।।

— करकंडचरिउ 3.14.5-6

अर्थ वे प्रशस्त रण में दुर्द्धर नर प्रसन्नचित्त होकर हाथों में धनुष लिये दौड़े। कितने ही कोप से कांपते हुए और कितने ही उघाड़े हुए खड्गों से दीप्तिमान होते हुए दौड़े।

(10) उब्भिय कणयदण्ड, धुव्वन्त धवल, धुअ-धयवड।
रसमसकसमसन्त तडतडयडन्त, कर गडघड ।।

—पउमचरिउ 40 16.4

अर्थ - स्वर्णदण्ड उठा लिये गए। धवल ध्वजपट उड़ने लगे। गजघटाएँ रसमसाती और कसमसाती हुई तड़तड़ करने लगी।

अभ्यास-51

अलंकार

काव्य की शोभा में वृद्धि करनेवाले तत्त्व का नाम अलंकार है। काव्य को आकर्षक एवं हृदयग्राही बनाने के लिए अलंकारों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। अलंकार के योग से उसका सौन्दर्य द्विगुणित हो जाता है। दूसरे शब्दों में, अलंकार रस अथवा भाव के उपकार हैं। सामान्यतः इसके दो भेद माने जाते हैं—

1. शब्दालंकार और 2. अर्थालंकार

1. **शब्दालंकार**—शब्दालंकार वहां होते हैं जहां कथन का चमत्कार उसमें प्रयुक्त शब्दों की आवृत्ति पर निर्भर करता है। यदि उक्ति में से सम्बद्ध शब्दों को हटाकर उनके पर्यायवाची शब्द रख दिए जाएँ तो उसका चमत्कार ही समाप्त हो जाता है। अतः शब्द पर आधृत होने के कारण इन्हें शब्दालंकार कहा जाता है। जैसे अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि।

2. **अर्थालंकार**—अर्थालंकार वहां होते हैं जहां अलंकार का सौन्दर्य शब्द पर निर्भर न कर उसके अर्थ पर निर्भर करता है। किसी शब्द के स्थान पर उसके पर्यायवाची शब्द का प्रयोग कर दिए जाने पर उसका अलंकारत्व यथावत बना रहता है। अतः ऐसे अलंकार को अर्थालंकार की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। जैसे—उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, आदि।

शब्दालकार

1. **अनुप्रास अलंकार**—पद और वाक्य में वर्णों की आवृत्ति का नाम अनुप्रास है। अनुप्रास का अर्थ होता है बारम्बार निकट रखना अर्थात् वर्णों का बार-बार प्रयोग।

उदाहरण—

हा-हा णाह सुदंसण सुंदर सोमसुह।
सुअण सलोण सुलक्खण जिणमइअंगरुह।

—सुदंसणचरिउ 8.41.1

अर्थ—हाय-हाय नाथ, सुदर्शन, सुन्दर, चन्द्रमुख, सुजन, सलोने, सलक्षण जिन-मति के पुत्र ।

व्याख्या—उपर्युक्त उदाहरण में 'स' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है । अतः यह अनुप्रास का उदाहरण है ।

2. **यमक अलंकार**—जहां पद एक-से हों किन्तु उनमें अर्थ भिन्न हो वहां यमक अलंकार होता है ।

उदाहरण—

सामिणो पियंकराए, सुंदरो पियकराए । —वड्ढमाणचरिउ 2.3.2

अर्थ—रानी प्रियंकरा से स्वामी के लिए प्रियकारी सुन्दर (पुत्र उत्पन्न हुआ) ।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में 'पियंकराए' पद दो बार भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है । एक स्थल पर तो उसका अर्थ प्रियकारी अर्थात् मन, वचन एवं कार्य से प्रिय करनेवाला तथा दूसरा 'पियंकराए' पद उसकी रानी का नाम 'प्रियंकरा' बतलाता है ।

3. **श्लेष अलंकार**—जब वाक्य में एक ही शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलें तो ऐसे अनेकार्थी शब्द में श्लेष अलंकार होता है ।

उदाहरण—

बहुपहरेहिं सूरु अत्थमियउ अहवा काइं सीसए ।
जो वारुणिहि रत्तु सो उग्गु वि कवणु ण कवणु णासए ।

—सुदंसणचरिउ 5.8

अर्थ—बहुप्रहरों के बाद सूर्य अस्तमित हुआ, (मानो) बहुत प्रहारों से शूरवीर नाश को प्राप्त हुआ । अथवा क्या कहा जाय जो **वारुणि** (पश्चिम दिशा) से रक्त हुआ, **वह वारुणि** (मदिरा) में रतपुरुष के समान उग्र होकर भी कौन-कौन नष्ट नहीं होता ।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में 'पहरेहिं' व 'वारुणि' शब्द में श्लेष है क्योंकि इनमें दो अर्थ निहित हैं ।

4. **उपमा अलंकार**—जहां उपमेय और उपमान में भेद होते हुए भी उपमेय के साथ उपमान के सादृश्य का वर्णन हो वहां उपमा अलंकार होता है अर्थात् उपमेय और उपमान में समानता ध्वनित होती है। उपमा में चार तत्वों का होना आवश्यक है—

1. उपमेय, 2. उपमान, 3 समान धर्म और 4. वाचक शब्द।

(क) **उपमेय**—वर्ण्यविषय अर्थात् 'प्रस्तुत' उपमेय कहलाता है।
जैसे—'मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।'—इस वाक्य में वर्ण्यविषय मुख अतः मुख उपमेय कहा जाएगा।

(ख) **उपमान**—उपमान को 'अप्रस्तुत' भी कहा जाता है। मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है—इस वाक्य में मुख को चन्द्रमा की उपमा दी गई है अतः चन्द्रमा उपमान कहा जाएगा।

(ग) **साधारण धर्म**—वह गुण या क्रिया जो उपमेय और उपमान दोनों में विद्यमान हो। मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है—इस वाक्य में 'सुन्दर' साधारण धर्म है।

(घ) **वाचक शब्द**—जो शब्द उपमेय और उपमान की समानता ध्वनित करे वह वाचक शब्द कहा जाता है। जैसे—समान, सरिस आदि।
अपभ्रंश में 'व' वाचक शब्द का प्रयोग होता है।

उदाहरण—
स वि धरिय एंति णारायणेण, वामद्धें गोरि व तिणयणेण।

पउमचरिउ 31.13 4

अर्थ—उसे भी (शक्ति को भी) लक्ष्मण ने उसी प्रकार धारण कर लिया जिस प्रकार शिवजी के द्वारा वामार्द्ध में पार्वती धारण की जाती है।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में लक्ष्मण द्वारा शक्ति धारण करने को शिव द्वारा पार्वती धारण करने के समान बताया गया है अतः यहां उपमा अलंकार है।

5. **रूपक अलंकार**—रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाता है अर्थात् उपमेय को ही उपमान बता दिया जाता है।

उदाहरण—

णामेण णंदिवद्धणु सुत्तेउ, दुण्णय-पण्णय गण-वेणतेउ।

—वड्ढमाणचरिउ 1.5.1

अर्थ—उस तेजस्वी राजा का नाम नंदिवर्द्धन था जो दुर्नीतिरूपी पन्नगों के लिए गरुड़ ही था।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में दुर्नीति पर पन्नगों का आरोप किया गया है अतः रूपक अलंकार है।

6. **उत्प्रेक्षा अलंकार**—जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना अर्थात् उत्कृष्ट कल्पना का वर्णन हो वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। अपभ्रंश में इव, णं, णावइ आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरण—

तो सोहइ उग्गमिउ णहे ससिअद्धउ विमलपहालउ।
णावइ लोयहँ दरिसियउ णहसिरिए फलिहकच्चोलउ।

—सुदंसणचरिउ 8.17 घत्ता

अर्थ—उस समय आकाश में अपनी विमलप्रभा से युक्त अर्द्धचन्द्र उदित होकर ऐसा शोभायमान हुआ मानो नभश्री ने लोगों को अपना स्फटिक कटोरा दिखलाया हो।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में अर्द्धचन्द्र में 'स्फटिक-कटोरे' की सम्भावना के कारण व 'णावइ' वाचक शब्द के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है।

7. **विभावना अलंकार**—जहां कारण के अस्तित्व के बिना कार्य की सिद्धि हो वहां विभावना अलकार होता है।

उदाहरण—

विणु चावें विणु विरइय-थाणें, विणु गुणेहिं विणु सर-संधाणें।
विणु पहरणेहिं तो वि जज्जरियउ, ण गणइ किं पि पुणव्वसु जरियउ।

—पउमचरिउ 68.8.7-8

अर्थ—धनुष के बिना, स्थान के बिना, डोरा और शरसन्धान के बिना, अस्त्र के बिना ही वह इतना आहत हो गया कि जर्जर हो उठा। दग्ध होकर पुनर्वसु कुछ भी नहीं गिन रहा था।

व्याख्या—यहां बिना शस्त्रास्त्र व प्रहार के पुनर्वसु को आहत दिखाया गया है। अतः यहां विभावना अलंकार है।

8. **विरोधाभास अलंकार**—वस्तुतः विरोध न रहने पर भी विरोध का आभास ही विरोधाभास है।

उदाहरण—

साव-सलोणी गोरडी नक्खी क वि विसगंठि।
भडु पच्चलिओ सो मरइ जासु न लग्गइ कंठि॥

—हेमचन्द्र

अर्थ—सर्व सलोनी गोरी कोई नोखी विष की गांठ है। भट प्रत्युत (बल्कि) वह मरता है जिसके कंठ में (से) वह नहीं लगती।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में वस्तुतः विरोध न होते हुए भी विरोधी बात होने का आभास हो रहा है इसलिए यहां विरोधाभास अलंकार है।

9. **सन्देह अलंकार**—जहां उपमेय में उपमान होने का सन्देह किया जाए वहां सन्देह अलंकार होता है।

उदाहरण—

किं तार तिलोत्तम इंदपिया, किं णायवहू इह एवि थिया।
किं देववरंगण किं व दिही, किं कित्ति अमी सोहग्गणिही।

सुदंसणचरिउ 4.4.1–2

अर्थ—(मनोरमा का परिचय) यह तारा है या तिलोत्तमा या इन्द्राणी? या कोई नागकन्या यहां आकर खड़ी हो गयी है अथवा यह कोई उत्तम देवांगना है अथवा यह स्वयं धृति है या कृति या सौभाग्य की निधि?

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में मनोरमा को देखकर सन्देह की स्थिति बनी हुई है कि यह कौन है—तारा है, तिलोत्तमा है, इन्द्राणी है अथवा नागकन्या है? इसलिए यहां सन्देह अलंकार है।

10 **भ्रांतिमान अलंकार**—नितान्त सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान की भ्रांति ही भ्रांतिमान अलंकार है।

उदाहरण—

कहिं वि क वि अरुणकरचरण किय पयडए ।
भमरगण मिलिवि तहिं णलिणमण णिवडए ।

—सुदंसणचरिउ 7.18.5-6

अर्थ—कहीं कोई अपने लाल हाथ और पैर प्रकट करने लगी और भ्रमरगण उन्हें कमल समझकर एकत्र हो पड़ने लगे।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्यांश में सुन्दरियों के हाथों व पैरों को देखकर भौंरे भ्रमवश उन्हें कमल समझ रहे हैं अतः यहां भ्रांतिमान अलंकार है।

(क) निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम तथा लक्षण बताते हुए व्याख्या कीजिए—

1. हउँ कुलीणु अवगण्णियउ उच्छलंतु अकुलीणउ वुत्तउ ।
रुहिरणइहें धूलीरएण णं इय चिंतेवि अप्पउ खित्तउ ।।

—सुदंसणचरिउ 9.6 घत्ता

अर्थ—मैं कुलीन (पृथ्वी में लीन) होने पर अपमानित होता हूं और ऊपर उछलते हुए अकुलीन (पृथ्वी से संलग्न) कहलाता हूं। ऐसा सोच कर मानो धूलिरज ने अपने को उस रुधिर की नदी में फैंक दिया।

2. णमंसेवि वीरं गइंदे णरिंदो वलग्गो णवे मेहि णं पुण्णिमिंदो ।
रहा जाण जंपाण भिच्चा तुरंगा पयट्टा समुद्दे चला णं तरंगा ।।

—सुदंसणचरिउ 1.6.7–8

अर्थ—वह वीर भगवान को नमस्कार करके एक गजेन्द्र पर आरूढ़ हुआ मानो नवीन मेघ पर पूर्ण चन्द्र चमक रहा हो। उस समय रथ, यान, झंपान, भृत्य और तुरंग इस प्रकार चल पड़े जैसे समुद्र में तरंगें चल रही हों।

3. जिणवरघरघंटाटणटणंतु, कामिणीकरकंकण खणखणंतु ।

—महापुराण 46.2.3

अर्थ—जिनवर के मन्दिरों के घण्टों की टनटन ध्वनि तथा कामिनियों के कंगनों की खनखन ध्वनि हो रही है।

4. तत्थत्थि सिद्धत्थु णरणाहु सिद्धत्थु ।

—वड्ढमाणचरिउ 9.3.1

अर्थ—(उस कुण्डपुर में) समस्त अर्थों को सिद्ध कर लेनेवाला सिद्धार्थ नामक राजा राज करता था।

5. अवि य-अकत्तिए निरंतरंतरं, हुयं निरब्भमंबरंबरं ।
अपाउसे असारयं रयं, धरायले व्व निक्खयं खयं ।।

—जंबूसामिचरिउ 4.8.12–13

अर्थ—और भी-कार्तिक नहीं होने पर भी आकाश निरतिशयरूप से अभ्रमुक्त हो गया, तथा वर्षाकाल नहीं होने पर भी असार (क्षुद्र) रज मानो धरातल में पूर्ण उपराम को प्राप्त हो गया।

6. किं लक्खणु जुं पाइय कव्वहों, किं लक्खणु वायरणहों सव्वहों।
किं लक्खणु जं छन्दे णिदिट्ठउ, किं लक्खणु जं भरहें गविट्ठउ।

—पउमचरिउ 44.3.2-3

अर्थ—(लक्ष्मण के आगमन की सूचना पाकर सुग्रीव का प्रतिहारी से प्रश्न) क्या वह लक्षण जो प्राकृत काव्य में होता है? क्या वह लक्षण जो व्याकरण में होता है? क्या वह लक्षण जो छन्दशास्त्र में निर्दिष्ट है? क्या वह लक्षण जो भरत की गोष्ठी में काम आता है?

7. कवि चाहइ सारुणकोमलाहँ, अंतरु रत्तुप्पल करयलाहँ।
तहिं एत्तहे तेत्तहे भमरु जाइ, कत्थइं छप्पउ वि दुचित्तु माइ।

—सुदंसणचरिउ 7.14.4-5

अर्थ—कोई अरुण और कोमल रक्तोत्पलों और अपने करतलों में भेद जानना चाहती थी। वह भ्रमर कभी इस ओर, कभी उस ओर जा रहा था। इस प्रकार कहीं षट्पद भी दुविधा में पड़ा प्रतीत होता था।

8. रिसि रुक्ख व अविचल होवि थिय किसलए परिवेढावेढि किय।
रिसि रुक्खव तवणताव तविय, रिसि रुक्ख व आलवाल रहिय।

— पउमचरिउ 33 3.4-6

अर्थ— मुनि वृक्ष की तरह अविचल होकर स्थित हो गए, किसलयों ने उन्हें ढक लिया। मुनि वृक्ष के समान तपन के ताप से सन्तप्त थे, मुनि वृक्ष की तरह आलबाल परिग्रह/क्यारी से रहित थे।

9. कुमअसंड दुज्जणसमदरिसिअ मित्तविणासणेण जे वियसिय।

—सुदंसणचरिउ 8.17.5

अर्थ—कुमुदों के समूह दुर्जनों के समान दिखाई दिये। चूंकि वे मित्र (सूर्य या सुहृद) का विनाश होने पर भी विकसित हुए।

10. झाणग्गिभूइकयकम्मबंधु भव्वयणकमलकंदोट्टबंधु ।

—जंबूसामिचरिउ 1.1.8

अर्थ—जिन्होंने अपने ध्यानरूपी अग्नि से कर्मबन्ध को भस्मसात कर दिया है और जो भव्यजनोंरूपी कमल-समूह के लिए सूर्य के समान है ।

(ख) निम्नलिखित काव्यांशो में प्रयुक्त अलंकारों के नाम तथा लक्षण बताते हुए व्याख्या कीजिए -

1. जय सयलगिवग्गमणसंकर सिद्धि पुरंधिय संकर संकर ।

—वड्ढमाणचरिउ 10.3.4

अर्थ—समस्त प्राणीवर्ग के मन को शान्ति प्रदान करनेवाले हे देव ! आपकी जय हो । सिद्धिरूपी पुरन्ध्री को सुखी करनेवाले हे शंकर आपकी जय हो ।

2. णट्ठु कुरंगु व वारणबारहो, णट्ठु जिणिदु व भव संसारहो ।

—पउमचरिउ 29.11.2

अर्थ—लक्ष्मण को देखकर कपिल ब्राह्मण की वही दशा हुई जो शेर को देखकर मृग की होती है या जिनेन्द्र को देखकर संसारी की ।

3. अज्जु अयाले वणासइरिद्धी अहिणवदलफलकुसुमसमिद्धी ।
अज्जु सुयंधु एहु सीयलु घणु, वाउ वाइ जं चूरियकाणणु ।।

—जंबूसामिचरिउ 1.13.3-4

अर्थ—आज अकाल अर्थात बिना ऋतु के ही समस्त वनस्पति हरी-भरी हो उठी है और वह अभिनव पत्रों, पुष्पों व फलों से समृद्ध हो गयी है। आज ऐसा सुगन्धित शीतल व सघन वायु बह रहा है जिसने सारे कानन को पूर दिया है । भगवान महावीर का समोशरण विपुलाचल पर्वत पर आया और वनमाली ने आकर राजा श्रेणिक को समाचार दिया ।

4. णं काममल्लि णं कामवेल्लि, णं कामहो केरी रहसुहेल्लि ।
णं कामजुत्ति णं कामवित्ति, णं कामथत्ति णं कामसत्ति ।

—णायकुमारचरिउ 1.15.2–3

अर्थ—वह कन्या तो जैसे काम की भल्ली, काम की लता, काम की सुखदायक रति, काम की युक्ति, काम की वृत्ति, काम की देरी एवं काम की शक्ति जैसी दिखाई देती है ।

5. किं पीइ रई अह खेयरिया, किं गंग उमा तह किण्णरिया ।
आयण्णेवि जंपइ ता कविलो, हे सुहि मत्तउ किं तुहुँ गहिलो ।।

सुदंसणचरिउ 4.4.5–6

अर्थ—क्या यह प्रीति है, या रति, या खेचरी ? क्या यह गंगा, उमा अथवा कोई किन्नरी है ? अपने मित्र की यह बात सुनकर कपिल बोला हे मित्र तुम नशे में हो, या किसी ग्रह के वशीभूत ?

6. न मुणइ रत्ताहरू रंगगुणु, जा छोल्लइ सुद्ध वि दंत पुणु ।

—जंबूसामिचरिउ 5 2.18

अर्थ—वह कन्या अपने बिंबाधरों से अपनी शुद्ध धवलपंक्ति में प्रतिबिंबित होती हुई कांति को पहचान नहीं पाती । अतः उन्हें धवल बनाने के लिए बार-बार छीलती रहती है ।

7. वणं जिणालयं जहा स-चन्दणं, जिणिन्द-सासणं जहा स-सावयं ।।
महा-रणङ्गणं जहा सवासणं, मइन्द-कन्धरं जहा सकेसरं ।।

—पउमचरिउ 24.14.3–4

अर्थ—वह वन जिनालय की तरह चन्दन (चन्दनवृक्ष, चन्दन) से रहित था, जो जिनेन्द्र शासन की तरह सावय (श्रावक और श्वापद) से सहित था, जो महायुद्ध के प्रांगण की तरह सवासन (मांस और वृक्षनिवशेष) से संयुक्त था, जो सिंह के कधों की तरह केशर-(वृक्षविशेष और अयाल) सहित था ।

8. णिय मंदिरहो विणिग्गय जाणइ, णं हिमवंतहो गंग महाणइ ।

—पउमचरिउ 23.6.3

अर्थ—सीता राम के साथ जाने के लिए अपने भवन से क्या निकली मानो हिमवंत से गंगा नदी ही निकली हो।

9. ससुरासुरकयजम्माहिसेउ, संसारसमुद्दुत्तारसेउ।

—जंबूसामिचरिउ 1.1.4

अर्थ—देवताओं सहित असुरों द्वारा जिनका जन्माभिषेक किया गया और जो ससाररूपी समुद्र से पार उतारने के लिए सेतुरूप हैं।

10. सो जयउ जस्स जम्माहिसेयपय-पूरपंडुरिज्जंतो ।
जणियहिमसिहरिसंको कणयगिरी राइओ तइया ।।

—जंबूसामिचरिउ 1. मंगलाचरण 3–4

अर्थ— उन (महावीर भगवान) की जय हो जिनके जन्माभिषेक निमित्तक जल के पूर से पांडुवर्ण होता हुआ कनकाचल (सुवर्णगिरी मेरु) हिमगिरी की शंका उत्पन्न करता हुआ शोभायमान हुआ।

अभ्यास-52

मात्रिक छन्द—	1. कुसुमविलासिका	2. अमरपुरसुन्दरी
	3. चारुपद	4. गंधोदकधारा
	5. अडिल्ल (अलिल्लह)	6. उप्पहासिनी
	7. रयडा	8. विलासिनी
	9. मत्तमातंग	10. निध्यायिका
	11. चउपही (चतुष्पदी)	12. मदनावतार
	13. सारीय	14. शशितिलक
	15. मंजरी	16. रासाकुलक
	17. शालभंजिका	18. हेलाद्विपदी
	19. कामलेखा	20. दुवई
	21. आरणाल	22. लताकुसुम
	23. तोमर	
वर्णिक—	24. मालती	25. दोधक
	26. तोट्टक	27. मौक्तिकदाम
	28. वसन्ततत्वर	29. पंचचामर

मात्रिक छन्द

1. कुसुमविलासिका छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में आठ मात्राएं होती हैं। प्रारम्भ में नगण (। । ।) और अन्त में लघु (।) व गुरु (S) होता है।

नगण   लग   नगण   लग

। । ।   । । । S   । । ।   । । । S

चलइ   णिवबलं, दलइ   महियल ।

नगण   लग   नगण   लग

। । ।   । । । S   । । ।   । । । S

सहइ   णहभरं, वहइ   अइडरं ।

—सुदंसणचरिउ 9.3 1-2

अर्थ—राजा का सैन्य चल पड़ा और पृथ्वीतल को रौंदने लगा। वह आकाश को भरते हुए सोहने (लगा) व अत्यन्त डर उत्पन्न करने लगा।

2. अमरपुरसुन्दरी छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में दस मात्राएं होती हैं, चरण के अन्त में लघु (।) व गुरु (S) होता है।

लग   लग

। । ।   । । S । S   । । ।   । । S । S

सहउ   सिहितावणं, महउ   सुहभावणं,

लग   लग

। । ।   । । S । S   । । ।   । । । ।। S

चडउ   जलियाणले, पडउ   भइरवतले ।

—सुदंसणचरिउ 6.10.3-4

अर्थ—चाहे पंचाग्नि तप करो, सुहावना पूजा-पाठ करो, जलती हुई अग्नि में चढ़ो या भयंकर पर्वतों से नीचे गिरो (भृगुपात करो)।

3 चारुपद छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में दस मात्राएं होती हैं, अन्त में गुरु (S) व लघु (।) होता है।

S   S । S S ।   S । । । । । S ।

भो   रायराएस,   संगहियजससेस,

। । S । S S ।   S S   ।   S S ।

गुणसेढिठाणेण, जोइ   व्व   णाणेण ।

—जसहरचरिउ 1.17.3-4

अर्थ—हे राजेश्वर, आपने समस्त यश संचित किया है। जिस प्रकार गुण-श्रेणी चढने पर ज्ञान द्वारा योगी का अज्ञान दूर हो जाता है ....।

4. गंधोदकधारा छन्द

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में तेरह मात्राएं होती हैं व चरण के अन्त में नगण (।।।) होता है।

नगण
S । । । । S । । । । ।
तं णिसुणेंवि डोल्लिय मणेंण,

नगण
S । । S । । S । । ।
माछइ वुत्तु विहीसणेंण,

नगण
। । S ।। S । । । । ।
ण गवेसइ जं चविउ पइँ,

नगण
। । S । । S । । । । ।
सयवारउ सिक्खविउ मइँ ।

—पउमचरिउ 49.6.1

अर्थ—यह सुनकर विभीषण का मन डोल उठा। उसने हनुमान को बताया कि रावण कुछ समझता ही नहीं, जो कुछ आप कर रहे हैं उसकी मैंने उसे सौ बार शिक्षा दी।

5. अडिल्ल (अलिल्लह) छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं और अन्त में दो मात्राएं लघु (। ।) होती हैं।

S S S S । । S S । । S । S । । । । । । । S । ।
छंदालंकारइँ णिग्घंटइँ, जोइसाइँ गहगमणपयट्टइँ ।

S । । S । । S । । । । । । । । । S । S S । । । । । ।
कव्वइँ णाडयसत्थइँ सुणियइँ, पहरणाइँ णीसेसइँ गुणियइँ ।

—णायकुमारचरिउ 3.1.5-6

अर्थ—उसने छंद, अलंकार, निघण्टु, ज्योतिष, ग्रहों की गमन प्रवृत्तियों तथा काव्य व नाट्यशास्त्र सुने एवं समस्त आयुधों का भी ज्ञान प्राप्त किया।

6. उप्पहासिनी छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं और अन्त में लघु-गुरु-लघु-गुरु होता है।

। । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ।। ऽ । ऽ । ऽ

कुमुअावत्त–महिन्द–मण्डला, सूरसमप्पह भाणुमण्डला ।

।। ऽ । । ऽऽ । ऽ । ऽ । । । ।। ऽऽ । । । ऽ । ऽ

रइवद्धण सङ्गामचञ्चला, दिढरह सव्वम्पिय करामला ।।

—पउमचरिउ 60.6 1–2

अर्थ—कुमुदावर्त, महेन्द्रमण्डल, सूरसमप्रभ, भाणु-मण्डल, रतिवर्धन, संग्रामचंचल, दृढरथ, सर्वप्रिय करामल।

7. रयडा छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राए होती हैं।

ऽ । । । । । । ऽ । । ऽ । ।

को वि भणइ ण वि लेमि पसाहणु ।

ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ।

जाम ण भञ्जमि राहव–साहणु ।।

—पउमचरिउ 59.4.3

अर्थ—कोई बोला–मैं तब तक प्रसाधन ग्रहण नहीं करूँगा जब तक कि रावण की सेना को नष्ट नहीं करता।

8. विलासिनी छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त में लघु (।) व गुरु (ऽ) होता है।

ऽ। ऽ। ऽ ऽ ।ऽ।ऽ
जंतु जंतु पत्तो मसाणए,
।।।ऽ।ऽ।।। ऽ।ऽ
घुरुहुरंतसमडिय – साणए,
।।। ।।। ।। ऽ। ऽ।ऽ
सडिय–पडिय–बहु–देहि–जंगले,
ऽ।ऽ। ऽ।। ।ऽ।ऽ
घुग्घुवंत घूवड अमंगले ।

—सुदंसणचरिउ 8.16.1-2

अर्थ – चलते-चलते सुदर्शन श्मशान में पहुँचा, जहाँ कुत्ते घुर्राते हुए भिड़ रहे थे। जहाँ नाना शरीरों का मांस पड़ा हुआ सड़ रहा था। जो घू-घू करते हुए घुग्घुओं से अमंगलरूप था।

9 मत्तमातंग छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में अट्ठारह मात्राएं होती हैं व चरण के अन्त में जगण (।ऽ।) होता है।

जगण जगण
ऽ ।ऽ ऽ। ऽ ऽ।।।ऽ। ऽ ।ऽ ऽ।ऽ ऽ । ।।ऽ।
तो दिणे छट्ठि उक्किट्ठकमसेण, दाविया छट्ठियाजग्गत्ति वइसेण ।

जगण जगण
ऽ। ऽ ।।। ऽऽ। ।।ऽ। ऽ। ऽ ऽ। ।।ऽ। ।।ऽ।
अट्ठ दो दिवह वोलीण छुडु जाय, ताम जा णाम जिणयासि सणुराय ।

—सुदंसणचरिउ 3.5.6–7

अर्थ फिर जन्म से छठे दिन उस वैश्य ने उत्कृष्ट रूप से झटपट छठी का उत्सव मनाया। जब आठ और दो अर्थात् दस दिन व्यतीत हुए तब उस पुत्र की जिनदासी नाम की माता अनुरागसहित.....।

10. निध्यायिका छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में उन्नीस मात्राएं होती हैं।

S S I I I S I I I I I S I I
ज जाणियउ अक्खउ रण—रसाहिउ ।

I I S I I I I I I I S I I S I I
रहु सारहिण हणुवहों सम्मुहु वाहिउ ।।

S S I I I S I I S I S I I
ढुक्कन्तु रणें तेण वि दिट्ठु केहउ ।

I I S I I I S S S I S I I
रयणायरेंण गङ्गा वाहु – जेहउ ।।

– पउमचरिउ 52.3.1

अर्थ – जब सारथी ने यह देखा कि अक्षय रणरस (वीरता) से भरा हुआ है तो हनुमान के सम्मुख रथ बढ़ा दिया। रणस्थल में पहुँचते ही हनुमान ने उसे इस प्रकार देखा मानो समुद्र ने गंगा के प्रवाह को देखा हो।

नोट—नियम चार (अभ्यास-50, पृ. 192) के अनुसार प्रथम, तृतीय व चतुर्थ चरण का अन्तिम ह्रस्व वर्ण गुरु माना गया है।

11. चउपही छंद (चतुष्पदी)

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में बीस मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त दो मात्राएं लघु (। ।) होती हैं।

S I I I I I I I I S I I S S I I
दोहिँ वि घरहिँ धवलु मंगलु गइज्जइ ।

S I I I I I I I I S I I S S I I
दोहिँ वि घरहिँ गहिरु तूरउ वाइज्जइ ।

S I I I I I I I I S I I I I S I I
दोहिँ वि घरहिँ विविहु आहरणु लइज्जइ ।

S I I I I I I I I I I I I S S I I
दोहिँ वि घरहिँ लडहतरुणिहिँ णच्चिज्जइ ।

—सुदंसणचरिउ 5 4.9–10

अर्थ – दोनों ही घरों में धवल मंगल गान होने लगे, दोनों ही घरों में गम्भीर तूर्य बजने लगा। दोनों ही घरों में विविध आभरण लिये जाने लगे। दोनों ही घरों में सुन्दर तरुणियों के नृत्य होने लगे।

12. मदनावतार छंद

लक्षण – इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में बीस मात्राएँ होती हैं और चरण के अन्त में रगण (ऽ।ऽ) होता है।

रगण

ऽ।ऽ। ।।ऽ ।।। ऽऽ।ऽ
रावणेण वि धणुं समरें दोहाइयं।

रगण

ऽ। ऽ ऽ। ऽऽ ।ऽऽ।ऽ
साम्व तं दन्द जुज्झं समोहाइयं॥

—पउमचरिउ 66.8.5

अर्थ रावण ने विभीषण के धनुष के दो टुकड़े कर दिए तब उन्होंने एक-दूसरे को द्वन्द्व युद्ध के लिए सम्बोधित किया।

13. सारीय छंद

लक्षण – इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में बीस मात्राएँ होती हैं और अन्त में गुरु (ऽ) व लघु (।) होता है।

।।ऽ ।ऽ ऽ। ऽ।। ।ऽ ऽ।
तिमिरं णियच्छेवि पंडिय गया तत्थ,

।। ऽ।ऽऽ। ऽऽ।ऽ ऽ।
थिउ झाणजोएण सेट्ठीसरो जत्थ,

।।ऽ। ऽऽ। ऽ ऽ ।ऽऽ।
पणवंति जंपेइ लग्गी पयग्गम्मि,

।। ऽ । ऽऽ ।ऽ ऽ।ऽ ऽ।
जइ अत्थि जीवे दया तुम्ह धम्मंमि।

—सुदंसणचरिउ 8.20.1-2

अर्थ—अन्धकार फैला देखकर पंडिता वहां गई जहां सेठों का अग्रणी सुदर्शन ध्यानयोग स्थित था। वह प्रणाम करते हुए उसके पैरों से लग गई और बोली यदि तुम्हारे धर्म में जीव-दया है.... ।

14. शशितिलक छंद

लक्षण— इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में बीस मात्राएँ होती हैं तथा सर्वत्र लघु (।) होता है।

। । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
जय अणह चउदिसु वि पडिफुरिय चउवयण ।

। । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
जय गलियमलपडल कमलदलसमणयण ।।

—सुदंसणचरिउ 1.11.3-4

अर्थ – हे भगवन् आप निष्पाप हैं और समवशरण के बीच चारों दिशाओं में आपके चार मुख दिखाई देते हैं।

15. मंजरी छंद

लक्षण— इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में इक्कीस मात्राएँ होती हैं।

। । । S । S S । । S । । S । S
कहिउ सव्वु तं लक्खण—राम—कहाणउं ।

S । S । । S । । S । । S । S
दण्डयाइ मुणि—कोडि—सिला—अवसाणउं ।।

—पउमचरिउ 45.6.1

अर्थ —उसने राम—लक्ष्मण की सब कहानी उन्हें सुना दी किस प्रकार दण्डकवन में उन्होंने कोटि शिला को उठा लिया।

16. रासाकुलक छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं और चरण के अन्त में लघु (।) व गुरु (S) होता है।

नगण

ऽ ऽ ऽ । ।ऽ।। ऽ।। ऽ।।।

हा हा णाह सुदंसण सुंदर सोममुह ।

नगण

।।।।ऽ। ।ऽ।। ।।।।ऽ।।।

सुग्रण सलोण सुलक्खण जिणमइअंगरुह ।

—सुदंसणचरिउ 8.41.1–2

अर्थ—हाय हाय नाथ, सुदर्शन, चन्द्रमुख, सुजन, सलोने, सुलक्षण, जिनमति के सुपुत्र .... ।

17. शालभंजिका छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी) । प्रत्येक चरण में 24 मात्राएं होती हैं और अन्त में लघु (।) व गुरु (ऽ) होता है ।

ऽ। ऽ। ऽ ऽ।। ऽ । ।ऽ। ऽ ।ऽ

ताव तेत्थु णिज्झाइय वावि असोय-मालिणी ।

ऽ।ऽ। । ।ऽ।। ।।।। ऽ। ऽ ।ऽ

हेमवण्ण स-पओहर मणहर णाइँ कामिणी ।

—पउमचरिउ 42.10.1

अर्थ—तब उसने 'अशोकमालिनी' नाम की बावड़ी देखी, सुनहले रंग से वह जैसे—सपयोधर सुन्दर कामिनी हो ।

18. हेलाद्विपदी छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (सम द्विपदी) । प्रत्येक चरण में 22 मात्राएं होती हैं और अन्त में दो गुरु (ऽ ऽ) होते हैं ।

।।। ।ऽ। ऽ। ।। ऽ।ऽ ।ऽऽ

पइज करेवि जाम पहु आहवे अभङ्गो ।

ऽ। ।ऽ। ऽ। ऽऽ। ऽ ।ऽऽ

ताम पइट्ठु चोरु णामेण विज्जुलङ्गो ।।

—पउमचरिउ 25.2.1

अर्थ—जब युद्ध में वह अभग्न प्रभु यह प्रतिज्ञा कर रहा था कि तभी विद्युदंग चोर वहां प्रविष्ट हुआ।

19. कामलेखा छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं। प्रत्येक चरण में सत्ताइस मात्राएं होती हैं।

|| | | | | | S | | | S | | S | | S | S S

गयवर-तुरय-जोह- रह-सीह-विमाण- पवाहणाइं।

| | S | | | S | | | | | | | | | | | S | S S

रण-तूरइं हयाइँ किउ कलयलु भिडियइँ साहणाइं।

—पउमचरिउ 66.1.1

अर्थ—उत्तम हाथी, अश्व, योद्धा, रथ, सिंह, विमान और दूसरे वाहन चल पड़े। युद्ध के नगाड़े बज उठे। कोलाहल होने लगा। सेनाएं आपस में भिड़ गयीं।

20 दुवई छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (समद्विपदी)। प्रत्येक चरण में अट्ठाइस मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त में लघु (।) व गुरु (S) होता है।

| | S | | | S | S | | | | S | | S | S | S

हिय एत्तहेँ वि सीयएत्तहेँ वि विओउ महन्तु राहवे।

| | S | | | | | | S | | | | S | | | | | S | S

हरि एत्तहेँ वि भिडिउ एत्तहेँ वि विराहिउ मिलिउ आहवे।

—पउमचरिउ 40.2.1

अर्थ—यहां सीता का अपहरण कर लिया गया और यहां राम को महान वियोग हुआ। यहां लक्ष्मण युद्ध में भिड़ गया और यहां युद्ध में विराधित मिला।

21. आरणाल छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में 30 मात्राएं होती हैं।

S ।।S ।S। SS। S।।। S। S। SS
मो भुवणेक्कसीह वीसद्ध जीह तउ थाउ एह बुद्धी ।
S।। ।।।S।S।।। S।S ।।। S। SS
अज्जु वि-विगय णामें णं समउ रामें णं कुणहि गम्पि संधी ।

—पउमचरिउ 53.1.1

अर्थ—हे भुवनैकसिंह, विश्रब्धजीव ! तुम्हारी यह क्या मति हो गई है ? आज भी प्रसिद्धनाम राम के पास जाकर संधि कर लो ।

22. लताकुसुम (मदिरा) छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी) । प्रत्येक चरण में 30 मात्राएं होती हैं और चरण के अन्त में सगण (।।S) होता है ।

सगण
S।।S।।S।।S । ।S ।। S।।S।।S
जत्थ सिरी अणुहुत्त तहिं पि कयं पुण भिक्खपवित्थरणं ।

सगण
S। । SS।S । । S।। S।।S ।।।।।S
लोहु ण लज्जं भयं ण वि गारउ पेम्मसमं पि तवच्चरणं ।

—सुदंसणचरिउ 11.2.3-4

अर्थ—जहां पर उन्होंने राज्यश्री का उपभोग किया था, वहीं पर अब भिक्षाचरण किया । उनके न लोभ था, न लज्जा, न भय और न अभिमान । उनको यदि प्रेम था तो तपश्चर्या से ।

23. तोमर छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी) । प्रत्येक चरण में चार बार गुरु (S) व चार बार लघु (।) आता है ।

ग ल

S I S I S I S I   S I S I S I S I

के वि णीसरन्ति वीर,   भूधर व्व तुङ्ग धीर ।

S I S I S I S I   S I S I S I S I

सायर व्व अप्पमाण,   कुञ्जर व दिण्ण-दाण ।

—पउमचरिउ 59.2.2-3

अर्थ—पहाड़ की भांति ऊँचे और धीर कितने ही योद्धा निकल पड़े। वे समुद्र की तरह अप्रमेय थे और हाथी की भांति दान देनेवाले।

वर्णिक छन्द

24. मालती छन्द

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में दो जगण (ISI+ISI) व छः वर्ण होते हैं।

जगण जगण   जगण जगण

I S I I S I   I S I I S I

णवेवि मुणिंदु   भवीयणचंदु ।

12 3 45 6   123456

जगण जगण   जगण जगण

I S I I S I   I S I I S I

घरम्मि छुहेवि   चउक्कें ठवेवि ।

12 3 456   12 3 456

— णायकुमारचरिउ 9.21.1-2

अर्थ—घर आने पर उन भव्यजनों में चन्द्र के समान श्रेष्ठ मुनिराज को नमस्कार करके घर के भीतर लेजाकर खड़ा करना चाहिए।

25. दोधक छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी)। प्रत्येक चरण में तीन भगण (SII+SII+SII) और दो गुरु (S+S) तथा 11 वर्ण होते हैं।

भगण भगण भगण ग ग
S I I S I I S I I S S
लग्गु थुणेहुँ पयत्थ - विचित्तं,
1 2 345 678 91011

भगण भगण भगण ग ग
S I I S I I S I I S S
णाय - णराण सुराण विचित्तं ।
1 2 3 4 5 678 91011

भगण भगण भगण ग ग
S I I S I I S I I S S
मोक्खपुरी - परिपालय - गत्तं,
1 2 34 5 6789 1011

भगण भगण भगण ग ग
S I I S I I S I I S S
सन्ति-जिणं ससि- णिम्मल- वत्तं ।
1 2 3 4 56 7 8 9 1011

—पउमचरिउ 71.11.1-2

अर्थ—उसके अनन्तर, रावण विचित्र स्तोत्र पढ़ने लगा, नागों, नरों और देवताओं में विचित्र हे देव ! तुमने अपने शरीर से मोक्ष की सिद्धि की है, चन्द्रमा के सदृश शान्त आचरण, शान्तिनाथ, ... ।

26 तोट्टक छंद

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी) । प्रत्येक चरण में चार सगण (।।S+।।S+।।S+।।S) व बारह वर्ण होते हैं ।

सगण सगण सगण सगण
।। S I I S I I S I I S
अह एक्कु चमक्कु वहंतु मणे,
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

सगण सगण सगण सगण

। । S । । S । । S । । S

हल-रक्खु समक्खु पहुत्तु खणे ।

12 3 4 5 6 7 8910 1112

सगण सगण सगण सगण

। । S । । S । । S । S । । S

णिरु कंपइ जंपइ सो सहसा,

1 2 345 678 9 101112

सगण सगण सगण सगण

। । S । । S । । S । । S

अहो चल्लि म खेल्लि महंतजसा ।

12 3 4 5 6 7 89101112

—सुदंसणचरिउ 2.13.5–6

अर्थ—उसी समय एक चमक (घबराहट) मन में धारण करके खेत का रखवाला उसके सम्मुख आ पहुँचा । वह काँपता हुआ सहसा बोला—अरे चल, हे महा यशस्वी, खेले मत ।

27. मौक्तिकदाम छंद

लक्षण—इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी) । प्रत्येक चरण में चार जगण (।S।+।S।+।S।+।S।) व बारह वर्ण होते हैं ।

जगण जगण जगण जगण

। S । । S । । S । । S ।

सुदुद्धरु अंजणपव्वय काउ,

जगण जगण जगण जगण

। S । । S । । S । । S ।

दिसाकरितासणु मेहणिणाउ ।

जगण जगण जगण जगण

। S । । S । । S । । S ।

सदप्पु वि वेज्झु ण देइ करिंदु,

जगण जगण जगण जगण

ISI ISIISI ISI

मणम्मि भरंतह देउ जिणिंदु ।

—सुदंसणचरिउ 8.44.1

अर्थ—अति दुर्द्धर, अंजनपर्वत के समान कृष्णकाय, दिग्गजों को भी त्रासदायी, मेघों के समान गर्जना करनेवाला उन्मत्त हाथी, उस पर कोई आघात नहीं कर सकता जो अपने मन में जिनेन्द्र का स्मरण कर रहा हो ।

28. **वसन्तचत्वर छन्द**

लक्षण—इसमें दो पद होते हैं (द्विपदी) । प्रत्येक चरण मे जगण (ISI), रगण (SIS), जगण (ISI), रगण (SIS) व बारह वर्ण होते हैं ।

जगण रगण जगण रगण

ISISISISI SIS

झरंतसच्छविच्छुलंमणिज्झरं

जगण रगण जगण रगण

ISISISISI SIS

भरतरुंदकुंडकूव कंदरं ।

जगण रगण जगण रगण

ISISISI SISIS

ललंतवेल्लिपल्ल वोह कोमलं

जगण रगण जगण रगण

ISIS IS ISI SIS

मिलंतपक्खिपक्खलक्ख चित्तलं ।

—जसहरचरिउ 3.16.3-4

अर्थ—हमने देखा कि उस वन में स्वच्छ बिखरे हुए पानी के झरने झर रहे हैं जिनके द्वारा विस्तीर्ण कुण्ड, कूप और कन्दर भर रहे हैं । वह वन लहलहाती हुई वल्लियों के पल्लव-समूहों से कोमल तथा एकत्र हुए पक्षियों के लाखों पंखों से चित्रित दिखाई दे रहा था ।

29. **पंचचामर छन्द**

लक्षण— इसमें चार चरण होते हैं (चतुष्पदी)। प्रत्येक चरण में जगण (ISI), रगण (SIS), जगण (ISI), रगण (SIS), जगण (ISI) और गुरु व सोलह वर्ण होते हैं।

जगण रगण जगण रगण जगण ग

ISIS। SIS। SISISIS

तवग्गितत्तु मोहचत्तु सिद्धिकंतस्तओ ।

12 345 6789 10111213141516

जगण रगण जगण रगण जगण ग

IS। SI SISI SI SISIS

भयाण पट्ठु णेत्तइट्ठु जल्ललित्तगत्तओ।

123 45 6789 10111213141516

—सुदंसणचरिउ 10.3.1

अर्थ— इस प्रकार जब सुदर्शन चित्त में हर्षित होकर मोक्ष के हेतुभूत जिनेन्द्रदेव की स्तुति कर रहा था, तभी उसने वहां सुरेन्द्र द्वारा वन्दनीय एक मुनिराज को बैठे देखा। वे मुनिराज तपरूपी अग्नि से तपाये हुए, मोह से त्यक्त व सिद्धिरूपी कांता में अनुरक्त मदों से रहित, नेत्रों को इष्ट व शरीर के मैले से लिप्त थे।

(क) निम्नलिखित पद्यांशों के मात्रा लगाकर इनमें प्रयुक्त छंदों के लक्षण एवं नाम बताइए—

1. तो फुरन्त-रत्तन्तलोयणो कलि-कियन्तकालो व्व भीसणो ।।
दुण्णिवारु दुव्वार-वारणो सुउ चवन्तु जं एम लक्खणो ।।

—पउमचरिउ 23.8.1–2

अर्थ—तब जिसके फड़कते हुए लाल-लाल नेत्र थे, जो कलि-कृतान्त और काल की तरह भीषण था ऐसे दुर्निवार लक्षण को दुर्वार महागज की तरह उक्त बात कहते हुए सुनकर..... ।

2. अण्णु विहीसण गुणघणउ सन्देसउ णीलहों तणउ ।
गम्पि दसाणणु एम भणु विरुआरउ परतियगमणु ।।

—पउमचरिउ 49.5.1

अर्थ—और भी विभीषण ! नील का भी यह गुणघन सन्देश है कि जाकर उस रावण से कहो कि परस्त्री-गमन बहुत बुरा है ।

3. तो दिणे छट्ठि उक्किट्ठकमसेण दाविया छट्ठिया ज्झत्ति वइसेण ।
अट्ठ दो दिवह वोलीण छुडु जाय ताम जा णाम जिणयासि सणुराय ।

सुदंसणचरिउ 3.5.6–7

अर्थ—फिर जन्म से छठे दिन उस वैश्य ने उत्कृष्ट रूप से झटपट छठी का उत्सव मनाया । जब आठ और दो अर्थात् दस दिन व्यतीत हुए तब उस पुत्र की जिनदासी नामकी माता अनुरागसहित.... ।

4. दोहिँ वि घरहिँ घुसिणच्छडउल्लउ दिज्जइ
दोहिँ वि घरहिँ रयणरंगावलि किज्जइ ।
दोहिँ वि घरहिँ धवलु मंगलु गाइज्जइ
दोहिँ वि घरहिँ गहिरु तूरउ वाइज्जइ ।।

—सुदंसणचरिउ 5.4.7–8

अर्थ—दोनों ही घरों में केसर की छटाएँ दी गईं । दोनों ही घरों में रत्नों की रंगावलि की गई । दोनों ही घरों में मंगल गान गाये गये । दोनों ही घरों में गंभीर तूर्य बजने लगा ।

5. दुरियाणण-दुस्सर-दुव्विसहा ससि-सूर-मऊर-कुरूर-गहा ।
सुअसारण-सुन्द-णिसुन्द-गया करि-कुम्भ णिसुम्भ वियम्भ मया ।।

—पउमचरिउ 59.6.4–5

अर्थ—दुरितानन, दुर्गम्य और सह्य, चन्द्रमा, सूर्य, मऊर और कुरुर ग्रह भी निकल आये। हाथियों की सूंडों को कुचलने से भयंकर सुत-सारण सुन्द और निसुन्द भी गये।

6. हीणा हीण हउँ बंभिणि सुगुणसुबुद्धिवज्जिया ।
अप्पसुओ आहाणउ णिसुणंती ण लज्जिया ।।

—सुदंसणचरिउ 7.12.5–6

अर्थ—मैं एक हीन-दीन, सद्गुणों और सद्बुद्धि से वर्जित ब्राह्मणी हूँ। इसी से अपनी कान-सुनी बात सुनते मुझे लज्जा (शंका) नहीं आई।

7. कालि-वन्दणहराकन्द-भिण्णञ्जणा ।
सम्भु-णल विग्घ-चन्दोयराणन्दणा ।।

—पउमचरिउ 66.8 8

अर्थ—कालि और वन्दनगृह, कन्द और भिन्नांजन, शंभू और नल, विघ्न और चन्द्रोदर पुत्र .... ।

8. इय जाम वयपुण्ण थिउ लेइ सुपइण्ण ।
पिच्छेवि सहसत्ति चिंतेइ णिवपत्ति ।।

—सुदंसणचरिउ 8.25.1–2

अर्थ—इस प्रकार जब सुदर्शन व्रतपूर्ण सुप्रतिज्ञा ले रहा था तभी राजपत्नी सहसा उसकी ओर देखकर सोचने लगी....।

9. मुणीण समाणु अणुव्वजमाणु ।
घरंगणु जाम स गच्छइ ताम ।।

— णायकुमारचरिउ 9.21.9–10

अर्थ—मुनि के साथ पीछे–पीछे अपने घर के आंगन तक जावे.... ।

10. सेसिउ हासु सुखेडपलोयणु संगु सपुव्वरईमरणं ।
होरु सुडोरु सुककणु कुंडलु सेहरु लेइ ण आहरणं ।।

—सुदंसणचरिउ 11.2.19–20

अर्थ—उन्होंने हास्य–रतिपूर्वक अवलोकन, परिग्रह, अपनी पूर्व रति के स्मरण का परित्याग कर दिया है। वे अब सुन्दर लड़ियोंयुक्त हार, सुन्दर कंकण, कुण्डल व शेखर आदि आभरण धारण नहीं करते ।

(ख) निम्नलिखित पद्यांशों के मात्राएं लगाकर इनमें प्रयुक्त छंदों के लक्षण एवं नाम बताइए—

1. हुणउ तिलजवघयं णवउ दियवरसयं ।
जणिय अरिविग्गहे मरउ तहिं गोग्गहे ।।

—सुदंसणचरिउ 6.10.7–8

अर्थ—तिल, जौ व घृत का होम दो तथा सैंकड़ों द्विजवरों को प्रणाम करो। चाहे शत्रुओं से कलह करके गोग्रहण में मरो ।

2. को वि भणइ णउ णयणइँ अञ्जमि ।
जाम्व व सुरवहु-जण-मणु रञ्जमि ।।

—पउमचरिउ 59.4.6

अर्थ—किसी एक ने कहा मैं तब तक अपनी आंखों में अञ्जन नहीं लगाऊँगा जब तक कि सुरवधुओं के नेत्रों का रंजन नहीं करता ।

3. फुरियाणणउ विहुणिय–वाहुदण्डओ ।
णं गयवरउ णिब्भर-गिल्ल–गण्डओ ।।
तं दहवयणु जयकारेवि अक्खओ ।
णं णीसरिउ गरुडहों समुहु तक्खओ ।।

—पउमचरिउ 52 1.1

अर्थ—उसका चेहरा तमतमा रहा था, अपने दोनों हाथ मलते हुए वह ऐसा लगता था मानो मद झरता हुआ महागज हो। रावण की

जय बोलकर अक्षयकुमार निकल पड़ा, मानो गरुड़ के सम्मुख तक्षक ही निकला हो ।

4. जय विगयभय विसयरइजलणणवजलय ।
जय सहसयरसरिसपरिफुरियजुइवलय ॥

—सुदंसणचरिउ 1.11.9-10

अर्थ—आप भयरहित हैं और विषयों के राग की अग्नि को नये मेघ के समान वमन करनेवाले हैं । आपका प्रभामण्डल सूर्य के सदृश स्फुरायमान है ।

5. परधण-परकलत्त-परिसेसहुँ परवल-सण्णिवायहुं ।
एक्कें लक्खणेण विणिवाइय सत्त सहास रायहुं ॥

—पउमचरिउ 40.4.1

अर्थ—परधन और परस्त्रियों को समाप्त करनेवाले शत्रु-सैन्य के लिए सन्निपात के समान सात हजार राजाओं के सैन्य को अकेले लक्ष्मण ने मार गिराया ।

6. पसुत्तु समुट्ठिउ दंतसमीहु महाबलु लोललुवाविय-जीहु ।
सरोसु वि देइ कमं ण मइंदु मणम्मि मरंतह देउ जिणिंदु ॥

—सुदंसणचरिउ 8.44.2

अर्थ—सोकर उठा हुआ गज का अभिलाषी, महाबलशाली, लोलुपता से जीभ को लपलपाता हुआ, सक्रोध मृगेन्द्र भी उस पर अपने पंजे का आघात नहीं कर सकता जो अपने मन में जिनेन्द्रदेव का स्मरण कर रहा हो ।

7. सिणिद्धरुक्खपुप्फरेणुपिंजरं
फलोवडंतवुक्करंतवाणरं
दिसाचरंतजक्खकिंकिणीसरं
लयाहरत्थकीलमाणकिंणरं

—जसहरचरिउ 3.16.5-6

अर्थ—वह वृक्षों को चिकनी पुष्परेणु से लाल हो रहा था, बुक्क ध्वनि करते हुए वानर फलों के ऊपर झपट रहे थे। वहां दिशाओं में विचरण करती हुई यक्षिणियों की किंकिणियों का स्वर सुनाई पड़ता था।

8. पच्छएँ मेहवाहणो गहिय-पहरणो णिग्गओ तुरन्तो।
णं जुअ-खएँ सणिच्छरो भरियमच्छरो अहर-विप्फुरन्तो।

—पउमचरिउ 53.4.1

अर्थ—उसके पीछे अस्त्र लेकर मेघवाहन भी तुरन्त निकल पड़ा मानो युग का क्षय होने पर मत्सर से भरा कम्पिताधर शनैश्चर ही हो।

9. सुमरमि णवकोमलदलकुवलयताडणउ।
मुत्ताहलहारावलिबंधणछोडणउ ॥

—सुदंसणचरिउ 8.41.9-10

अर्थ—स्मरण आता है वह नये कोमल पत्रों से युक्त नीलकमल द्वारा ताड़न तथा मुक्ताफलों की छटावली का बांधना और तोड़ना।

10. लच्छिभुत्ति तं लच्छीणयरु पईसई।
ववहरन्तु जं सुन्दरु तं तं दीसई ॥

—पउमचरिउ 45.4.1

अर्थ—लक्ष्मीभुक्ति उस नगर में प्रवेश करता है और घूमते हुए जो-जो सुन्दर है उसे देखता है।

(ग) निम्नलिखित पद्यांशों के मात्राएं लगाकर इनमें प्रयुक्त छन्दों के लक्षण व नाम बताइए—

1. दलइ फणिउलं चलइ आउलं।
मुयइ विससिहिं हरइ जणदिहिं ॥

—सुदंसणचरिउ 9.3 1-2

अर्थ—वह नागों के समूह का दलन करता, भीड़-भाड़ के साथ चलता, विष के बाण छोड़ता और लोगों के धैर्य का अपहरण करता।

2. पडहसंखवरततीतालइँ अब्भसियइँ वज्जाइँ खालइँ ।
पत्तपुप्फणाणाफलछेज्जइँ हयगयविदारोहण विज्जइँ ।।

—णायकुमारचरिउ 3.1.7–8

अर्थ—पटह, शंख व सुन्दर तन्त्रीताल आदि ध्वनि-वाद्यों का अभ्यास किया । पत्रों, पुष्पों व फलों को नाना प्रकार से काटने-छांटने की रीतियां, घोड़ों व हाथियों के आरोहण की विद्याएं.... ।

3. मित्ताणुद्धर-वग्घसूअणा ।
एए णरवइ वग्घ-सन्दणा ।।

—पउमचरिउ 60.6.3

अर्थ—मित्रानुद्धर और व्याघ्रसूदन—ये-ये राजा व्याघ्ररथ पर आसीन थे ।

4. म चिराहि ए एहि उम्मीलणेताइँ,
लहु गपि आलिगि सोमालगत्ताइँ ।
भणु कस्स तुट्ठो जिणो देसि ठाणस्स,
लइ अज्ज जायं फलं तुज्झ झाणस्स ।

—सुदंसणचरिउ 8.20.5–6

अर्थ—आओ, आओ, शीघ्र चलकर उस उन्मीलित नेत्र सुकुमारगात्री का आलिगन करो । भला कहो तो, जिनेन्द्र सन्तुष्ट होकर भी तुम्हें कौनसी बात प्रदान करेगा ? लो आज ही तुम्हारे ध्यान का फल तुम्हें मिल रहा है ।

5. पुच्छिउ वज्जयण्णेण हसेवि विज्जुलङ्गो ।
भो भो कहिँ पयट्टु वहु-वहल-पुलइयङ्गो ।।

—पउमचरिउ 25.3.1

अर्थ—वज्रकर्ण ने हँसकर विद्युदंग से पूछा—अरे-अरे, अत्यन्त पुलकित अग तुम कहाँ जा रहे हो ?

6. अमरिस-कुद्धएण अमर-वरङ्गण-जूरावणेणं ।
णिब्भच्छिउ विहीसणो पढम-भिडन्तें रावणेणं ।।

—पउमचरिउ 66.6.1

अर्थ—देवांगनाओं को सतानेवाले रावण ने क्रोध से भरकर पहली ही भिड़न्त में विभीषण को ललकारा ।

7. के वि सामि-भत्ति-वन्त मच्छरग्गि-पज्जलन्त ।
के वि आहवे अभङ्ग कङ्कुम-प्पसाहियङ्ग ।।

—पउमचरिउ 59.2.5–6

अर्थ—स्वामी की भक्ति से परिपूर्ण वे ईर्ष्या की आग में जल रहे थे । अनेक युद्धों में अजेय कितनों के शरीर केशर से प्रसाधित थे ।

8. सोम-सुहं परिपुण्ण-पवित्तं जस्स चिरं चरियं सु पवित्तं ।
सिद्धि-वहू मुह-दंसण-पत्तं सील-गुणव्वय-सञ्जम-पत्तं ।।

—पउमचरिउ 71.11.3–4

अर्थ—सोम की भांति हे कल्याणमय, हे परिपूर्ण, पवित्र, आपका चरित्र सदा से पवित्र है, तुमने सिद्ध–वधु का घूंघट खोल लिया है, शील–सयम और गुणव्रतों की तुमने अन्तिम सीमा पा ली है ।

9. पणट्ठदेसु सुक्कलेसु सजमोहवित्तओ ।
तिलोयबंधु णाणसिंधु भव्वकंजमित्तओ ।।
अलंघसत्ति बंभगुत्ति सुप्पयत्त रक्खणो ।
जिणिंदउत्त-सत्ततत्त-ओहिणाण-अक्खणो ।।

—सुदंसणचरिउ 10.3.10–13

अर्थ—उनका द्वेष नष्ट हो गया था, शुक्ल लेश्या प्रकट हो गई थी और वे संयमों के समूहरूप घन के धारी थे (अर्थात् बड़े तपोधन थे), वे त्रैलोक्य बन्धु थे, ज्ञान-सिन्धु व भव्यरूपी कमलों के मित्र (सूर्य–समान हितैषी) थे । वे अलंघ्य शक्ति के धारी थे, ब्रह्मयोगी थे, प्रयत्नपूर्वक जीवों की रक्षा करनेवाले थे एवं जिनेन्द्र द्वारा कहे गये सात तत्त्वों का अवधिज्ञान-पूर्वक भाषण करनेवाले थे ।

10. ससि विव कलोहेण जलहि व जलोहेण
हयकूरकम्मेण तं वड्ढधम्मेण ।

—जसहरचरिउ 1.17.7–8

अर्थ—जैसे कलाओं के संचय से चन्द्रमा और जलसमूह द्वारा जलधि सौन्दर्य और गभीरता को प्राप्त होते हैं।

(घ) निम्नलिखित पद्यों के मात्रा लगाकर इनमें प्रयुक्त छन्दों के लक्षण व नाम बताइए —

1. चउ दुवार-चउ गोउर-चउ-तोरण-रवण्णिया ।
चम्पय-तिलय-वउल-णारङ्ग-लवङ्ग-छण्णिया ।।

—पउमचरिउ 42.10.2

अर्थ—वह चार द्वारों, चार गोपुरों और चार तोरणों से सुन्दर थी, चम्पक, तिलक, बकुल, नारंग और लवंग वृक्षों से आच्छादित थी।

2. कुमुअ-महकाय सद्दूल-जमघण्टया ।
रम्भ-विहि मालि-सुग्गीव अब्भिट्टया ।।

—पउमचरिउ 66.8.10

अर्थ—कुमुद-महाकाय, सार्दूल और यमघंट, रंभ और विधि, माली और सुग्रीव एक-दूसरे से जाकर भिड़ गये।

3. लच्छिमुत्ति पभणिउ सुहि-सुमहुर-वायए ।
एउ सव्वु किउ सम्बुकुमारहो मायए ।।

—पउमचरिउ 45.9.1

अर्थ—तब लक्ष्मीमुक्ति दूत ने अत्यन्त श्रुतिमधुर वाणी में कहा, यह सब शम्बूकुमार की मां ने किया है।

4. देउ दियसासणं लेउ गुरुपेसणं ।
कुणउ हरअच्चणं पुरउ कयणच्चणं ।।

—सुदंसणचरिउ 6.10.9-10

अर्थ—चाहे ब्राह्मण धर्म का उपदेश दो, चाहे गुरु से दीक्षा लो। चाहे हर (महादेव) की अर्चना करो और उनके आगे नाचो।

5. सुमरमि सुरहियकेसरणियरे पिंजरिय ।
सुइपूरण किय सभसलसुरतरुमंजरिय ।।

—सुदंसणचरिउ 8.41.15–16

अर्थ—स्मरण करता हूँ सुगंधि केसर-पिंड से अपना पिंगलवर्ण किया जाना तथा भौंरों से युक्त कल्पवृक्ष की मंजरी के कर्णपूर बनाकर पहनाये जाना ।

6. अहवइ काइँ एण वहु जम्पिएण राया ।
पर-वलें पेक्खु पेक्खु उट्ठन्ति धूलि छाया ।।

—पउमचरिउ 25.4.1

अर्थ—अथवा अधिक कहने से हे राजन्, क्या ? देखो, देखो शत्रु-सेना से धूल की छाया उठ रही है ।

7. रावण रामकिङ्करा रणें भयङ्करा भिड़िय विप्फुरन्ता ।
विडसुग्गीव-राहवा विजयलाहवा णाइँ हणु भणन्ता ।।

—पउमचरिउ 53.8.1

अर्थ—तब युद्ध में भीषण, तमतमाते हुए, राम और रावण के वे दोनों अनुचर भिड़ गये । मानो विजय के लिए शीघ्रता करनेवाले माया-सुग्रीव और राम ही मारो-मारो कह रहे हो ।

8. खुर-खर-छज्जमाणु णं णासइ भइयएँ हयवराहुं ।
णं आइउ णिवारओ णं हक्कारउ सुरवराहुं ।।

– पउमचरिउ 66.2.1

अर्थ—खुरों से खोदी हुई धूल मानो महाअश्वों के डर से नष्ट हो रही थी । वहाँ से हटाई जानेपर मानो वह देवताओं से पुकार करने जा रही हो ।

9. समोयणलीणु, करेइ गिहीणु ।
सुपोसहु एम, फलेइ सु तेम ।।

—णायकुमारचरिउ 9.21.15–16

अर्थ—वह गृहस्थ स्वयं भोजन करने में प्रवृत्त होवे। इस प्रकार विधिवत् प्रोणघोपवास करने से वह फलदायी होता है।

10. भावलयामर-चामर-छत्तं दुन्दुहि-दिव्व-झुणी-पह-वत्तं ।
जस्स भवाहि-उलेसु खगत्तं अट्ठ-सयं चिय लक्खण-गत्तं ।।
—पउमचरिउ 71.11.5-6

अर्थ—आप भामण्डल, श्वेत छत्र और चमर, दिव्यध्वनि और दुन्दुभि से मंडित हैं, जिसके संसारोत्तम कुल में सुभगता है, जिसका शरीर एक सौ आठ लक्षणों से अंकित है।

———

अभ्यास-53

हेमचन्द्र–व्याकरण के अनुसार
निगमित तथा अपभ्रंश साहित्य में
प्रयुक्त संज्ञा-रूपों के
प्रत्यय (विभक्तिचिह्न)

	अकारान्त पुल्लिग (देव)		इकारान्त पुल्लिग (हरि)		आकारान्त स्त्रीलिंग (कहा)		इकारान्त स्त्रीलिंग (मइ)	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
तृतीया (हेमचन्द्र)	एं (देवें) एण, एणं	हिं, (आहिं एहिं)	ँ (हरिँ) एं (हरिएं) ण णं	हिं	ए	हिं	ए	हिं
तृतीया (अन्य)	इ (देवि) इं, इँ, (देविं, देविँ) ए (देवे)	ए (देवे)	णा (प्राकृत)	हि	इ	—	इ	हि

	अकारान्त पुल्लिंग (देव)		इकारान्त पुल्लिंग (हरि)		आकारान्त स्त्रीलिंग (कहा)		इकारान्त स्त्रीलिंग (मइ)	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चतुर्थी	o	o	o	o	o	o	o	o
एवं	सु	हं		हं	हे	हु	हे	हु
षष्ठी	स्सु			हुं				
(हेमचन्द्र)	हो							
चतुर्थी	ह, हे	ह	हि	हिं	हि	हं	हि	हं
एवं	हं, स्स	हुं	हु			हुं	हिं	हुं
षष्ठो	हि, हस्सु	आण (प्रा.)	हुं			आण (प्रा.)		हिं
(अन्य)	हिं	आणं (प्रा.)	हे					
	हु		ए					
	हुं							

	अकारान्त पुल्लिग (देव)		इकारान्त पुल्लिग (हरि)		आकारान्त स्त्रीलिंग (कहा)		इकारान्त स्त्रीलिंग (मइ)	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पंचमी (हेमचन्द्र)	हे हु	हुं	हे	हुं	हे	हु	हे	हु
पंचमी (अन्य)	ह हि हो	हं	—	—	हि	हं हुं	—	—

	अकारान्त पुल्लिंग (देव)		इकारान्त पुल्लिंग (हरि)		आकारान्त स्त्रीलिंग (कहा)		इकारान्त स्त्रीलिंग (मइ)	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी (हेमचन्द्र)	अ→इ देवि अ→ए देवे	हिं	हि	हि हुं	हि हिं	हिं	हि हिं	हिं
सप्तमी (अन्य)	०, एं (देवें) अँ (देवँ) उ (देवु) म्मि हिं (एहिं, आहिं) हि इं (देवइं)	हिं (एहिं, इहिं) ० अँ (देवँ)	हे	—	—	—	हे	—

क-अन्य वैयाकरणों द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा-प्रत्ययों के स्थान पर हेमचन्द्र द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा-प्रत्ययों के उदाहरण वाक्य—

(1) **अन्य वैयाकरण** दिव्वइँ गन्धोदयाइँ **देविहिँ** पट्ठवियइँ । प.च. 22.1.2
हिन्दी अनुवाद दिव्य गन्धोदक देवियों के लिए भेजा गया ।
हेमचन्द्र दिव्वइँ गन्धोदयाइँ **देविहु** पट्ठवियइँ ।

(2) **अन्य वैयाकरण** सप्पाइ **एक्क** भवे दुक्खु दिंति । सु.च. 2.10.2
हिन्दी अनुवाद सर्प आदि एक जन्म में दुःख देते हैं ।
हेमचन्द्र सप्पाइ **एक्कहि** भवे दुक्खु दिंति ।

(3) **अन्य वैयाकरण** महिलसहाएँ **रहसें** चड्डिउ । जंबू.च. 9.8.5
हिन्दी अनुवाद पत्नी के सहयोग से एकान्त में चढ़ा गया ।
हेमचन्द्र महिलसहाएँ **रहसे** चड्डिउ ।

(4) **अन्य वैयाकरण** (जणाइं) **विहाणइँ** तित्थे (तित्थु) चलियइँ । जंबू.च. 9.8.6
हिन्दी अनुवाद (लोग) प्रभात में तीर्थस्थान को चले ।
हेमचन्द्र (जणाइं) **विहाणे** तित्थे (तित्थु) चलियइँ ।

(5) **अन्य वैयाकरण** **समग्गा** लग्गा लोयाण (लोयहं) जाणाविउ । जबू.च. 9.8.9
हिन्दी अनुवाद स्वमार्ग में लगे हुए लोगों के लिए बतलाया गया ।
हेमचन्द्र **समग्गे** लग्गा लोयाण (लोयहं) जाणाविउ ।

(6) **अन्य वैयाकरण** (हउं) **णिहाणें** (वड्ढिहे) अवरु उवाउ रयमि । जंबू.च. 9.8.15
हिन्दी अनुवाद (मैं) खजाने में वृद्धि के लिए अन्य उपाय रचता हूँ ।
हेमचन्द्र (हउं) **णिहाणे** (वड्ढिहे) अवरु उवाउ रयमि ।

(7) **अन्य वैयाकरण** विण्णि वि गहिरिमाइँ सायर णं अत्थि । कर.च. 2.16.9

हिन्दी अनुवाद दोनों गम्भीरता में सागर के समान हैं ।

हेमचन्द्र विण्णि वि **गहिरिमि** सायर णं अत्थि ।

(8) **अन्य वैयाकरण** हउं तुव (तुज्झ) सरणि **विएसें** पत्ती । धण्ण.च. 3.16.14

हिन्दी अनुवाद मैं तुम्हारी शरण में विदेश में पड़ी हुई हूँ ।

हेमचन्द्र हउं तुव (तुज्झ) सरणि **विएसे** पत्ती ।

(9) **अन्य वैयाकरण** **पुव्वक्किय** दुक्कमेण (सो) णडिउ । धण्ण.च. 3.19.1

हिन्दी अनुवाद पूर्व में किए हुए दुष्कर्म के द्वारा (वह) नचाया गया ।

हेमचन्द्र **पुव्वक्किएण** दुक्कमेण (सो) णडिउ ।

(10) **अन्य वैयाकरण** मइं **मुणिवरहु** दाणु पदिण्णउ । धण्ण.च. 3.19.4

हिन्दी अनुवाद मेरे द्वारा श्रेष्ठ मुनि के लिए दान दिया गया ।

हेमचन्द्र मइं **मुणिवरहो** दाणु पदिण्णउ ।

(11) **अन्य वैयाकरण** **रोवणह** लग्ग (पयडिय) । धण्ण च. 3.20.2

हिन्दी अनुवाद रोने का चिह्न (प्रकट हुआ) ।

हेमचन्द्र **रोवणहो** लग्ग (पयडिय) ।

(12) **अन्य वैयाकरण** सयलु **खण** भंगुरु (होइ) । धण्ण.च. 3.21.6

हिन्दी अनुवाद प्रत्येक वस्तु क्षण में नाशवान होती है ।

हेमचन्द्र सयलु **खणे** भंगुरु होइ ।

(13) **अन्य वैयाकरण** सो **अवसर-निवडिआइ** दोण्णि वि तिणसम गणइ । हेमचन्द्र के दोहे–7

हिन्दी अनुवाद वह अवसर आ पड़ने पर दोनों (धन और जीवन) को तिनके के समान गिनता है ।

हेमचन्द्र सो **अवसर–निवडिए** दोण्णि वि तिणसम गणइ ।

(14) **अन्य वैयाकरण** सायरगयहिं समिलहिं **जूयहु** रंधु दुल्लहु अत्थि । सावयधम्म–दोहा.2

हिन्दी अनुवाद सागर में लुप्त समिला के लिए जुंवे का रंध्र दुर्लभ है ।

हेमचन्द्र सायरगयाहे समिलाहे **जूयहो** रंधु दुल्लहु अत्थि ।

(15) **अन्य वैयाकरण** भवजलगयहं जीवहं **मणुयत्तणि** सबंधु दुल्लहु अत्थि । सावयधम्म–दोहा.2

हिन्दी अनुवाद संसार-रूपी पानी में पड़े हुए जीवों के लिए मनुष्यत्व से सम्बन्ध दुर्लभ है ।

हेमचन्द्र भवजलगयहं जीवहं **मणुयत्तणें** संबंधु दुल्लहु अत्थि ।

(16) **अन्य वैयाकरण** **पसुधणधण्णइं खेत्तियइं** परिमाण–पवित्ति करि । सावयधम्म-दोहा.4

हिन्दी अनुवाद पशु, धन, धान्य (और) खेत में परिमाण से प्रवृत्ति कर ।

हेमचन्द्र **पसुधणधण्णे खेत्ते** परिमाणपवित्ति करि ।

(17) अन्य वैयाकरण धरणिहिं पडिउ **वडह** बीउ वित्थरु लेइ । सावयधम्म-दोहा.9

हिन्दी अनुवाद धरती पर पड़ा हुआ वट का बीज विस्तार ले लेता है ।

हेमचन्द्र धरणिहिं पडिउ **वडहो** बीउ वित्थरु लेइ ।

(18) अन्य वैयाकरण तेण कप्पयरु **मूलहो** खंडिउ । सावयधम्म-दोहा.15

हिन्दी अनुवाद उसके द्वारा कल्पतरु मूल से काटा गया ।

हेमचन्द्र तेण कप्पयरु **मूलहे** खंडिउ ।

(19) अन्य वैयाकरण **बहुत्तइं संपयइं** कोइ लाह ण अत्थि । सावयधम्म-दोहा.8

हिन्दी अनुवाद बहुत सम्पदा से कोई लाभ नहीं है ।

हेमचन्द्र **बहुत्ताए संपयाए** कोइ लाह ण अत्थि ।

परिशिष्ट

अंक-योजना

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
(जैनविद्या संस्थान)
भट्टारकजी की नसियां,
सवाई रामसिंह रोड,
जयपुर-302004

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर
अपभ्रंश सर्टिफिकेट परीक्षा, ...
प्रथम—प्रश्नपत्र
अपभ्रंश साहित्य

अवास्तविक क्रमांक.....

अंक योजना—

1. प्रश्न के उत्तर में जहां दो या दो से अधिक गलतियों की सम्भावना हो वहाँ उत्तर के मूल्यांकन में एक गलती के लिए $\frac{1}{2}$ अंक कम कर दिया जायेगा। किन्तु जहाँ एक गलती की ही संभावना हो वहाँ उत्तर में गलती होने पर शून्य अंक दिया जायेगा।

2. प्रत्येक गलती लाल स्याही के गोले O से दर्शायी जायेगी।

3. प्राप्तांक के कुल योग में $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$ या $\frac{3}{4}$ आने पर अगला पूर्णाङ्क कर दिया जायेगा। (जैसे $60\frac{1}{2}=61$)।

परीक्षार्थी का क्रमांक—
अंकों में .....
शब्दों में .....

पंजीयन संख्या .....
प्रश्नपत्र—प्रथम
विषय—अपभ्रंश साहित्य
परीक्षा तिथि ....

प्रश्न संख्या	प्राप्तांक
1	.....
2	.....
3	.....
4	.....
5	.....
6	.....
7	.....
8	.....
9	.....
10	.....

कुल योग
अंकों में .....
शब्दों में .....

परीक्षक के हस्ताक्षर.....
दिनांक.....

श्रेणी योजना— पूर्णाङ्क=150

1. विशिष्ट श्रेणी—80% या अधिक (120 अंक)

2. प्रथम श्रेणी—

   सामान्य अंक—60% या अधिक (90 अंक)

   प्रतिष्ठा अंक—80% या अधिक (120 अंक)
   (किसी एक प्रश्नपत्र में)

3. द्वितीय श्रेणी—50% या अधिक (75 अंक)

4. पास श्रेणी—36% या अधिक (54 अंक)

मॉडल प्रश्नपत्र

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

अपभ्रंश सर्टिफिकेट परीक्षा, ...

प्रश्नपत्र—प्रथम

अपभ्रंश साहित्य

समय—3 घण्टे पूर्णाङ्क—150

(1) निम्नलिखित काव्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 40

(i) कोसलणन्दणेण स-कलत्तें णिय-घरु आएं ।
आसाढट्ठमिहिं किउ ण्हवणु जिणिन्दहो राएं ।।

हिन्दी अनुवाद—अपने घर पहुँचे हुए कोशलनगर के राज-पुत्र राजा (राम) के द्वारा पत्निसहित आषाढ की अष्टमी के दिन जिनेन्द्र का अभिषेक किया गया ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(vi) .....

(vii) .....

(viii) .....

(2) निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए — 20

(i) एक्कहिं णयरि एक्कु अमंगलिउ मुद्ध पुरिसु आसि । सो एरिसु अत्थि जो को वि पभाये तहो मुह पासेइ सो भोयणु पि न लहेइ ।

हिन्दी अनुवाद एक नगर में एक अमांगलिक मूर्ख पुरुष था। वह ऐसा था जो कोई भी प्रभात में उसके मुख को देखता वह भोजन भी नहीं पाता था।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(3) निम्नलिखित काव्यांशों का अन्वय कीजिए— 8

(i) पुणु उच्चकहाणी णिसुणि पुत्त संपज्जइ संपइ जें विचित्त।
परिकलिवि संगु णीचहों हिएण उच्चेण समउ किउ संगु तेण।

अन्वय —पुत्त पुणु उच्चकहाणी णिसुणि, जें विचित्त संपइ संपज्जइ। हिएण णीचहो संगु परिकलिवि तेण उच्चेण समउ संगु किउ।

(ii) .....

(4) निम्नलिखित गद्यांश व पद्यांश का अकादमी-पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए— 20

(i) पउरा वि पच्चूसे कयावि तहो मुहु न पिक्खहिं।

व्याकरणिक विश्लेषण पउरा (पउर) 1/2 वि, वि (अ)=भी, पच्चूसे (पच्चूस) 7/1, कयावि (अ)=कभी भी, तहो (त) 6/1 स, मुहु (मुह) 2/1, न (अ)=नहीं, पिक्खहिं (पिक्ख) व 3/2 सक।

(ii) .....

(5) निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त छन्दों के मात्रा लगाकर उनके नाम व लक्षण लिखिए— 12

ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ

(i) चंदण लित्तं पंडुरगत्तं ।

ऽ । । ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ

खंधें तिसुत्तं कयसिरछत्तं ।

नाम मदनविलास छन्द

लक्षण इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में 8 मात्राएं होती हैं व चरण के अन्त में गुरु-गुरु (ऽ ऽ) होते हैं ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(vi) .....

(6) जिन छंदों के निम्नलिखित लक्षण हैं उनके नाम लिखिए— 8

(i) जिस छंद में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं व चरण के अन्त में जगण (।ऽ।) होता है उसका नाम लिखिए ।

नाम पद्धडिया छंद

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(7) निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम, लक्षण व व्याख्या लिखिए— 10

(i) सामिणो पियंकराए, सुंदरो पियंकराए ।

नाम — यमक अलंकार

लक्षण व — पद एक से हों किन्तु उनमें भिन्नार्थ हो, वहां यमक अलंकार होता है ।

व्याख्या — उक्त पद्यांश में 'पियंकराए' पद दो बार भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, एक स्थल पर तो उसका अर्थ प्रियकारी अर्थात् मन, वचन एवं कार्य से प्रिय करनेवाली तथा दूसरा 'पियंकराए' पद रानी का नाम प्रियंकरा बतलाता है ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(8) अपभ्रंश के निम्नलिखित कवियों की रचनाओं के नाम व काल लिखिए तथा उनके विषय बताइए— 10

(i) कनकामर

रचनाओं के नाम व काल—करकण्डचरिउ, ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी का उत्तरार्द्ध ।

विषय — कथा का प्रमुख पात्र करकण्डु है । इसमें श्रुत पंचमी के फल तथा पंचकल्याणक विधि का वर्णन है ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(9) अपभ्रंश के स्वरूप पर प्रश्न 12

(10) अपभ्रंश की निम्नलिखित अप्रकाशित रचनाओं के विषय, काल व रचनाकार के सम्बन्ध में बतलाइए— 10

(i) सयलविहिविहाणकव्व

विषय — इस काव्य में विधि-विधानों की सरल प्रस्तुति की गई है ।

काल — विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी

रचनाकार — कवि नयनन्दि मुनि

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

———

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

अपभ्रंश सर्टिफिकेट परीक्षा, ...

प्रश्नपत्र—द्वितीय

अपभ्रंश-व्याकरण-रचना

समय - 3 घण्टा पूर्णाङ्क—150

(1) निम्नलिखित वाक्यों का अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए। अनुवाद की संरचना भी लिखिए। (संज्ञा-सर्वनाम शब्दों, क्रियाओं तथा कृदन्तों के केवल एक विकल्प का प्रयोग कीजिए)। अनुवाद-15 अंक, संरचना-15 अंक } 30 अंक

(पन्द्रह वाक्य)

(i) वाक्य —आज वह भोजन जीमता हुआ प्रसन्न होता है।
अनुवाद—अज्जु सो भोयणु जेमन्तु हरिसइ।
संरचना—(अ), 1/1, 2/1, वक्र 1/1, व 3/1 अक।

(2) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए— 4

(i) नरिंदहिं हसिज्जन्ति।
शुद्ध वाक्य—नरिंदहिं हसिज्जइ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(3) निम्नलिखित वाक्यों का अकादमी-पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए— 20

(i) एक्कहिं णयरि एक्कु अमंगलिउ मुद्धु पुरिसु आसि।
एक्कहिं (एक्क) 7/1 वि, **णयरि** (णयर) 7/1,

एक्कु (एक्क) 1/1 वि, अमंगलिउ (अमंगलिअ) 1/1 वि,
मुद्धु (मुद्ध) 1/1 वि, पुरिसु (पुरिस) 1/1,
आसि (अस) भू 3/1 अक ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(4) निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए— 4

(i) कमलें विअसिअव्व ।
भाववाच्य

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(5) निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए— 4

(i) हउं लुक्कउं । (भाववाच्य)
मइं लुक्किज्जइ ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(6) निम्नलिखित वाक्यों का दो प्रकार से अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए— 6

(i) वह नाचा ।
(क) सो णच्चिअ्रो ।
(ख) तेण णच्चिअ/णच्चिआ/णच्चिउ ।

(ii) .....

(iii) .....

(7) अनियमित भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए— 5

(i) मामा के द्वारा तुम्हारी प्रशंसा की गई ।

अनुवाद—माउलें तउ पसंसा किअा ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(8) अनियमित कर्मवाच्यों के क्रिया-रूपों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए— 5

(i) उसके द्वारा गीत सुना जाता है ।

अनुवाद—तेण गाण सुव्वइ ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(9) निर्देशानुसार निम्नलिखित शब्दों के रूप सभी विकल्पों में लिखिए— 10

(i) देव (षष्ठी एकवचन)

रूप—देव, देवा, देवहो, देवाहो, देवसु, देवासु, देवस्सु

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(10) निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के रूप सभी विकल्पोंसहित लिखिए— 10

(i) हस (वर्तमानकाल, उत्तमपुरुष एकवचन)
क्रिया-रूप --हसउं, हसमि, हसामि, हसेमि ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(11) निम्नलिखित कृदन्तों का प्रयोग करते हुए अपभ्रंश के वाक्य बनाइए और उनका हिन्दी अनुवाद भी कीजिए । ये सभी कृदन्त विभक्तिचिह्न-रहित हैं— 5

(i) हसिअ
अपभ्रंश वाक्य—सो हसिओ ।
हिन्दी अनुवाद—वह हँसा ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(v) .....

(12) निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के कृदन्त के रूप में किसी एक विकल्प का प्रयोग करते हुए अपभ्रंश के वाक्य बनाइए— 5

(i) लुक्क (वर्तमान कृदन्त)
सो लुक्कन्तो बइसइ ।

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(13) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए— 7

(i) कमल
नपुसकलिंग

(ii) .....

(iii)

(iv)

(v)

(vi)

(vii)

(14) निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए— 5

(i) सो हसेप्पिणु **उट्ठइ** ।

(ii)

(iii)

(iv)

(v)

(15) प्रेरणार्थक प्रत्ययों के किसी एक विकल्प का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए— 4

(i) वह मुझको हँसाता है ।

अनुवाद—सो मइं हसावइ ।

(ii)

(iii)

(iv)

(16) निम्नलिखित शब्द स्वार्थिक प्रत्ययसहित हैं । इनमें प्रयुक्त स्वार्थिक प्रत्यय लिखिए । 4

(i) जीवड

स्वार्थिक प्रत्यय—अड

(ii)

(iii)

(iv)

(17) निम्नलिखित क्रियाओं में सकर्मक-अकर्मक बताइए— 4

(i) जेम

सकर्मक

(ii)

(iii)

(iv)

(18) अपभ्रंश के निम्नलिखित वाक्यों में अन्य वैयाकरणों द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा-प्रत्ययों के स्थान पर हेमचन्द्र द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा-प्रत्ययों को लिखिए— 4

(i) देविहिँ गन्धोदयाइँ पट्ठवियइँ।

देविहु गन्धोदयाइँ पट्ठवियइँ।

(ii)

(iii)

(iv)

(19) निम्नलिखित वाक्यों में से कृदन्त छांटिए और उनके नाम लिखिए। जहां आवश्यक हो वहां विभक्ति बताइए— 4

(i) ससाउ णच्चन्ता थक्कन्तु।

णच्चन्ता—वर्तमान कृदन्त 1/2।

(ii)

(iii)

(iv)

(20) निम्नलिखित क्रियाओं के काल, वचन और पुरुष लिखिए— 10

(i) विश्रसइ

वर्तमानकाल, एकवचन, अन्य पुरुष

(ii)

(iii)

(iv)

(v)

(vi)

(vii)

(viii)

(ix)

(x)

शुद्धिपत्र

क्र.सं.	पृ.सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
1.	7	39	जग्गन्त	जग्गन्तु
2.	8	ग, 9	तुम्हइ	तुम्हइं
3.	8	ग, 29	तुम्हइ	तुम्हइं
4.	24	ख-44	अच्छिहउं	अच्छिहिउ
5.	29	ग-3.1	हउ	हउं
6.	32	ख-5	जग्गणह	जग्गणहं
7.	57	ख-14	खेत	खेत्त
8.	58	ख-उदाहरण	विमाणइ	विमाणइं
9.	58	ग-2, पंक्ति-2	एकवचन	बहुवचन
10.	63	ख, 39	सभा	संभा
11.	72	ख, 9	कुट्ट	कुद्द
12.	82	ग-2, 1	थम	थंभ
13.	92	क-2, 8	णहं	णह
14.	98	ख-22	तइ	तइं
15	98	ग, 2	णचन्त	णच्चन्त
16.	98	ग, 17	सुक्कन्तइ	सुक्कन्तइं
17.	99	ग, 24	कदेवि	कंदेवि
18.	108	ग, उदाहरण (1)	माउलण	माउलेण
19.	113	घ, 14	ताइ	ताइं
20.	116	क-2, उदाहरण बहुवचन तृतीया	दहीहीं	दहिहिं
21.	120	ख, 16	गव	गर्व

क्र.सं.	पृ.सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
22.	124	क–4	क–4	क–2
23.	134	ख, 20	डुबाया	कुदाया
24.	145	2क(1)	घर आ गया	घर गया
25.	190	2.16.1	ज	जें
26.	193	छन्द संख्या–14	जभेटिया ।	जंभेटिया ॥
27.	195	पादाकुलक छंद–उदाहरण	पहु	पहु
28.	201	16. उदाहरण	छद	छंद
29.	205	(क)–(3)	कुडंबिएहि	कुडुंबिएहिं
30.	205	(क)–(4)	भणिय	भणियं
31.	207	(10)	कल्लोलवोलं	कल्लोलवोल
32.	208	(5)	सखोहणिया	संखोहणिया
33.	208	(9)	सग्गमि	सग्गम्मि
34.	211	(घ) (1)	कयमणा	कम्मणा
35.	215	यमक अलंकार, उदाहरण	पियकराए	पियंकराए
36.	226	1	महियल	महियलं
37.	227	(4.)	गधोदकधारा छंद	गधोदकधारा छंद
38.	229	2	घुरुहुरंतसभडिय	घुरुहुरंतसंभडिय
39	230	1	ज	जं
40.	230	11–1	धरहि	घरहिं
41.	230	11–1	गइज्जइ	गाइज्जइ
42.	230			
43.	231	13–4	धम्ममि	धम्मम्मि

क्र.सं.	पृ.सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
44.	232	15	S I S दण्डयाइ	S I S I दण्डयाइ
45.	232	रासाकुलक छंद	24 मात्राएं लघु (I) व गुरु (S)	21 मात्राए नगण (III)
46.	236	2	कुञ्जर व	कुञ्जर व्व
47.	239	28, 2	भरतरुदकुंडकूव	भरंतरुकुंडकूव
48.	240	29–1	सिद्धिकंतस्तओ	सिद्धिकंतरत्तओ
49.	240	29–	पंचचामर छंद के उदाहरण की प्रारम्भिक दो पंक्तियाँ निम्न प्रकार हैं—	

जगण रगण जगण रगण जगण गुरु
I S I S I S I S I S I S I S
थुणेइ देउ मोक्खहेउ चित्ति जाम हिट्ठओ ।
123 45 6 789 1011 1213 141516

जगण रगण जगण रगण जगण गुरु
I S I S I S I S I S I S I S
सुरिंदवंद ते मुणिंद ता णिसुण्ण दिट्ठओ ।
12345 6 789 10 111213 141516

———